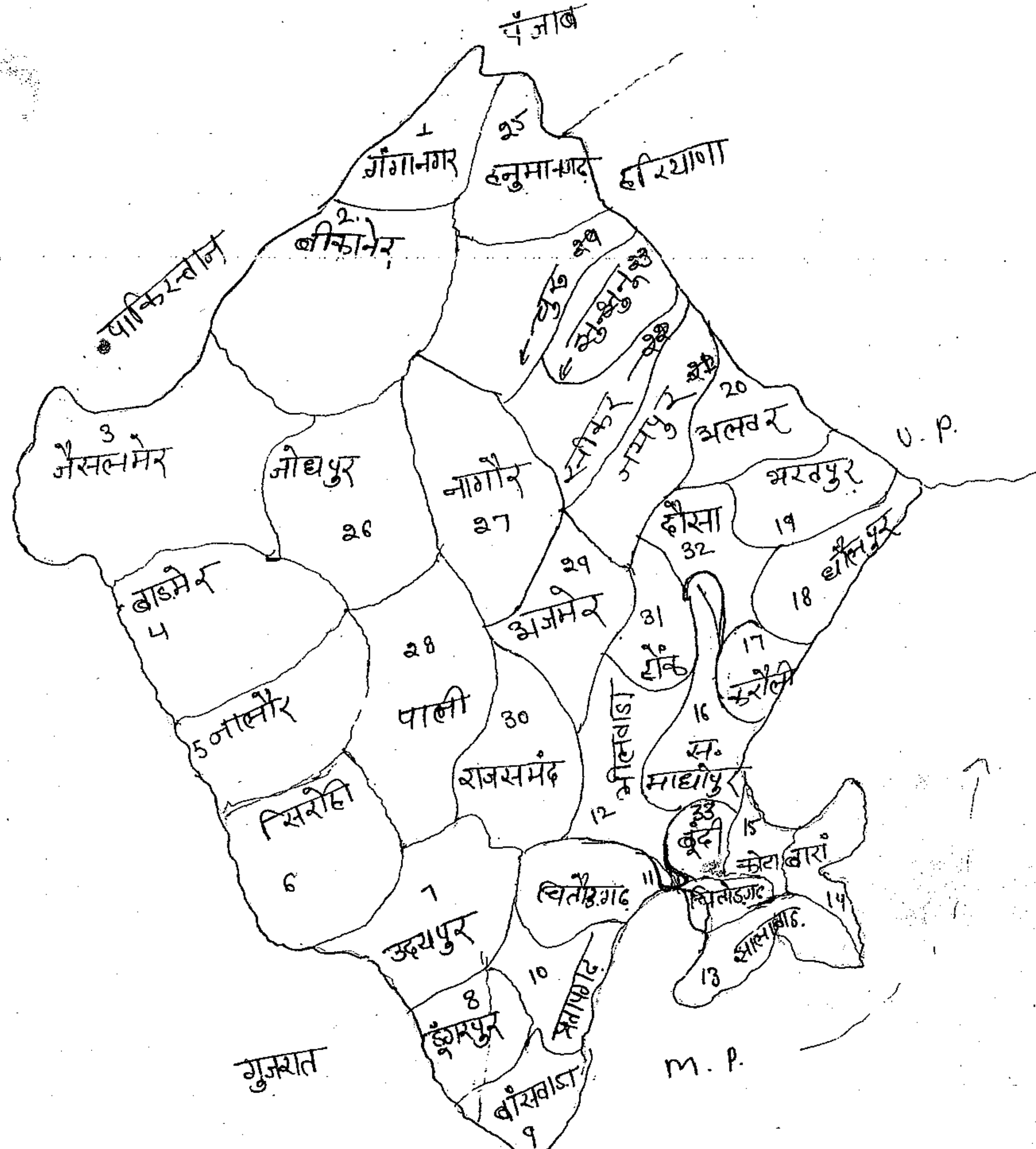
पँजाब
हरियाणा
पाकिस्तान
U.P.
M.P.
गुजरात
1 गंगानगर
25 हनुमानगढ़
2 बीकानेर
3 जैसलमेर
26 जोधपुर
27 नागौर
चुरु
झुन्झुनू
सीकर
जयपुर
20 अलवर
भरतपुर
19
दौसा
32
धौलपुर
18
बाड़मेर 4
21 अजमेर
31 टोंक
17 करौली
28 पाली
5 जालौर
30 राजसमंद
भीलवाड़ा
12
16 स. माधोपुर
सिरोही 6
33 बूंदी
15 कोटा
बारां
14
7 उदयपुर
चित्तौड़गढ़
11
झालावाड़
13
10 प्रतापगढ़
8 डूंगरपुर
बाँसवाड़ा 9

* राजस्थान का भूगोल *

→ **राजस्थान का नामकरण** →

राजस्थान के लिए सर्वप्रथम 'जॉर्ज थॉमस' के द्वारा 1800 ई. में 'राजपुताना' शब्द का प्रयोग किया गया।

- जिसका उल्लेख हमें विलियम फ्रेंकलिन की पुस्तक 'मिलिट्री मैम्बायर्स ऑफ मिस्टर जॉर्ज थॉमस (1805)' में मिलता है।

Imp. ⇒ राजस्थान के लिए सर्वप्रथम 'राजस्थान' शब्द का प्रयोग 'कर्नल जेम्स टॉड' के द्वारा 1829 A.D. में अपनी पुस्तक 'द एनल्स एण्ड एन्टीक्यूटीज ऑफ राजस्थान' में मिलता है।

हमारे राज्य के लिए सर्वप्रथम राजस्थान शब्द का प्रयोग 25 March 1948 (राजस्थान संघ) को किया गया।

'30 March 1949' को लगभग राजस्थान का एकीकरण पूर्ण हो गया। इस दिन राजस्थान की चार बड़ी रियासतें → जयपुर, जोधपुर, जैसलमेर व बीकानेर को वृहत राजस्थान में मिलाया।

- इसी कारण 30 March को राजस्थान स्थापना

दिवस के रूप में मनाया जाता है।

'26 January 1950' को हमारे संविधान में हमारे राज्य के लिए 'राजस्थान' नाम दिया गया।

'1 November 1956' को राजस्थान का एकीकरण पूरा हुआ और इस दिन राजप्रमुख के पद को समाप्त किया गया एवं 'राज्यपाल' का पद गठित किया गया।

Imp: राजस्थान का प्रथम राज्यपाल →

सरदार गुरुमुख निहाल सिंह

⇓

Imp → महाराजा सवाई मानसिंह II ने शपथ दिलवाई

* **राजस्थान की आकृति** →

विषमकोणीय चतुर्भुजाकार (पतंगाकार)

(पतंग के समान)

राजस्थान भारत के उ.प. दिशा में स्थित है, जिसका कुल क्षे. 3,42,239 वर्ग किलोमीटर है, जो कि भारत के कुल क्षेत्रफल का 10.41% (1/10 भाग) है।

Imp ← राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है, जो कि 1 नवम्बर 2000 को M.P. से छत्तीसगढ़ के अलग होने

* तेलंगाना → 2 June 2014 को बना
* 9 नवम्बर → उत्तराखण्ड – U.P. से अलग
* 15 नवम्बर → झारखण्ड → बिहार से अलग
* 1 नवम्बर → छत्तीसगढ़ → M.P. से अलग

* राजस्थान की स्थिति →

30°12' उत्तरी अक्षांश
⇓
कोणा गाँव
⇓
गंगानगर तहसील
⇓
गंगानगर

826 K.m.

7°9' अक्षांश के बीच

69°30' पूर्वी देशान्तर
⇓
कटरा गाँव
⇓
सम तहसील
⇓
जैसलमेर

869 K.m.
⇓
8°47' देशान्तर के बीच

78°17' पूर्वी देशान्तर
⇓
सिलाना गाँव
⇓
राजाखेड़ा तहसील
⇓
धौलपुर

23°3' उत्तरी अक्षांश
⇓
बोरकुण्ड गाँव
⇓
कुशलगढ़ तहसील
⇓
बांसवाड़ा

Notes

→ 30°12' - 23°3' = 7°9' अक्षांश

1 डिग्री = 60 मिनट

→ 78°17' - 69°30' = 8°47' देशान्तर

⇓

77°77'
69°30'
8°47'

8 × 4 = 32 मिनट
47 × 4 = 188 सै.

राज० में देशान्तर के हिसाब से समय → = 32 + 3.8 = 35.8 मिनट का समय

* **राजस्थान का विस्तार** →

→ कुल स्थलीय सीमा = 5920 K.M.

- 1070 K.M ⇓ अन्तर्राष्ट्रीय सीमा ⇓ Imp. 'रैड क्लिफ रेखा' ⇓
  - गंगानगर
  - बीकानेर
  - जैसलमेर
  - बाड़मेर
- 4850 K.M. ⇓ अन्तर्राज्यीय सीमा

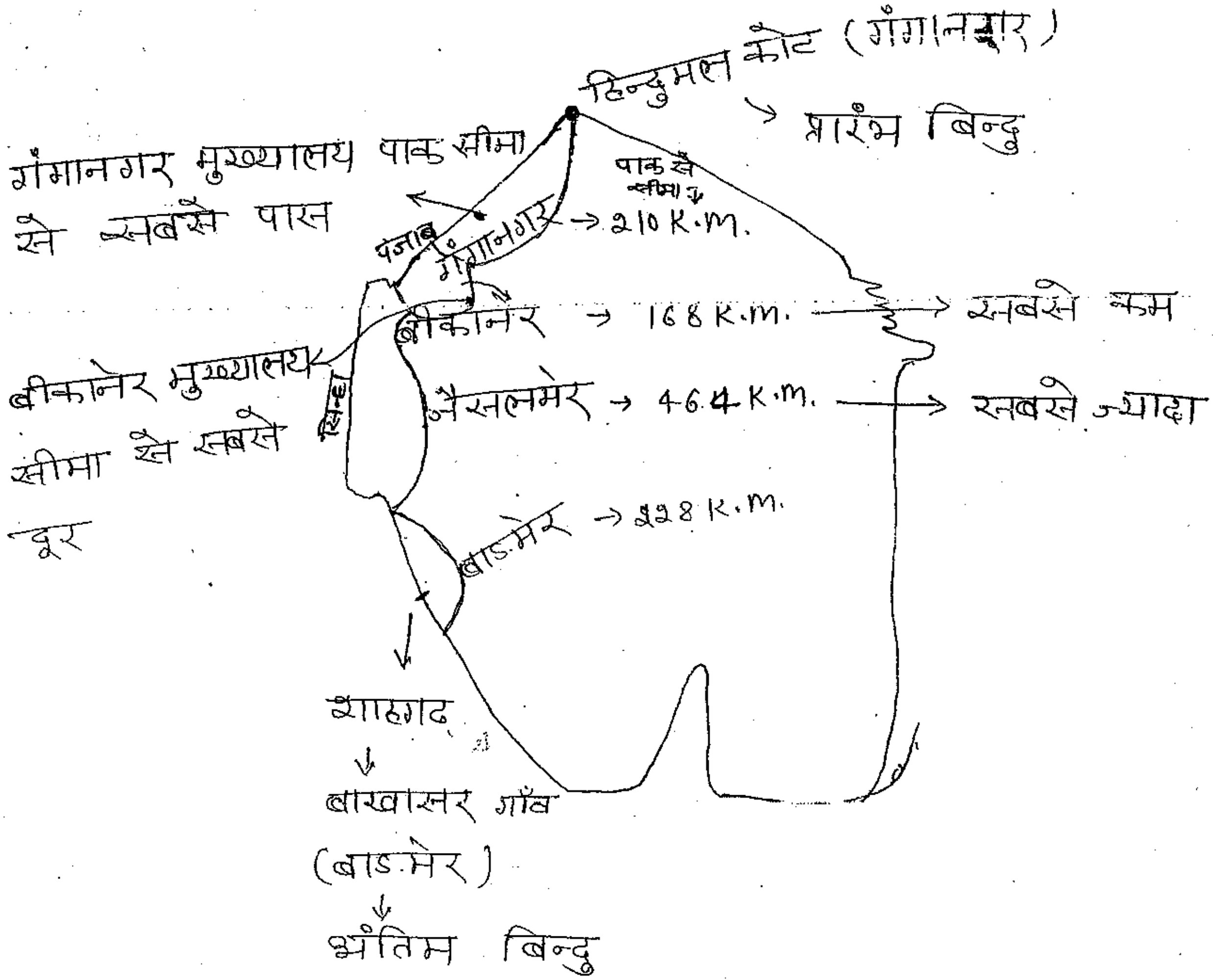

पाकिस्तान →

<u>सिन्ध राज्य</u> ⇒

<u>मीरपुर</u> → राज. के साथ सबसे कम सीमा

<u>खैरपुर</u> → सबसे दूर मुख्यालय

<u>पँजाब राज्य</u> ⇒

<u>बहावलपुर</u>

↓

- राजस्थान सीमा के सबसे नजदीक मुख्यालय
- बहावलपुर की राजस्थान के साथ सबसे ज्यादा सीमा

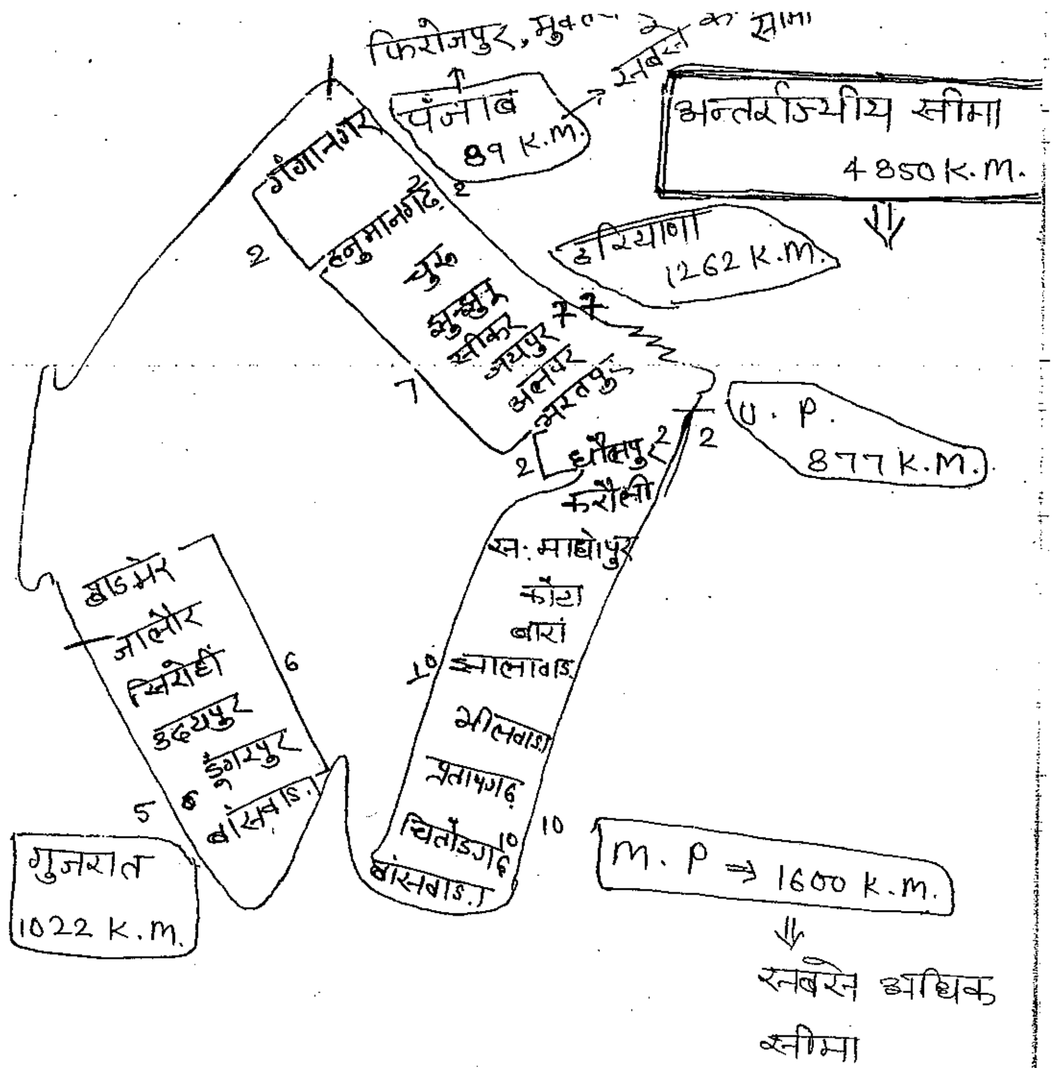

* हरियाणा के, सीमा पर जिले ⇒

1. रेवाड़ी
2. गुड़गाँव
3. महेन्द्रगढ़
4. भिवानी
5. हिसार
6. सिरसा
7. फतेहाबाद

* U.P. के सीमा पर स्थित जिले ⇒

आगरा, मथुरा

* M.P. के, सीमा पर स्थित जिले ⇒

1. झाबुआ
2. रतलाम
3. मन्दसौर
4. श्योपुर
5. नीमच
6. राजगढ़
7. गुना
8. शिवपुर
9. आँजापुरा
10. मुरैना

* गुजरात के जिले ⇒

1. कच्छ
2. बनासकाँठा
3. साबरकाँठा
4. दाहोद
5. पँचमहल

* पँजाब के जिले ⇒

1. फिरोजपुर
2. मुक्तसर

1. पंजाब से सर्वाधिक सीमा ⇒ हनुमानगढ़
न्यूनतम सीमा ⇒ गंगानगर

2. हरियाणा → सर्वाधिक सीमा → हनुमानगढ़
न्यूनतम " → जयपुर

3. U.P. → सर्वाधिक सीमा → भरतपुर
न्यूनतम " → धौलपुर

4. M.P. → सर्वाधिक सीमा ⇒ झालावाड़
न्यूनतम " ⇒ भीलवाड़ा

5. गुजरात → सर्वाधिक सीमा ⇒ उदयपुर
न्यूनतम " ⇒ बाड़मेर

Note

Imp. 1 पूरी अन्तर्राज्यीय सीमा में सर्वाधिक सीमा "झालावाड़" की एवं सबसे कम बाड़मेर की लगती है।

2. हनुमानगढ़ ⇒ पंजाब, हरियाणा

भरतपुर ⇒ हरियाणा व U.P.

धौलपुर → U.P. व M.P.

बांसवाड़ा → M.P. व गुजरात

Imp (ii) राजस्थान के दो जिले ऐसे हैं, जो अन्तर्राष्ट्रीय सीमा एवं अन्तर्राज्यीय सीमा से लगते हैं →

- (A) गंगानगर
- (B) बाड़मेर

राजस्थान के अन्तर्वर्ती जिले ⇒ 8

1. जोधपुर
2. नागौर
3. अजमेर
4. टोंक
5. बूँदी
6. पाली
7. राजसमन्द
8. दौसा

→ वर्तमान राजस्थान में कुल 33 जिले हैं →

23 + 4 + 8 − 2 = 33

(23 – राज्यों से; 4 – पार्ट से; 2 – राज्य व पार्ट दोनों से)

'1 Nov. 1956' → अजमेर → 26 वाँ जिला (जयपुर से अलग)

15 April 1982 → धौलपुर → 27 वाँ जिला (भरतपुर से)

10 April 1991 → (B) बारां → 28 वाँ " (कोटा से)

(D) दौसा → 29 वाँ " (जयपुर से)

(R) राजसमन्द → 30 वाँ " (उदयपुर से)

* 12 July 1994 → हनुमानगढ़ → 31 वाँ जिला → [गंगानगर से अलग]

* 19 July 1997 → करौली → 32 वाँ जिला (सवाईमाधोपुर + भरतपुर से अलग)

Imp* 26 January 2008 → प्रतापगढ़ → 33 वाँ जिला → [उदयपुर
बाँसवाड़ा
चित्तौड़ से]

संभाग व्यवस्था

राजस्थान में सर्वप्रथम संभागीय व्यवस्था को '1949 A.D.' में प्रारंभ किया गया।

- उस समय राजस्थान में केवल '5 संभाग' थे।

1. Nov. 1956 A.D. को एकीकरण पूरा होने पर 6वाँ संभाग 'अजमेर' को बनाया गया।

Imp 1962 A.D. में 'मोहनलाल सुखाड़िया' द्वारा संभागीय व्यवस्था को समाप्त कर दिया गया, तथा '1987 A.D.' में पुनः 'हरिदेव जोशी' सरकार के द्वारा संभागीय व्यवस्था को प्रारंभ किया गया।

→ 4 June 2005 को भरतपुर को नया संभाग बनाया; जिसमें 'भरतपुर, धौलपुर', 'जयपुर संभाग' से एवं करौली, सवाई माधोपुर, 'कोटा संभाग' से लिये गये।

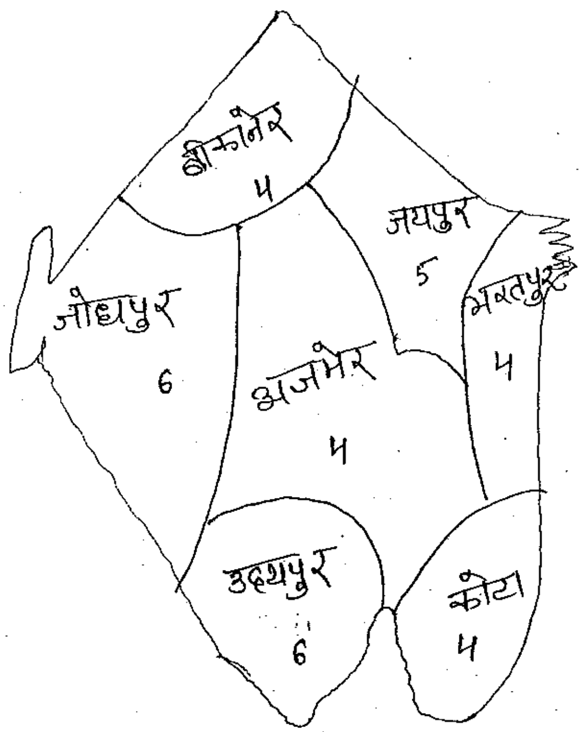

* बीकानेर सम्भाग ⇒ बीकानेर, गंगानगर, हनुमानगढ़, चुरु

* जोधपुर ⇒ जोधपुर, जैसलमेर, बाड़मेर, सिरोही, पाली, जालौर

* अजमेर ⇒ अजमेर, नागौर, टोंक, भीलवाड़ा

* **उदयपुर** ⇒

उदयपुर, बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़, डूँगरपुर, राजसमन्द

* **कोटा** ⇒

कोटा, बूँदी, झालावाड़, बाराँ

* **जयपुर** ⇒

जयपुर, अलवर, सीकर, झुन्झुनू, दौसा

* **भरतपुर** ⇒

भरतपुर, करौली, धौलपुर, सवाईमाधोपुर

* क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा संभाग ⇒ जोधपुर
  छोटा संभाग ⇒ भरतपुर

* जनसंख्या की दृष्टि से बड़ा संभाग ⇒ जयपुर
  छोटा संभाग ⇒ कोटा

* साक्षरता की दृष्टि से बड़ा संभाग ⇒ जयपुर
  छोटा संभाग ⇒ जोधपुर

* लिंगानुपात की दृष्टि से बड़ा संभाग → उदयपुर
  छोटा संभाग ⇒ भरतपुर

* <u>जनसंख्या घनत्व</u> की दृष्टि से
  सबसे बड़ा संभाग → <u>जयपुर</u>
  सबसे छोटा संभाग → <u>जोधपुर</u>

* वृद्धिदर सबसे ज्यादा → <u>जोधपुर</u>

* सर्वाधिक क्रियाशील जनसंख्या वाला संभाग ⇒ <u>उदयपुर</u>

राजस्थान के भौगोलिक उपनाम

1. **छप्पन का मैदान**:

प्रतापगढ़ व बांसवाड़ा में माही नदी के किनारे 56 गाँव व नदी नालों का समूह छप्पन का मैदान कहलाता है।

2. **कांठल**:

प्रतापगढ़ में माही नदी के किनारे का क्षेत्र।

3. **ऊपरमाल**:

बिजौलिया (भीलवाड़ा) से भैंसरोड़गढ़ (चित्तौड़गढ़) के मध्य का भू-भाग ऊपर उठा हुआ होने के कारण ऊपरमाल कहलाता है।

4. **देशहरो**:

उदयपुर में जरगा एवं रागा पहाड़ियों के बीच का भू-भाग सदा हरा-भरा रहने के कारण देशहरो कहलाता है।

5. **गिरवा**:

उदयपुर के चारों तरफ तश्तरीनुमा बेसिन होने के कारण इसको स्थानीय भाषा में गिरवा कहा जाता है।

6. **मेवल**:

डूंगरपुर व बांसवाड़ा के चारों तरफ छोटी-2 पहाड़ियों को मेवल कहा जाता है।

7. **तोरावाटी** :

शेखावाटी क्षेत्र में कांतली नदी के प्रवाह क्षेत्र को तोरावाटी कहते हैं।

8. **भोमट** :

सिरोही, उदयपुर व डूँगरपुर का पर्वतीय व पठारी ढलान भोमट कहलाता है।

9. **भाखर** :

सिरोही के पूर्वी भाग का तीखा ढलान

10. **शिवी - किवी** :

मेवाड़ में उदयपुर के भू-भाग को शिवी - किवी कहा जाता है।

- इस भाग में शिवी जाति द्वारा 'मध्यमिका' को अपनी राजधानी बनाया गया, जिसे वर्तमान में 'नगरी' कहा जाता है, जो कि चित्तौड़ में है।

11. **मारवाड़** :

वर्तमान में जोधपुर, बीकानेर, बाड़मेर, पाली व नागौर के कुछ क्षेत्र।

12. **मेवाड़** ⇒ उदयपुर + राजसमन्द + भीलवाड़ा + प्रतापगढ़ + चित्तौड़गढ़

13. **हाड़ौती** :- कोटा + बूँदी + बारां + झालावाड़

14. **मेवात प्रदेश** ⇒ अलवर + भरतपुर

15. **जांगल देश** ⇒ बीकानेर + जोधपुर

11/07/17

* मेदपाट ⇒

  उदयपुर

* कुरुप्रदेश ⇒

  अलवर

* ढूँढाड ⇒

  जयपुर में ढूंढ नदी के आस - पास का क्षेत्र ढूँढाड कहलाता है।

* शूरसेन ⇒

  भरतपुर व धौलपुर

* गोपालपाल ⇒

  करौली

* नाली क्षेत्र ⇒

  गँगानगर, हनुमानगढ़

* शेखावाटी ⇒

  सीकर, चुरु, झुन्झुनू

* अहीरवाटी ⇒

  अलवर

* माण्ड प्रदेश ⇒

  जैसलमेर, बीकानेर

* थली ⇒ [illegible]

Physiography Region of Rajasthan

राजस्थान के भौगोलिक प्रदेश

⇓

राजस्थान के भौतिक प्रदेशों को सर्व-प्रथम प्रो. वी.सी. मिश्रा के द्वारा अपनी पुस्तक 'राजस्थान का भूगोल' में 1967-68 को विभाजित किया।

इन्होंने राजस्थान को 7 भागों में बाँटा ⇒

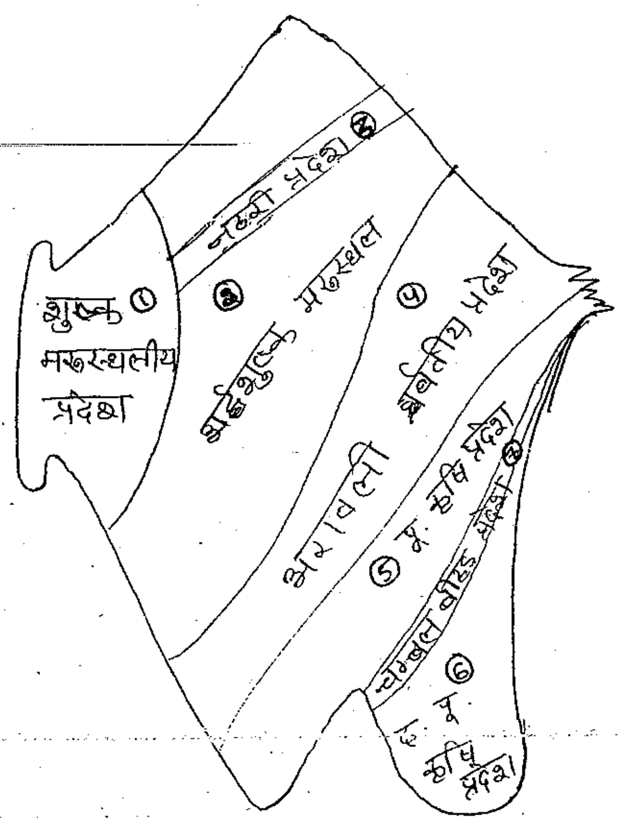

राजस्थान की भौगोलिक संरचना के आधार पर इसे मुख्य रूप से 4 भागों में बाँटा गया है ⇒

1. पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश
2. अरावली पर्वतीय प्रदेश
3. पू० मैदानी प्रदेश
4. द० पू० पठारी प्रदेश

(1 और 3 → टेथिस सागर; 2 और 4 → गोंडवाना लैंड)

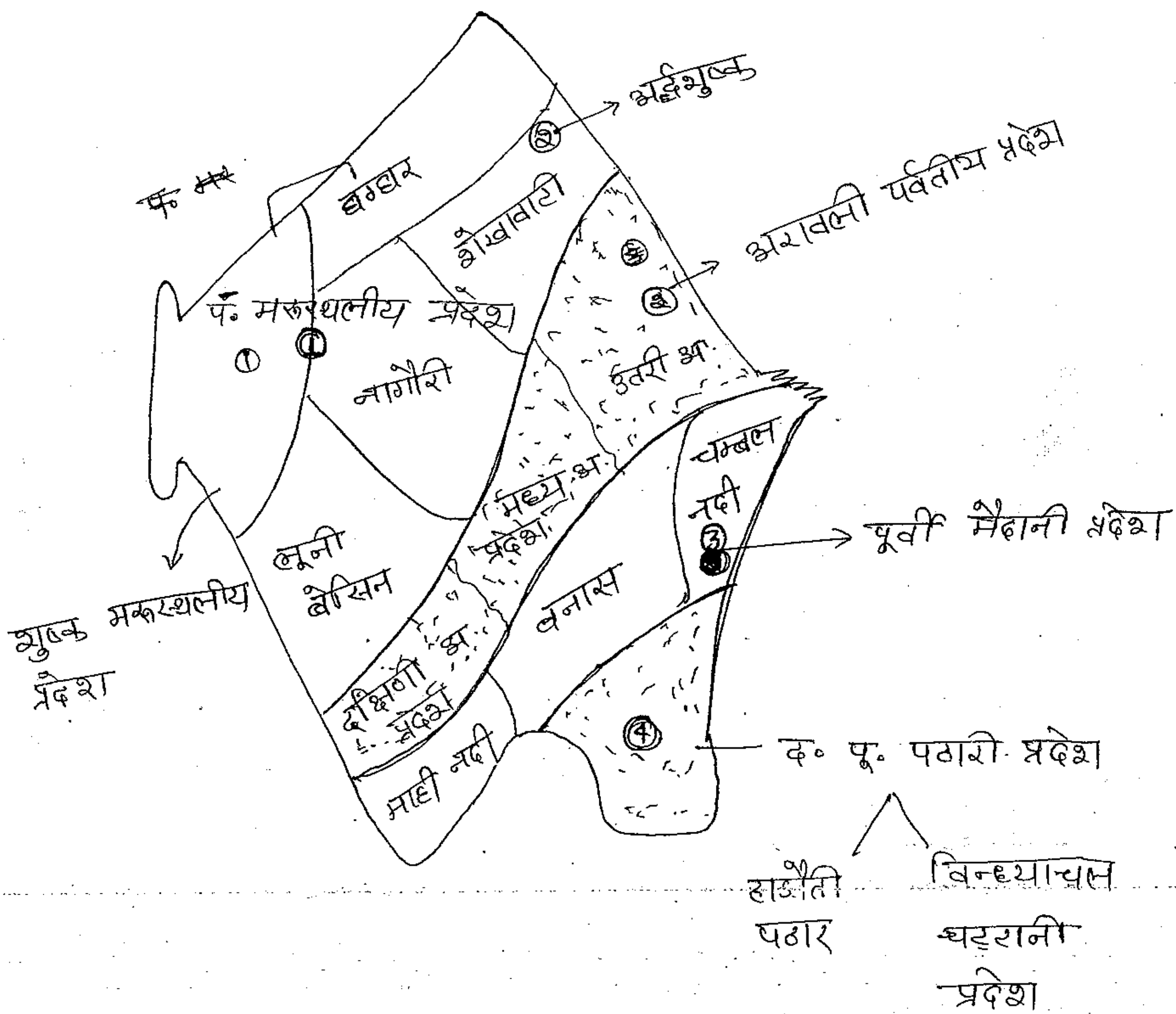

1. **पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश** ⇒

यह राजस्थान के उत्तर एवं उत्तर-पश्चिम दिशा में स्थित है। जो कि राज्य के कुल 61.11% (61%) भूभाग पर स्थित है।

– इस पर राजस्थान की कुल जनसंख्या का 40% भाग निवास करता है, इसी कारण यह राजस्थान का जनसंख्या व क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा भू-भाग है।

→ राजनैतिक दृष्टि से यह राजस्थान के 12 जिलों में विस्तृत है ⇒

1. सीकर
2. चुरु
3. झुन्झुनू
4. गंगानगर
5. हनुमानगढ़
6. बीकानेर
7. जैसलमेर
8. बाड़मेर
9. जालौर
10. जोधपुर
11. नागौर
12. पाली

(13 सिरोही)

→ प॰ मरुस्थलीय प्रदेश का निर्माण टेथिस सागर में नदियों के द्वारा तलछट के जमाव से हुआ है।

इसी कारण यहाँ पर धात्विक खनिजों का अभाव एवं प्राकृतिक तेल व गैस की प्रधानता पाई जाती है।

- इस प्रदेश की औसत वर्षा 25 से 50 c.m., वनस्पति मरूद्भिद एवं ऊष्ण कटिबंधीय कांटेदार वन, मिट्टी रेतीली एवं भूरी रेतीली, समुद्र तल से ऊँचाई 150 मीटर, घग्घर, लूनी, काकनेय, काँतली आदि नदियाँ एवं राष्ट्रीय मरू उद्यान अभयारण्य स्थित है।

* **थार का मरूस्थल**:

यह मरूस्थल अफ्रीका के सहारा मरूस्थल का पूर्वी भाग माना जाता है, जो कि विश्व में सबसे अधिक जनसंख्या घनत्व एवं जैव विविधता वाला मरूस्थल है।

- इसी कारण डॉ. ईश्वरीप्रसाद ने इसे 'रूक्षक्षेत्र' कहा है।
- यह पाकिस्तान, एवं भारत के राजस्थान, गुजरात, पँजाब व हरियाणा में फैला हुआ है।
- इस थार के मरूस्थल का कुल क्षेत्रफल 233000 वर्ग km है, जिसमें से राजस्थान में 1,75000 वर्ग कि.मी. में फैला हुआ है।
- ह्वेनसांग ने इस प्रदेश को 'गुर्जरात्रा' प्रदेश कहा है।

Temprature → गर्मी → 49°C Average → 22°C
सर्दी → 3°C

वर्षा के आधार पर इस प्रदेश को दो भागों में बाँटा गया है ⇒

(i) शुष्क मरुस्थलीय प्रदेश

(ii) अर्द्ध शुष्क मरुस्थलीय प्रदेश

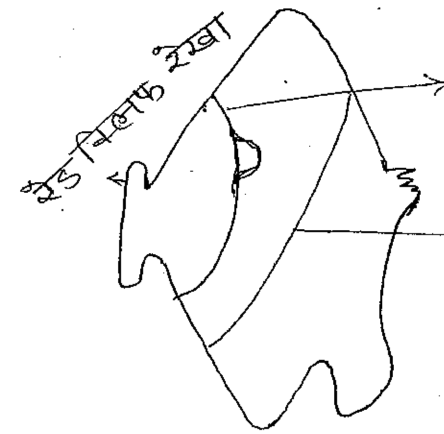

(i) **शुष्क मरुस्थलीय प्रदेश** ⇒ यह मुख्य रूप से जैसलमेर एवं प. जोधपुर, उ. प. बाड़मेर, दक्षिणी बीकानेर एवं शेखावाटी के कुछ क्षेत्र में फैला हुआ है।

- इस क्षेत्र की प. सीमा रेड क्लिफ रेखा एवं पूर्वी सीमा 25 C.M. वर्षा रेखा बनाती है।

- इस क्षेत्र में अधिकांशतः रेत के टीले पाये जाते है, जिन्हे 'धोरे' कहा जाता है, एवं स्थानीय भाषा में इन्ही को 'धरियन' कहते है।

- ये रेत के टीले तीन प्रकार के होते है ⇒

(A). अनुप्रस्थ बालूका स्तूप ⇒ ये रेत के टीले पवनों की दिशा के समकोण पर बनते हैं, जो कि मुख्य रूप से जैसलमेर एवं उत्तरी मरूस्थल में पाये जाते हैं। 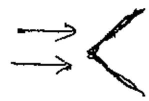

(B.) अनुदैर्ध्य बालूका स्तूप / पवनानुवर्ती बालूका स्तूप ⇒ ये बालूका स्तूप पवनों की दिशा के समानान्तर बनते हैं, जो मुख्य रूप से शुष्क मरूस्थलीय प्रदेश में पाये जाते हैं।

(C.) बरखान बालूका स्तूप : इनकी आकृति अर्द्धचन्द्राकार होती है।

- ये सबसे अधिक गतिशील एवं सबसे अधिक विनाशकारी होते हैं, जो मुख्य रूप से शेखावाटी क्षेत्र में पाये जाते हैं।

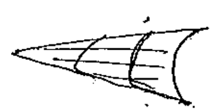

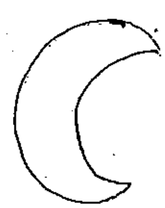

Note

राजस्थान के कुल मरूस्थलीय भाग में लगभग 60% भाग पर बालूका स्तूप पाये जाते हैं, एवं सभी प्रकार के (तीनों प्रकार के) बालूका स्तूप जोधपुर जिले मे पाये जाते हैं।

चूना पत्थर का सर्वाधिक उत्पादन ...
सीमेंट ↓ उत्पादन

* गासी / कारबा मार्ग => दो पवनानुवर्ती बालुका स्तूपों के बीच निम्न भूमि को गासी / कारबा मार्ग कहा जाता है।

गासी / कारबा मार्ग

very Imp. * चट्टानी मरुस्थल / हम्मादा => जैसलमेर के चारों तरफ 65 km परिधि का क्षेत्र चट्टानी मरुस्थल कहलाता है।

– इसकी प्रमुख विशेषताएँ =>

(i) इस क्षेत्र में राजस्थान का सबसे उत्तम किस्म का 'स्टील ग्रेड चूना पत्थर' जैसलमेर के 'सानु' क्षेत्र में पाया जाता है।

(ii) इस क्षेत्र में पीले रंग के पत्थर की प्रधानता पाई जाती है।

Imp.– इसी कारण जैसलमेर के दुर्ग व हवेलियाँ पीले रंग के पत्थर से बने हुए हैं।

जैसे → सोनारगढ़ दुर्ग

– नथमल की हवेली

IInd सबसे बड़ा आवासीय दुर्ग

Ist → चित्तौड़ का दुर्ग

15/0

Imp. (iii) इस पठारी प्रदेश के पश्चिमी भाग में पोकरण से लेकर मोहनगढ़ तक 60 K.m. लम्बी जल पट्टी है, जिसे 'लाठी सीरिज' कहा जाता है।

Imp. इस लाठी सीरिज पर सेवण घास का उत्पादन होता है।

(iv) इसके दक्षिणी भाग में 'आकल' गाँव स्थित है। जहाँ पर 'आँकल काष्ठ जीवाश्म पार्क (आँकल वुड फासिल्स पार्क) स्थित है।

- यहाँ पर लगभग करोड़ों वर्ष पुराने 'जुरासिक काल' के लकड़ी के अवशेष रखे हुए हैं।

Imp. (v) आकल गाँव के पास जैसलमेर में 'चाँदन नलकूप' स्थित है जिन्हें 'थार का घड़ा' कहा जाता है।

[ii] अर्द्धशुष्क मरुस्थलीय प्रदेश →

इसकी पश्चिमी सीमा 25 cm. वर्षा रेखा एवं पूर्वी सीमा अरावली पर्वतमाला बनाती है (50 c.m. वर्षा रेखा)।

- इस क्षेत्र में वर्षा 25 से 50 c.m. एवं अर्द्धशुष्क जलवायु पायी जाती है।

- इस क्षेत्र में मुख्य रूप से उष्ण कटिबंधीय काँटेदार वन पाये जाते हैं।

- यह मुख्य रूप से श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सीकर, चुरू, झुन्झुनू, नागौर, पाली, जालौर में फैला हुआ है।

- इसे चार भागों में बाँटा गया है ⇒

A. **लूनी बेसिन**: लूनी और उसकी सहायक नदियों से निर्मित मुख्य रूप से पाली, जालौर, बाड़मेर, जोधपुर में फैला हुआ है।

- इसे 'गोडवाड़ प्रदेश' भी कहा जाता है।
- इसे बारानी कृषि प्रदेश (वर्षा आधारित कृषि प्रदेश) के नाम से जाना जाता है।
- Imp - इस क्षेत्र का सबसे बड़ा जलाशय 'उम्मेद सागर' जलाशय (जवाई बाँध) है, जिसे 'मारवाड़ का अमृत सरोवर' कहा जाता है।
- इस क्षेत्र की मुख्य नहर परियोजना 'नर्मदा नहर परियोजना' है, जिससे राजस्थान के जालौर व बाड़मेर जिले लाभान्वित होते हैं।

→ **रोही मैदान** ⇒ लूनी बेसिन में लूनी नदी एवं अरावली पर्वतमाला के बीच उपजाऊ क्षेत्र को रोही मैदान के

studygyan24

Dinesh Choudhary
Owner

Free Modal Paper

Vijendra Choudhary
Assistant Worker

Vacancy Name	Modal Paper Number	Modal Paper Provide Starting Date	Total Post
Delhi Police Head Constable (Clerk)	30	Starting On 17 Novemberr 2019	554
Rajasthan High Court	20	Starting On 20 Novemberr 2019	5000
Indian Navy SSR / MR 2020	30	Starting On 23 Novemberr 2019	2700
REET Level 1 & 2	35	ऑफिशल नोटिफिकेशन जारी होते ही	35000+
Rajasthan Police Constable & SI	50	Being Provided उपलब्ध कराये जा रहे है	5000
Rajasthan Patwar Modal Paper	50	Being Provided उपलब्ध कराये जा रहे है	3835
Railway Group D	30	Being Provided उपलब्ध कराये जा रहे है	1,03,769
Railway NTPC	30	Being Provided उपलब्ध कराये जा रहे है	35,277
BSTC & PTET	40	Starting On 01 January 2020	24,000+
Haryana Police	10	Being Provided उपलब्ध कराये जा रहे है	6000
RSSB Stenographer	15	ऑफिशल नोटिफिकेशन जारी होते ही	1085
RSSB Gram Sevak	15	ऑफिशल नोटिफिकेशन जारी होते ही	2140+

यदि आप भी मुफ्त मोडल पेपर प्राप्त करना चाहते है तो जिस Vacancy की तैयारी कर रहे हो उस Vacancy का नाम लिखकर WhatsApp No. 8949451550 पर मैसेज करे

www.studygyan24.com studygyan24 dinesh_choudhary09

नाम से जाना जाता है।

[B.] **नागौरी उच्च प्रदेश** :

यह लूनी बेसिन के उत्तर में मुख्य रूप से नागौर जिले में स्थित है।

- यहाँ की मिट्टी में सोडियम क्लोराइड (नमक) के तत्वों की प्रधानता पाई जाती है, इसी कारण यह क्षेत्र अनुपजाऊ है।
- इस क्षेत्र में राजस्थान की सबसे अधिक खारे पानी की झीलें पाई जाती हैं।

जैसे →

डीडवाना
डेगाना
कुचामन
नांवा
सांभर

- इस क्षेत्र में नमक के तत्वों की अधिकता का कारण अरब सागर के मानसून को माना जाता है।

Imp ⇒ **कूबड़ पट्टी** →

यह नागौर व अजमेर की सीमा पर स्थित है।

- यहाँ के जल में फ्लोराइड के तत्वों की प्रधानता के कारण इस क्षेत्र में 'फ्लोरोसिस' रोग हो जाता है, जिससे

बुढ़ापे में लोगों की हड्डियाँ टेढ़ी हो जाती है।

[C] **शेखावाटी बेसिन** :

यह मुख्य रूप से सीकर, चुरू व झुन्झुनू में फैला हुआ है।

- इस क्षेत्र की प्रमुख नदी 'कांतली नदी' है।
- इस क्षेत्र को अन्तः स्थलीय क्षेत्र कहा जाता है।

Imp- इस क्षेत्र में स्थानीय छोटे तालाब या कच्चे कुओं को 'जोहड़' कहा जाता है।

(D) **घग्घर बेसिन** :

यह मुख्य रूप से श्रीगंगानगर व हनुमानगढ़ में घग्घर नदी से निर्मित है।

Imp- इस क्षेत्र में घग्घर नदी के तट को 'नाली' कहा जाता है, इसी कारण यहाँ पर नाली नस्ल की भेड़ें पाई जाती है।

- यह राजस्थान का सबसे अधिक उत्पादकता वाला क्षेत्र है। एवं राजस्थान में सबसे अधिक नहरी सिंचित क्षेत्र है।

Imp ✱ प॰ राजस्थान में प्राचीन जल के स्त्रोत, जो कि वर्तमान में लुप्त हो रहे हैं ⇒

1. आगोर / टांका :

पश्चिमी राजस्थान में वर्षा के जल को इकट्ठा करने के लिए घरों के आंगन में जो स्थान बनाये जाते हैं, उन्हें टांका / आगोर कहा जाता है।

2. टाट / रन :

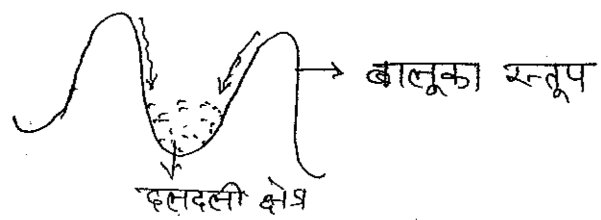

पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश में दो बालुका स्तूपों के मध्य नीचले स्थान पर वर्षा के जल से बना दलदली क्षेत्र 'टाट / रन' कहलाता है।

- इस क्षेत्र में जैसलमेर के पालीवाल ब्राह्मणों के द्वारा 'खडीन कृषि' की जाती है।

3. नाडी :

पश्चिमी मरुस्थल में प्राकृतिक कारणों से बने ऊँचे - नीचे स्थान जिसमें वर्षा का जल इकट्ठा होता है, उसे नाडी कहा जाता है।

- इस जल का उपयोग पशुपालन एवं दैनिक कार्यों के

लिए किया जाता है।

4. जोहड़ :

शेखावाटी क्षेत्र में स्थानीय छोटे तालाब एवं कच्चे कुँओं को जोहड़ कहा जाता है।

5. पलाया झील :

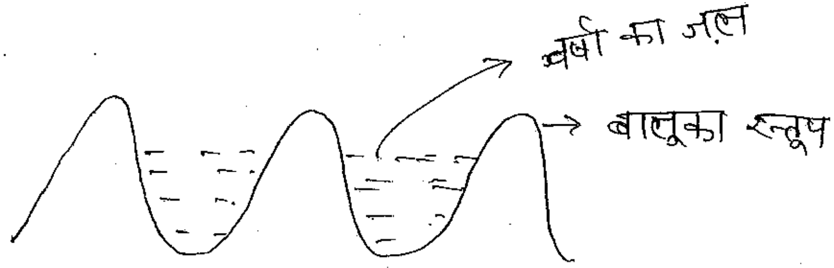

दो बालुका स्तूपों के बीच नीचली भूमि में वर्षा का जल इकट्ठा होने से इन झीलों का निर्माण होता है।

- कभी - कभी ये झीलें नमकीन (लवणीय) हो जाती है, जिन्हें 'सेलीना' के नाम से जाना जाता है।

6. तल्ली / पोखर :

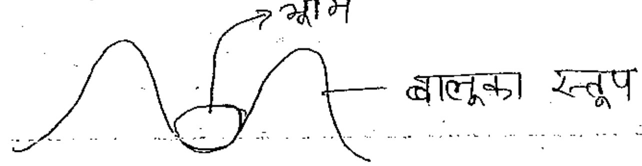

दो बालुका स्तूपों के बीच नीचली भूमि को तल्ली या पोखर कहा जाता है।

7 बावड़ी → सामान्यतः चौकोर व सीढ़ीनुमा तालाब, बावड़ी कहलाता है।

* राजस्थान के पश्चिमी भाग से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्य :

1. सम गाँव :

Imp → जैसलमेर में स्थित सम गाँव पूर्णतः वनस्पति रहित क्षेत्र है।

- यहाँ राजस्थान का सबसे कम वर्षा वाला स्थान है।
- यहाँ रेत के धोरों में फिल्मों की शूटिंग की जाती है, जो कि वर्तमान में एक पर्यटन स्थल के रूप में जाना जाता है।

NOTE → पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिया गया ⇒ 4 मार्च 1989 ↓ मोहम्मद युनुस समिति के द्वारा

↓

हस्तशिल्प उद्योग

2. थार का घड़ा :

जैसलमेर के भाकल गाँव में स्थित चाँदन नलकूप को 'थार का घड़ा' कहा जाता है।

3. पीवणा :

पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश में पाया जाने वाला सबसे विषैला सर्प।

16/07/14

- मिट्टी के रंग का होता है।
- लम्बाई → 1 फुट
- ऐसा माना जाता है, कि यह सांप काटता नहीं है, बल्कि अपना जहर छोड़ता है, जो मनुष्य के श्वास के साथ शरीर में चला जाता है। और इस जहर से मनुष्य की मृत्यु हो जाती है।

4. **मरुस्थल का प्रसार** : March Past of Desert कहते हैं। राजस्थान में मरुस्थल का धीरे-2 आगे बढ़ना, जिससे दिन-प्रतिदिन भूमि बंजर होती जा रही है, इसे ही मरुस्थल का प्रसार कहा जाता है।
- यह राजस्थान के अलावा अन्य राज्यों में भी बढ़ रहा है, जैसे - गुजरात, पंजाब, हरियाणा।

5. **सर / सरोवर** :
राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र या पश्चिमी मरुस्थलीय क्षेत्र में छोटे-2 तालाबों को सर या सरोवर कहा जाता है।
जैसे → परबतसर (नागौर)
लूणकरणसर (बीकानेर)

6. **मावठ / महावठ** :
भारत में शीतकाल के समय भूमध्य, सागरीय चक्रवात (पश्चिमी विक्षोभ) से होने वाली

वर्षा राजस्थान में 'मावठ' कहलाती है।

Imp: यह 'गेहूँ' की फसल के लिए लाभदायक होती है, इसी कारण इसे 'रबी का अमृत' कहा जाता है।

7. **मालाणी प्रदेश** :

लूनी बेसिन का मध्यवर्ती क्षेत्र मालाणी प्रदेश कहलाता है, जो कि मुख्य रूप से जालौर एवं बालोतरा (बाड़मेर) में फैला हुआ है।

Imp मालाणी के गाय व घोड़े प्रसिद्ध हैं।

Q: पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश में हरियाली के प्रकार एवं क्षेत्रों के बारे में बताइये।

Ans 1. **मरुद्भिद (जीरोफाइट)** :

पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश में मुख्य रूप से यह वनस्पति पाई जाती है, जिसकी जड़ें गहरी एवं पत्तियाँ काँटेदार होती हैं।

जैसे → खेजड़ी, बबूल, फोग, बैर, कैर

2. **चाँदन नलकूप** ⇒

आकल के पास चाँदन नलकूप स्थित है, जिसके आस-पास की भूमि उपजाऊ होती है।

बणश्वर → माघ पूर्णिमा

3. मरुद्यान / नखलिस्तान :

पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश में जल की उपलब्धता वाले क्षेत्रों में मुख्य रूप से वनस्पतियाँ पाई जाती है।

जैसे → चाँदन नलकूप

कोलायत झील → बीकानेर

→ कपिलमुनि का आश्रम

→ कार्तिक पूर्णिमा को मेला भरता है। (पुष्कर में मेला)

4. तल्ली / मरहो / बालसन / पोखर

5. टाट / रन

6. पलाया झील / खारी झील / सैलीना

7. लाठी सीरिज

8. बग्गी → गंगानगर, हनुमानगढ़ क्षेत्र (उपजाऊ क्षेत्र)

* निष्कर्ष :

इस मरुस्थलीय क्षेत्र में हरियाली के कारण पेड़ - पौधे, जीव - जन्तु एवं मनुष्यों का निवास अधिक पाया जाता है। इसलिए यह मरुस्थल विश्व में सबसे अधिक जैव विविधता वाला क्षेत्र है।

1911 → रायसीना की पहाड़ी → राष्ट्रपति भवन बना है।
↓ सर्वप्रथम लॉर्ड इरविन

2. **अरावली पर्वतीय प्रदेश** :

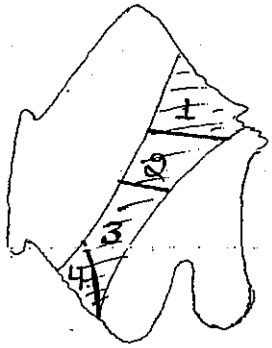

अरावली पर्वतमाला

राजस्थान के मध्यवर्ती भाग में स्थित है, जो कि राजस्थान को दो भागों में विभाजित करती है।

- **अरावली पर्वतीय प्रदेश की भौतिक विशेषताएँ** ⇒

(i) **विस्तार** :

अरावली पर्वतमाला का विस्तार गुजरात में 'पालनपुर' जिले से लेकर राजस्थान के मध्य से होते हुए दिल्ली में 'पालन' नामक स्थान पर 'रायसीना की पहाड़ियों' तक है।

- यह दक्षिण पश्चिम से उत्तर - पूरब दिशा में फैली हुई है।

(ii) **जनसंख्या व क्षेत्रफल** :

अरावली पर्वत राजस्थान के 9% भाग पर स्थित है, जिस पर राज्य की कुल जनसंख्या का 10% भाग निवास करता है।

(iii) **लम्बाई व ऊँचाई** :

अरावली पर्वतमाला की कुल लम्बाई 692 k.m. है जिसमें से राजस्थान में 550 k.m.

(80%) है।

- अरावली की समुद्र तल से औसत ऊँचाई 930 मीटर है।

4. **जिले**:

अरावली मुख्य रूप से सिरोही, उदयपुर, डूंगरपुर, बाँसवाड़ा, राजसमंद, पाली, अजमेर, जयपुर, दौसा, अलवर, सीकर, झुन्झुनू में फैली हुई है।

5. **जलवायु**:

अरावली पर्वतीय प्रदेश में मुख्य रूप से उपार्द्र जलवायु पाई जाती है।

6. **मिट्टी एवं कृषि**:

अरावली पर्वतीय प्रदेश में मुख्य रूप से पर्वतीय मिट्टी, लाल मिट्टी एवं मिश्रित काली मिट्टी पाई जाती है।

- यहाँ अरावली की ढालों पर मुख्य रूप से 'मक्का' की खेती की जाती है।

7. **प्रकृति**:

Imp. अरावली पर्वतमाला विश्व की सबसे प्राचीन वलित पर्वतमाला है, जिसकी उत्पत्ति 'प्री कैम्ब्रियन' काल में मानी जाती है।

- अरावली पर्वतमाला को अवशिष्ट पर्वत (घिसा हुआ)

का उदाहरण माना जाता है, जिसकी तुलना उ. अमेरिका महाद्वीप के पू. तट पर स्थित 'अप्लेशियन पर्वत' से की जाती है।

8. उच्चावच : [ऊँचा-नीचा-ढाल]

अरावली पर्वतमाला में मुख्य रूप से पर्वत-चोटी, पठार एवं छोटी - छोटी पहाड़ियाँ पाई जाती हैं।

9. वनस्पति :

इस पर्वतीय प्रदेश में मुख्य रूप से 'ऊष्ण-कटिबंधीय पतझड़ वन' पाये जाते हैं।

10. वर्षा :

अरावली पर्वतीय प्रदेश में 50-80 c.m. वर्षा होती है।

* अरावली पर्वतमाला को मुख्य रूप से चार भागों में बांटा गया है ⇒

1. उतरी अरावली
2. मध्य अरावली
3. दक्षिणी अरावली
4. आबू खण्ड पर्वत

1. उतरी अरावली :

यह मुख्य रूप से शेखावाटी, जयपुर

कौसा, अलवर क्षेत्र में स्थित है; जिसकी समुद्र तल से औसत ऊँचाई 450 मीटर है।

Imp - R.A.S इसकी सबसे ऊँची चोटी रघुनाथगढ़ (1055 मी.) (सीकर) है।

- यह पर्वत चोटी सीकर में मालखेत की पहाड़ियों में स्थित है।

2. मध्य अरावली :

इस भाग में अरावली का विस्तार कम पाया जाता है, जो कि ब्यावर के समीप अत्यधिक कम है।

Imp इसकी सबसे ऊँची चोटी नाग पहाड़ियों में 'तारागढ़' (870 मी.) (अजमेर) है।

- इसकी समुद्र तल से औसत ऊँचाई 550 मी. है।
- अरावली का यह भाग कटा-फटा होने के कारण यहाँ अत्यधिक मात्रा में दर्रे (स्थानीय भाषा में नाल कहा जाता है) पाये जाते हैं

जैसे → जीलवाड़ा की नाल → पाली

देसूरी की नाल → पाली

सोमेश्वर की नाल - पाली

बर दर्रा → पाली

- यह मुख्य रूप से अजमेर, पाली, राजसमन्द में विस्तृत है।

3. दक्षिणी अरावली ⇒
यह मुख्य रूप से सिरोही, उदयपुर राजसमन्द में विस्तृत है।

Imp - इसकी सबसे ऊँची चोटी 'जरगा चोटी' (1481 मी) उदयपुर में है।

- इसकी समुद्रतल से औसत ऊँचाई 1000 मी. है।

Imp. इसमें मुख्य रूप से फुलवारी की नाल (उदयपुर) केवडा की नाल (उदयपुर), हल्दीघाटी की नाल (राजसमंद) प्रमुख दर्रे पाये जाते है।

4. आबू पर्वत खण्ड :
यह मुख्य रूप से 'सिरोही' जिले में स्थित है।

- इसकी समुद्र तल से औसत ऊँचाई 1000 मी. है।

Imp - इसकी सबसे ऊँची चोटी 'गुरुशिखर' (1722 मी.) (सिरोही) है।

Q: राजस्थान में अरावली पर्वतमाला के पठारों का विस्तृत वर्णन करो।

Ans 1. Imp उड़िया का पठार :
यह राजस्थान का सबसे ऊँचा

पठार है, जो कि गुरुशिखर के नीचे सिरोही में स्थित है।

- इसकी ऊँचाई 1360 मीटर है।

2. **आबू का पठार**:

यह राजस्थान का दूसरा सबसे ऊँचा पठार है।

- इसकी ऊँचाई 1200 मीटर है।
- यह सिरोही जिले में स्थित है।

3. **भोराठ का पठार**:

यह पठार गोगुन्दा (उदयपुर) से लेकर कुम्भलगढ़ (राजसमन्द) तक विस्तृत है। जो कि उदयपुर व राजसमंद में स्थित है। (गोगा ने कुंभा को भोरा दिया)

4. **लासड़िया का पठार**:

Imp यह राजस्थान का क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा पठार है। जो कि जयसमन्द झील (उदयपुर) के आसपास स्थित है।

5. **ऊपरमाल का पठार**:

यह पठार बिजौलिया (भीलवाड़ा) से लेकर भैंसरोड़गढ़ (चित्तौड़गढ़) तक विस्तृत है।

6. **मानदेसरा का पठार**:

यह पठार चित्तौड़गढ़ जिले में

स्थित है।

7. **मेसा का पठार**:

यह पठार चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित है।

Imp. जिस पर 'चित्तौड़ गढ़ दुर्ग' बना हुआ है।

- यह दुर्ग राजस्थान का सबसे बड़ा आवासीय दुर्ग है।

IInd → जैसलमेर दुर्ग

8. **पीड़मांट का पठार**:

यह पठार देवगढ़ (राजसमन्द) में स्थित है।

- इसे 'पीडमांट का मैदान' भी कहा जाता है।

9. **कांकनवाड़ी / कांकनी का पठार**:

यह पठार अलवर के सरिस्का अभयारण्य में स्थित है, जिस पर मुख्य रूप से बन्दर पाये जाते है।

सरिस्का में 4 धार्मिक स्थल है।

10. धोराजी का पठार ⇒ चित्तौड़गढ़

17/07/14

* **निष्कर्ष** ⇒ राजस्थान के पठार मुख्य रूप से छोटे एवं संरचनात्मक दृष्टि से कमजोर हैं।

- इनको संरक्षण प्रदान करने के लिए राज्य सरकार के द्वारा इन्हें पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करना होगा।

Q: राजस्थान के अरावली पर्वतीय प्रदेश में कौन-कौनसे दर्रे हैं? एवं वे किन-किन स्थानों को जोड़ते हैं, व कहाँ पर स्थित हैं?

Ans 1. **जीलवाड़ा की नाल (पगल्या की नाल)**: यह दर्रा पाली जिले में स्थित है, जो कि मारवाड़ से मेवाड़ को रास्ता प्रदान करता है।

2. **सोमेश्वर की नाल** ⇒ यह दर्रा पाली में स्थित है एवं यह पाली को राजसमन्द से जोड़ता है।

3. **बर दर्रा**: यह पाली जिले में स्थित है

- मध्यकाल में इस दर्रे से जोधपुर-आगरा मार्ग गुजरता था। लेकिन वर्तमान में इस दर्रे से NH-14 गुजरता है।

— यह दर्रा ब्यावर को बर से जोड़ता है।
पाली

4. **देसूरी की नाल** :
यह पाली में स्थित है, जो कि 'मेवाड़ को मारवाड़' से जोड़ने का कार्य करती है।

5. **हाथीगुड़ा की नाल** :
यह पाली में स्थित है, जो कि पाली राजसमंद की सीमा पर मार्ग प्रदान करती है।

Imp- इसी के समीप कुम्भलगढ़ दुर्ग स्थित है।

6. **केवड़ा की नाल** →
यह नाल उदयपुर जिले में स्थित है, जो कि उदयपुर बेसिन या उदयपुर सिटी को उदयपुर जिले से जोड़ती है।

Imp 7. **फुलवारी की नाल** :
यह राजस्थान की क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ी नाल है, जो उदयपुर जिले में स्थित है।

Imp 8. **हल्दीघाटी की नाल** :
यह नाल राजसमन्द जिले में स्थित है, जिस पर राजस्थान में सर्वाधिक चन्दन के वृक्ष पाये जाते हैं।

- यह राजस्थान में पर्यटन स्थल के रूप में जाना जाता है।

9. **बौरांग दर्रा**:

यह सिरोही के दक्षिणी भाग में स्थित है।

- यह माउन्ट आबू क्षेत्र को उदयपुर से जोड़ने का कार्य करता है।

Imp 10. **पीपली की नाल**:

यह राजस्थान की सर्वाधिक ऊँचाई पर स्थित नाल है। जो कि सिरोही जिले में स्थित है।

Note
Imp इस दर्रे से पूर्णतः राजस्थान में स्थित सबसे बड़ा NH - 112 गुजरता है।
↓
इसकी लम्बाई 424 K.M. है।

* **निष्कर्ष** → ये नाल न केवल भूगोल है बल्कि पश्चिमी संस्कृति को पूर्वी संस्कृति को जोड़ने का काम करते हैं। इसी कारण हम कह सकते हैं, कि यहाँ भूगोल का संस्कृति पर प्रभाव दिखाई देती है।

Q :→ राजस्थान में चलने वाली स्थानीय पवनें कौन-कौन सी हैं? उनका विस्तार से वर्णन कीजिए।

Ans हवाएं हमेशा उच्च वायुदाब से निम्न वायुदाब की ओर चलती हैं, जिन्हें पवनें कहा जाता है।

- राजस्थान में कई प्रकार की स्थानीय पवनें चलती हैं जिनके निम्न प्रकार हैं ⇒

1. भभूल्या :

इसका शाब्दिक अर्थ वायु का भँवर होता है।

- मरुस्थल में निम्न वायु दाब के केन्द्र के कारण स्थानीय स्तर पर बनने वाले भंवरो को स्थानीय भाषा में भभूल्या कहा जाता है।

2. पश्चिमी विक्षोभ :

शीत काल में पश्चिम से पूरब दिशा की ओर चलने वाली भूमध्य सागरीय पवनों को पश्चिमी विक्षोभ कहा जाता है।

Imp - इन्ही के कारण राजस्थान में 'मावठ' होती है।

Imp - इन्ही पवनों को क्षोभ मण्डल में 6 से 12 K.M. की ऊँचाई पर 'जेट स्ट्रीम' कहा जाता है।

→ इन पवनों का नाम जेट स्ट्रीम द्वितीय विश्वयुद्ध के समय युद्ध विमान B-32 (बम वर्षक) जेट विमान के आधार पर रखा गया है।

3. वज्र :

इसका शाब्दिक अर्थ 'छोटा तूफान' होता है। जो कि पश्चिमी मरुस्थल में निम्न वायुदाब के कारण छोटे-छोटे चक्रवात चलते हैं, जिन्हें स्थानीय भाषा में 'वज्र' कहा जाता है।

4. वज्रात :

प. राजस्थान में छोटे-2 चक्रवातों से मानसून से पहले होने वाली वर्षा को स्थानीय भाषा में वज्रात कहा जाता है।

5. पुरवईयाँ :

इसका शाब्दिक अर्थ होता है ⇒ 'पूरब दिशा की ओर से आने वाली पवनें' अर्थात् राजस्थान में ग्रीष्म काल के समय पूरब दिशा से आने वाले 'बंगाल की खाड़ी' के मानसून को पुरवईयाँ पवन कहा जाता है।

6. लूयां :

गर्मियों के समय में उत्तर-पश्चिम से

आने वाली गर्म पवनों को स्थानीय भाषा में लूर्या कहा जाता है।

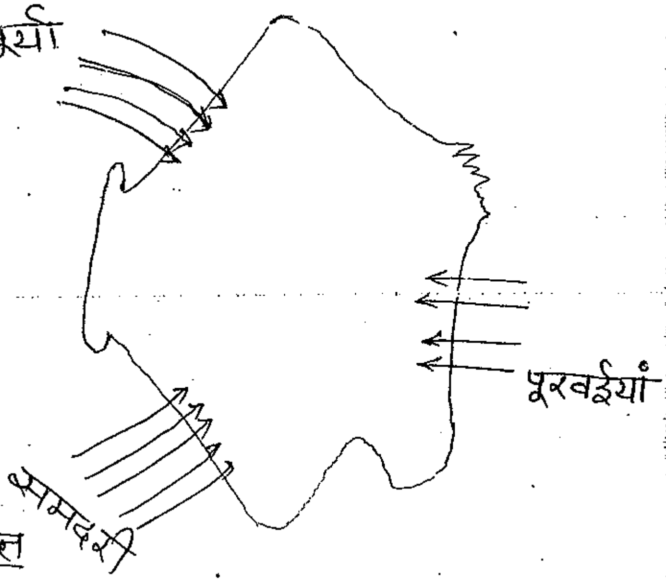

7. समदरी :

राजस्थान में ग्रीष्मकाल के समय समुद्र की ओर से आने वाली द. पश्चिमी पवनों को स्थानीय भाषा में समदरी कहा जाता है।

8. सीली →

इसका शाब्दिक अर्थ → 'ठण्डी पवने' होता है।

- राजस्थान में शीतकाल के समय 'पौष माह' में चलने वाली ठण्डी पवनों को सीली कहा जाता है।

9. सीली मारबो / सीली बेवडो →

पौष माह में चलने वाली ठण्डी पवनों से राजस्थान में रबी की फसल पर पाला पडता है, जिससे पेड़ - पत्तियाँ मुरझाने लगते हैं। इसी कारण इसे सीली मारबो या सिली बेवडो कहा जाता है।

10. लुवा / तवा :

इसका शाब्दिक अर्थ होता है → गर्म पवनें

प. मरुस्थलीय प्रदेश में चलने वाली पवनों को तुबा या तवा कहा जाता है।

11. **झला / झाला** ⇒

प. राजस्थान में 'पूर्ण आन्तरिक परावर्तन' के कारण जो चमकती हुई मृग मरीचिका दिखाई देती है, उसे स्थानीय भाषा में झला या झाला कहते हैं।

12. **आथूणी** ⇒

इसका शाब्दिक अर्थ होता है → शाम के समय चलने वाली पवनें।

- राजस्थान में शाम के समय जो पवनें चलती हैं, इन्हें स्थानीय भाषा में आथूणी कहा जाता है।

13. **अडाव** ⇒

इसका शाब्दिक अर्थ होता है → चिल्लाना

- पश्चिमी राजस्थान में तेज हवाओं के साथ आवाज करती हुई स्थानीय पवनों को अडाव कहा जाता है।

14. **लू** ⇒

राजस्थान के प. मरुस्थलीय प्रदेश में चलने वाली गर्म व तेज पवनों को स्थानीय भाषा में लू कहा जाता है।

- इसके कारण बीमार होने वाले व्यक्ति को 'लू

भगना' कहा जाता है।

15. दोगड़ा ⇒ 'मानसून पूर्व की वर्षा'
- राजस्थान में निम्न वायुदाब एवं अधिक आर्द्रता के कारण मई - जून में होने वाली मानसून पूर्व वर्षा को स्थानीय भाषा में दोगड़ा कहते हैं। Trick (मानसून से पहले दो बारगड़ा)

16. धराऊ / धरोड़ / उतराद्य ⇒
उत्तर दिशा से आने वाली पवनें।
Trick (उत्तर में धरा गया)

* **निष्कर्ष** ⇒
राजस्थान में चलने वाली इन स्थानीय पवनों से जन मानस प्रभावित होता है।
- इसी के आधार पर राजस्थान की संस्कृति का निर्धारण किया जाता है।

3. पूर्वी मैदानी प्रदेश

Q: राजस्थान में अरावली पर्वतमाला को अनेक प्रादेशिक नामों से जाना जाता है, उनके बारे में वर्णन करो।

Ans 1. पलखेत की पहाड़ियाँ : झुन्झुनू

2. मालखेत की पहाड़ियाँ : सीकर → रघुनाथगढ़ चोटी

3. हर्ष की पहाड़ियाँ : सीकर

Imp - इन पहाड़ियों पर प्रसिद्ध 'जीणमाता का मन्दिर' स्थित है।

* हर्ष का मन्दिर → सीकर

* हर्षनाथ की पहाड़ियाँ → अलवर

* हर्षद माता का मन्दिर → आभानेरी (दौसा)

5. मेरवाड़ा की पहाड़ियाँ → ये पहाड़ियाँ अजमेर से लेकर राजसमन्द तक विस्तृत हैं, जो कि मेवाड़ को मारवाड़ से अलग करती हैं।

Imp 6. छप्पन की पहाड़ियाँ → ये पहाड़ियाँ बाड़मेर के सिवाना

नामक स्थान पर स्थित है। जहाँ पर प्रसिद्ध *भांडासर के जैन मन्दिर' स्थित है।

7. छप्पन पर्वत →
उदयपुर

8. छप्पन का मैदान →
बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़

Imp 8. त्रिकूट पहाड़ियाँ →
ये पहाड़ियाँ जैसलमेर में स्थित है, जिन पर प्रसिद्ध 'सोनारगढ़ दुर्ग' बना है, जो कि राजस्थान का दूसरा सबसे बड़ा आवासीय दुर्ग है।

9. त्रिकूट पर्वत →
करौली

Imp - इस पर प्रसिद्ध 'कैला देवी' का मन्दिर स्थित है।

10. आडावाला पर्वत →
बूंदी

11. मुकुन्दवाड़ा की पहाड़ियाँ →
कोटा - झालावाड़

very Imp. इन पहाड़ियों पर राजस्थान का तीसरा राष्ट्रीय उद्यान 'दर्रा अभयारण्य' स्थित है।

12. बीजासण पर्वत ⇒
माण्डलगढ़ - [भीलवाड़ा]

13. सुन्धा माता पर्वत / सुण्डा माता पर्वत :
यह पर्वत भीनमाल (जालौर) में स्थित है।

very Imp - इस पर राजस्थान का प्रथम 'रोप वे' 2006 में बनाया गया।
2008 में उद्घाटन किया गया।

14. मालाणी पर्वत श्रेणी →
यह बाड़मेर के बालोतरा एवं जालौर की सीमा पर स्थित है।

* अरावली की 7 सर्वोच्च चोटियाँ →

1. गुरुशिखर → सिरोही → 1722 मी.
2. सेर → सिरोही → 1597 मी.
3. दिलवाड़ा → सिरोही → 1442 मी.
4. जरगा → उदयपुर → 1431 मी.
5. अचलगढ़ → सिरोही → 1380 मी.
6. रघुनाथगढ़ → सीकर → 1055 मी.
7. खो → जयपुर → 920 मी.

Trics → [गुरु से देव जरा आशा रखो]

→ कर्नल टॉड ने गुरुशिखर को 'संतों का शिखर' कहा है।

3. **पूर्वी मैदानी प्रदेश** ⇒

पू. मैदानी प्रदेश अरावली के पूर्वी भाग में गंगा और यमुना के मैदान से जुड़ा हुआ है।

राजस्थान के भौतिक प्रदेशों में जलवायु, वनस्पति मृदा एवं कृषि की दृष्टि से समरूपता पाई जाती है।

- **पूर्वी मैदानी प्रदेश की भौतिक विशेषताएँ** ⇒

1. **विस्तार** :

राजस्थान में 50 c.m. वर्षा रेखा से पूरब में स्थित प्रदेश को पूर्वी मैदानी प्रदेश के नाम से जाना जाता है।

- यह प्रदेश नदियों के द्वारा निर्मित है, इसी कारण इसे नदी निर्मित बेसिन या प्रदेश कहा जाता है।

2. **जिले** ⇒

यह मुख्य रूप से धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर, कोटा, चित्तौड़, जयपुर, दौसा, भरतपुर, टोंक, भीलवाड़ा, राजसमन्द, उदयपुर, डूँगरपुर, बाँसवाड़ा में विस्तृत है।

3. **क्षेत्रफल एवं जनसंख्या** ⇒

यह राजस्थान के कुल क्षेत्रफल के

23% भाग पर स्थित है, जहाँ पर कुल जनसंख्या का 39% भाग निवास करता है। इसी कारण यह राजस्थान का जनसंख्या घनत्व की दृष्टि से सबसे बड़ा भौतिक विभाग है।

4. जलवायु :

इस प्रदेश में आर्द्र एवं उपार्द्र जलवायु पाई जाती है।

5. वर्षा :

इस प्रदेश में औसत वार्षिक वर्षा 50 से 80c.m. होती है।

6. कृषि :

इस क्षेत्र में मुख्य रूप से गेहूँ, सरसों, चावल, गन्ना उत्पादित किये जाते हैं।

[सरसों गंगानगर में सबसे ज्यादा होती है (उत्पादकता अधिक)]

7. खनिज :

इस प्रदेश में मुख्य रूप से अधात्विक खनिज पाये जाते हैं, एवं सर्वाधिक मात्रा में इस क्षेत्र में संगमरमर का उत्खनन होता है।

संगमरमर ⇒ सफेद – मकराना

पीला – भरतपुर

हरा – उदयपुर

लाल – धौलपुर

8. **उच्चावच**:
इस प्रदेश के चम्बल नदी बेसिन को छोड़कर बाकी पूरा क्षेत्र मैदानी प्रदेश है।

- इस प्रदेश के चम्बल बेसिन मे डांग, बीहड़ आदि स्थलाकृति पाई जाती हैं।

9. **मिट्टी**:
इस प्रदेश में मुख्य रूप से दोमट (जलोढ़) एवं कछारी मिट्टी पाई जाती है। जो कि राजस्थान में सबसे अधिक उपजाऊ मिट्टी है।

10. **वनस्पति**:
इस प्रदेश में मुख्य रूप से नीम, शीशम, साल, सागवान, खेजड़ी, रोहिड़ा, बबूल आदि वनस्पतियाँ पाई जाती हैं।

पूर्वी मैदानी प्रदेश को मुख्य रूप से तीन भागों में बांटा गया है ⇒

(i) **चम्बल नदी बेसिन**
⇓
यह मुख्य रूप से चम्बल एवं इसकी सहायक नदियों से निर्मित है।

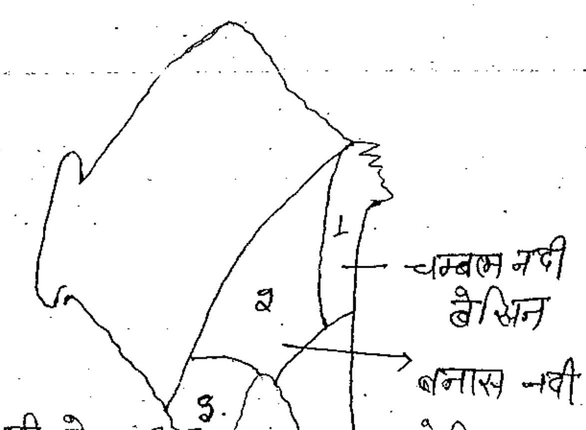

चिकी सक धौ → चम्बल नदी (TRICKS)

- कोटा, चित्तौड़गढ़, सवाईमाधोपुर, धौलपुर, करौली, बूँदी आदि जिलों में यह भाग फैला हुआ है।

(ट्रिक - चम्बल कोचि में सवा किलो बूँदी धौ)

- इस क्षेत्र का ढाल दक्षिण पश्चिम से उत्तर-पूरब दिशा की ओर है।

→ चम्बल की प्रमुख सहायक नदियाँ =>

(i) बनास

(ii) कालीसिन्ध

(iii) पार्वती

(iv) सीप

(v) परवन

(vi) मेज

(vii) आँगली

(viii) छोटा पछाड़

* उत्खात स्थलाकृति :

चम्बल नदी का तीव्र ढाल वाला क्षेत्र जो कि चम्बल नदी के द्वारा गहरे गड्डों से निर्मित है, इसे उत्खात स्थलाकृति कहा जाता है।

* डांग :

चम्बल नदी क्षेत्र में उत्खात स्थलाकृति, बीहड़ एवं गहरे गड्डों वाला क्षेत्र डांग क्षेत्र कहलाता है।

(इरफान खान का प्रसिद्ध संवाद → डाकू तो संसद में रहते है, बीहड़ / डांग में तो बागी रहते है।)

* **खादर** :
चम्बल नदी के द्वारा निर्मित 5 से 30 मीटर गहरे गड्ढों को स्थानीय भाषा में खादर कहा जाता है।

Note →
राजस्थान में सबसे अधिक बीहड़ एवं डांग का विस्तार सवाईमाधोपुर व करौली जिले में है।
↓ बीहड़ ज्यादा
↓ डांग क्षेत्र ज्यादा है।

(ii) **बनास नदी बेसिन** :
यह बेसिन बनास एवं उसकी सहायक नदियों से निर्मित है, जो कि मुख्य रूप से अजमेर, सवाईमाधोपुर, टोंक, भीलवाड़ा, राजसमन्द, उदयपुर, चित्तौड़गढ़ आदि में विस्तृत है। (बन्ना आज भी सन्धि में राज को टोका) सटोभीरा अचि
बनास

(बाणगंगा - भरतपुर, दौसा, जयपुर)

- इस क्षेत्र के उतरी भाग को मालपुरा का मैदान (टोंक) एवं दक्षिणी भाग को मेवाड़ का मैदान कहा जाता है।

- इस क्षेत्र की प्रमुख नदियाँ :
  (i) बेड़च
  (ii) मेनाल
  (iii) खारी
  (iv) कोठारी

Imp:- इस क्षेत्र में सबसे बड़ा बाँध टोंक जिले में 'बीसलपुर बाँध' है, जो कि राजस्थान की सबसे बड़ी पेयजल परियोजना है।

Imp. इससे जयपुर, अजमेर, ब्यावर व टोंक में पेयजल प्राप्त किया जाता है।

- बीसलपुर बाँध बनास नदी पर बना है।

(ii) माही नदी बेसिन :

यह प्रदेश माही व उसकी सहायक नदियों से निर्मित है, तथा डूंगरपुर, बांसवाड़ा और प्रतापगढ़ में स्थित है।

- छप्पन का मैदान इसी क्षेत्र में है - प्रतापगढ़, बांसवाड़ा

→ कांठल (प्रतापगढ़) भी इसी क्षेत्र की विशेषता है।

- वागड़ प्रदेश ⇒

डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़

⇒ मुख्य नदियाँ :

माही (सोना ए अएचा)
सोम — त्रिवेणी संगम → वेणेश्वर
जाखम, एरण, अनास, एराव, चाप

चाप
अनास
एरण

* **वालरा** ⇒
आदिवासियों के द्वारा जंगलो को जलाकर दक्षिणी राजस्थान में की गई कृषि वालरा कहलाती है।
- इसके दो रूप होते हैं →
(i) दजिया → मैदानी भागों में
(ii) चिमाता → पहाडी ढालों पर
- इस कृषि को असम में झुमिंग व M.P. में कुमरि कहते हैं

4. **दक्षिणी पूर्वी पठारी प्रदेश** :
यह राजस्थान के द० पूर्वी भाग में स्थित मालवा के पठार का विस्तार माना जाता है।

* **भौतिक विशेषताएँ** :

1. **विस्तार** ⇒
यह राजस्थान के द० पू० भाग में मुख्य रूप से कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड में विस्तृत है।

2. क्षेत्रफल व जनसंख्या :
राजस्थान के कुल क्षेत्रफल का 7%,

जिस पर राजस्थान की कुल जनसंख्या का 11% भाग निवास करता है।

3. **जलवायु** :

इस प्रदेश में आर्द्र एवं अति आर्द्र जलवायु पाई जाती है।

4. **मिट्टी** :

इस प्रदेश में मुख्य रूप से मध्यम काली, एवं लाल-पीली मिट्टियाँ पाई जाती है।

(करौली धौलपुर सवाईमाधोपुर)

5. **कृषि** :

इस प्रदेश में मुख्य रूप से कपास, गन्ना, चावल, खट्टे रसदार फल, सब्जियाँ आदि का मुख्य रूप से उत्पादन होता है

झालावाड़ में मौसमी/संतरा सर्वाधिक होती है

6. **खनिज** :

राजस्थान के इस प्रदेश में धात्विक एवं अधात्विक दोनों प्रकार के खनिज पाये जाते है।

जैसे → कोटा में कोटा स्टोन

भीलवाड़ा में अभ्रक

टोंक में तामड़ा (अधात्विक खनिज)

7. **वनस्पति** :

यहाँ मुख्य रूप से साल, सागवान, जामुन, आम, बरगद, रोहिड़ा, आदि वृक्ष पाये जाते हैं।

महुवा, बांस → आदिवासियों का हरा सोना

↓

आदिवासियों का कल्पवृक्ष

8. **वर्षा** :

इस क्षेत्र में औसत वार्षिक वर्षा 80 से 120 cm. तक होती है।

इस प्रदेश को दो भागों में बांटा गया है →

(i) विन्ध्याचल चट्टानी प्रदेश → चूना पत्थर, चि., भी., स.मा.

(ii) हाड़ौती का पठार

* **महान सीमा भ्रंश** :

अरावली पर्वतमाला के पूरब में स्थित है। जो कि विन्ध्याचल पर्वत श्रेणी को अरावली से अलग करता है।

* **सभी भौतिक प्रदेशों का निष्कर्ष** → उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि तीव्र जलवायु परिवर्तन, औद्योगिकिकरण, शहरीकरण, आधुनिकीकरण एवं कंक्रीट के जंगलों के विस्तार व बढ़ते हुए मानवीय हस्तक्षेप के कारण भौतिक प्रदेशों की संरचना एवं पर्यावरण में परिवर्तन हो रहा है। इसी कारण राजस्थान में प्रतिवर्ष सूखा एवं अकाल की स्थिति पाई जाती है।

- अतः इसके संरक्षण के लिए एवं भौतिक प्रदेशों की मूल संरचना में लाने की बहुत आवश्यकता है, जिससे सतत एवम् पोषणीय विकास को बढ़ावा मिलेगा।

राजस्थान की झील

1. जयसमन्द झील ⇒

उदयपुर

निर्माण ⇒

जयसिंह ने 1685-91 A.D में करवाया

- गोमती नदी पर बांध बनाकर
- गोमती नदी ढेबर नामक स्थान से ~~निकलती~~ है, इसलिए इसका उपनाम ढेबर झील है।
- राजस्थान की सबसे बडी कृत्रिम झील (मीठे पानी की)

- इस झील में 7 छोटे - बडे टापू हैं।

सबसे बडा टापू → बाबा का भांगडा

सबसे छोटा टापू → प्यारी

→ बाबा का मगरा ⇒ आइसलैण्ड ~~रिसा~~ रिसोर्ट होटल

→ इस झील से दो नहरें निकाली गई हैं (सिंचाई के लिए)

1. श्यामपुरा
2. भाटनहर

- जयसमंद के आस-पास 'भासडिया का पठार' स्थित है।

* **पिछोला झील** ⇒

उदयपुर

- उदयपुर की सबसे प्राचीन व सबसे सुन्दर झील

- निर्माण ⇒

राणा लाखा के शासनकाल में 1378 A.D. में एक बंजारे के द्वारा इस झील का निर्माण करवाया गया (14 वीं शताब्दी)

बंजारे का नाम → छीतर चिड़ीमार

→ पुनर्निर्माण ⇒

राणा सांगा → 1525 A.D.

→ उदयसिंह ने इस झील की पाल को पक्का करवाया।

* पिछोला झील में दो टापुओं पर दो महल बने हुए हैं →

1. जगमन्दिर → 1651 A.D. → जगतसिंह I.

→ 1620 A.D. में करणसिंह ने निर्माण शुरू करवाया था

2. जगनिवास

⇓

1746 A.D. में

जगत सिंह II

अपवाह तंत्र

1. आन्तरिक अपवाह तंत्र (60%)
2. बंगाल की खाड़ी (22%)
3. अरब सागर (17%)

बग्घर River

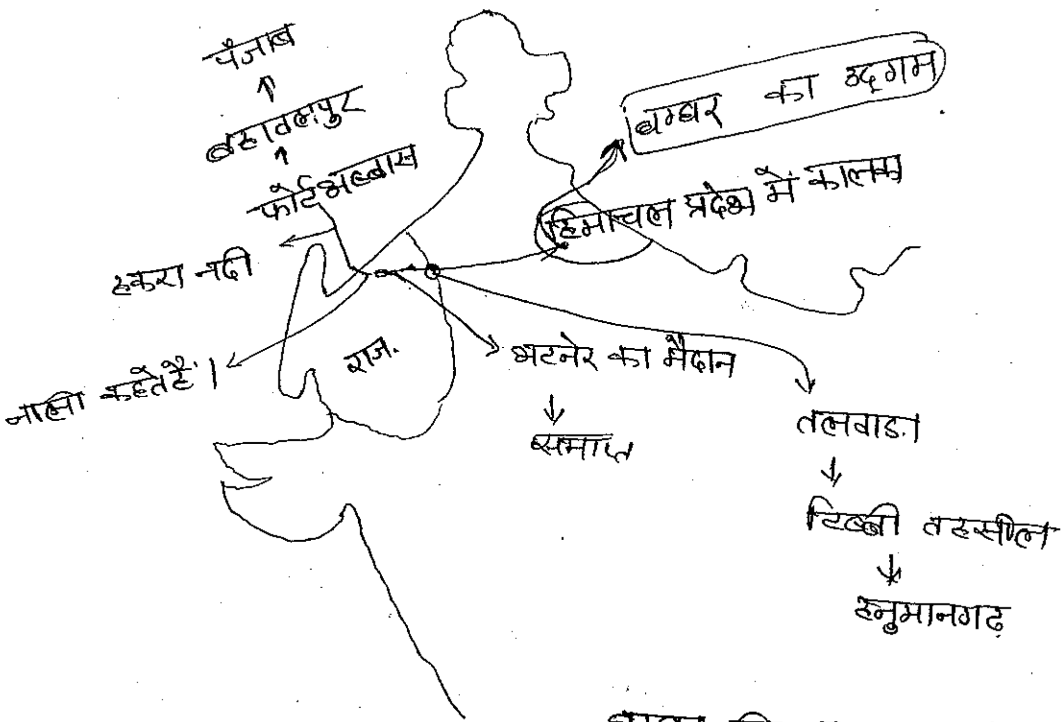

बग्घर की ल. 465 K.m.
↓
मृत नदी

* कांतली नदी → 100 K.m.
↓
पूर्ण रूप से राज. में बहने वाली आन्तरिक अपवाह तंत्र की सबसे लम्बी नदी

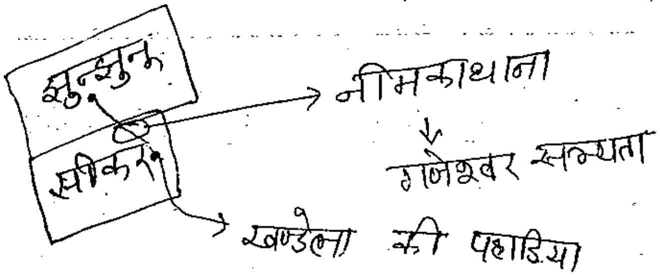

* **काकनेय** → जैसलमेर
↓
ल. 17 K.m.
↓
अन्तः स्थलीय अपवाह तंत्र की सबसे छोटी नदी
- इसे मसूरदी नदी भी कहते हैं।

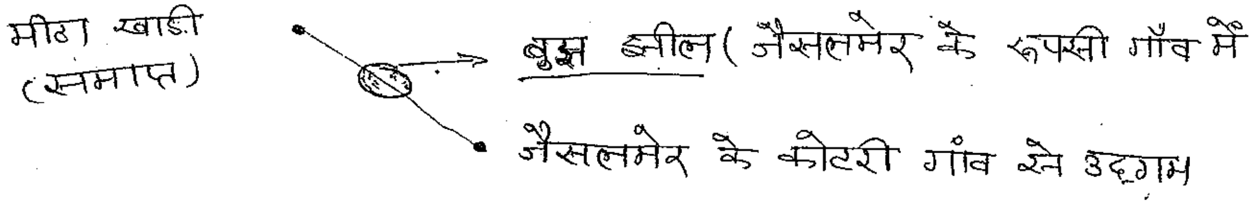

* **साबी नदी** ⇒ जयपुर, अलवर

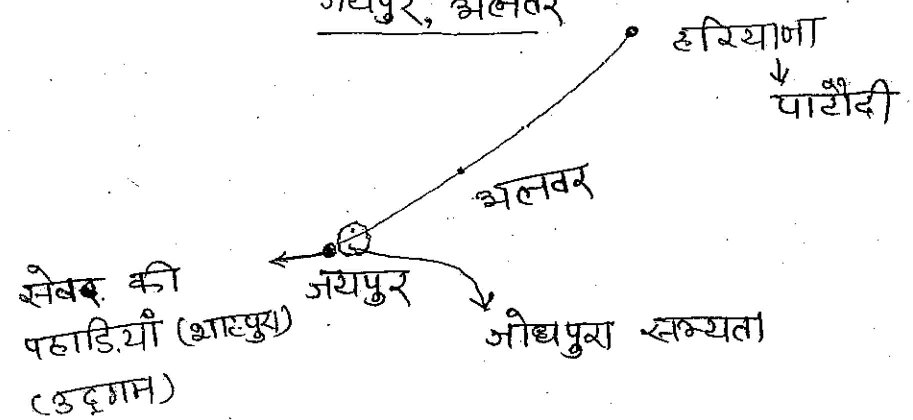

अलवर की मुख्य नदी है।

* **रूपारेल**

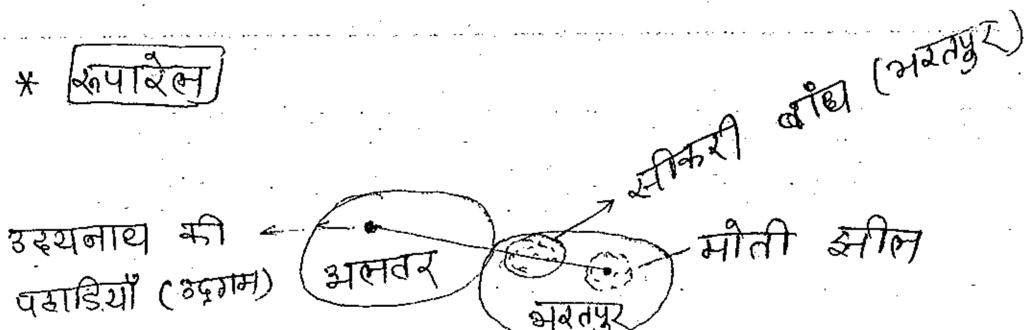

* मैंथा नदी →

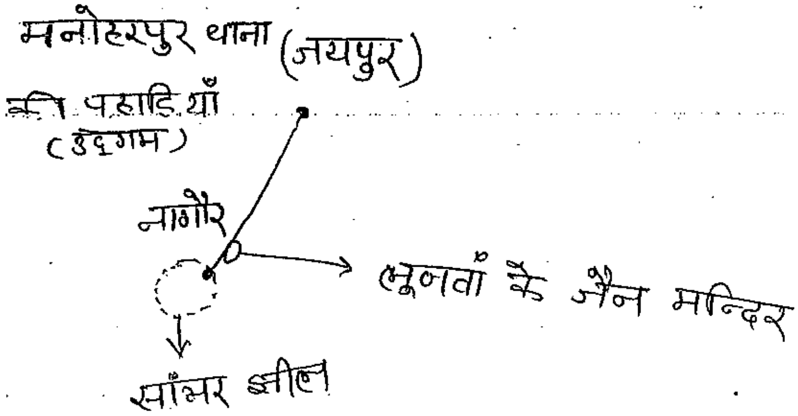
मनोहरपुर थाना (जयपुर)
की पहाड़ियाँ
(उद्गम)
नागौर
भूणवाँ के जैन मन्दिर
साँभर झील

* रूपनगढ

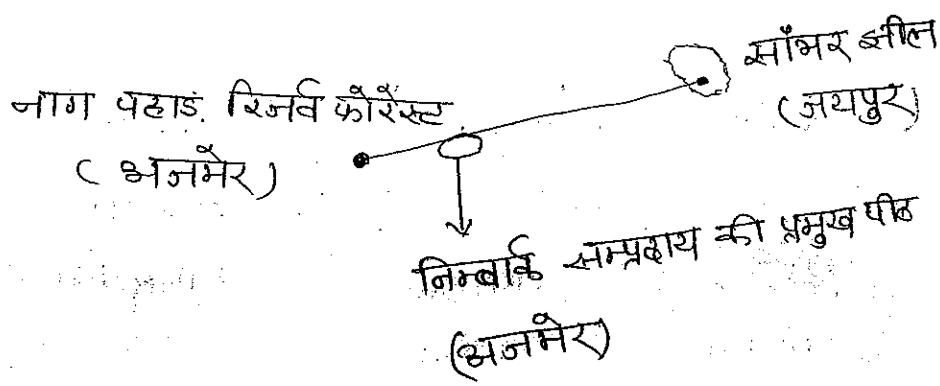
साँभर झील
(जयपुर)
नाग पहाड़ रिजर्व फॉरेस्ट
(अजमेर)
निम्बार्क सम्प्रदाय की प्रमुख पीठ
(अजमेर)

9/07/14

बंगाल की खाड़ी का अपवाह तंत्र : (22%)

Imp. 1. **चम्बल नदी** → कुल ल. → 966 k.m.

राजस्थान में ल. 135 k.m.

राजस्थान की सबसे लम्बी नदी

प्राचीन नाम → चर्मण्वती

उपनाम → कामधेनु

नित्यवाहिनी

बारहमासी

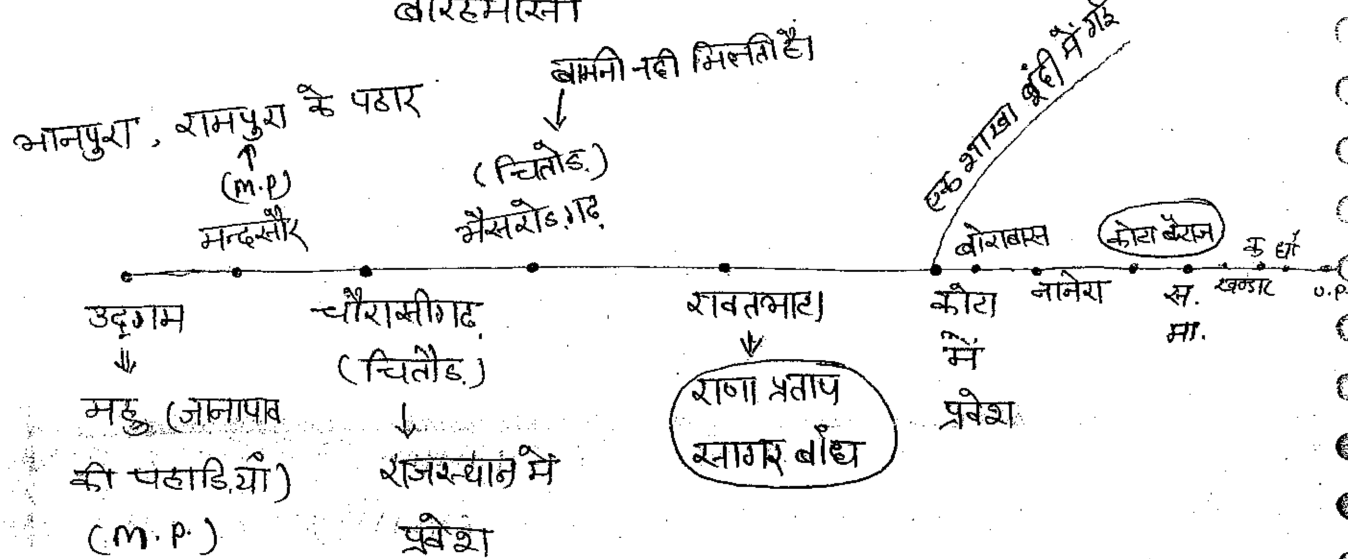

[23 mw की 5 विद्युत इकाई] विद्युत

← 23×5 = 115 मैगावाट

Imp → भानपुरा व रामपुरा पठार पर पहला बांध बना ⇒ (गांधी सागर बांध)

↓ इस नदी पर निर्मित सबसे बड़ा बांध

Imp, भैंसरोडगढ़ में (चूलिया जल प्रपात) बना है।

Imp, कोटा में बोराबास में → (जवाहर सागर बांध)

↓ 33 × 3 = 99 mw

राजस्थान का सबसे बड़ा अणु शक्ति केन्द्र (भारत का IInd)

Imp. रावतभाटा → (राणा प्रताप सागर बाँध) → 43 X 4 = 172 mw.

जानेरा (कोटा) → कालीसिंध नदी मिलती है।

Imp → कोटा शहर → (कोटा बैराज) → बाँयी नहर
दाँयी नहर → 8 लिफ्ट नहर

स. माधोपुर के पलिया नामक स्थान पर पार्वती नदी मिलती है।

very Imp खण्डार (तहसील) नामक स्थान पर रामेश्वर में बनास + सीप + चम्बल का संगम होता है →
त्रिवेणी संगम
⇓
रामेश्वर में

करौली, धौलपुर से बहते हुए U.P. में इटावा के मुरादगंज नामक स्थान पर यमुना नदी में मिल जाती है।

⇒ चम्बल नदी राज०, m.p. व U.P. के मध्य सीमा बनाती है।

Imp * भारत का सबसे बड़ा अणु शक्ति केन्द्र → तारापुर (महाराष्ट्र)

IInd → रावतभाटा

* चम्बल की सहायक नदियाँ ⇒
बामनी
कालीसिंध
पार्वती

बनास

सीप

मेज

मांगली

परवन

चन्द्रभागा

निवाज

घोड़ा पछाड़

× **कालीसिन्ध नदी** :

↓ m.p. से उद्गम

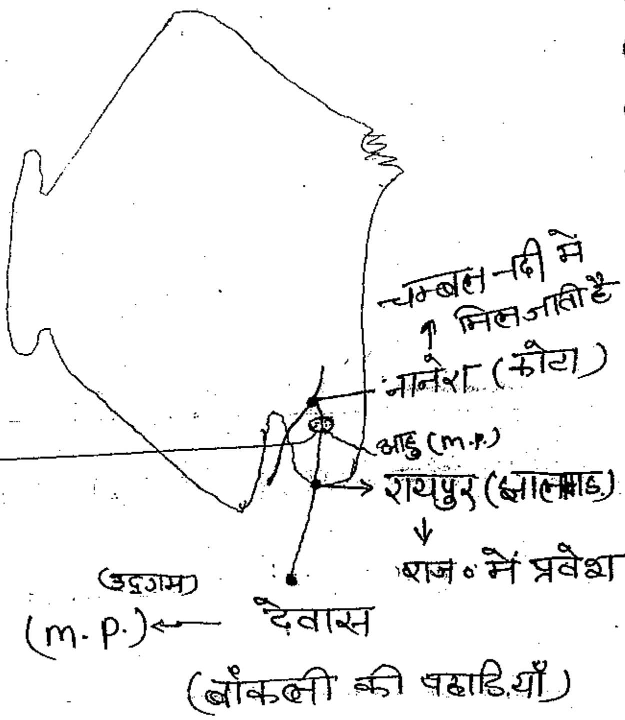

गागरोन (झालावाड़) में आहु नदी मिलती है।

– इस संगम को सामेला कहते हैं।

① यहाँ मीठे शाह की दरगाह

② पीपा की छतरी

– गागरोन का जलदुर्ग

Note ⇒ कालीसिन्ध नदी करौली की सपोटरा की नदी से निकलती है।

* **पार्वती नदी** ⇒ राज. की सबसे पूर्वी नदी ।

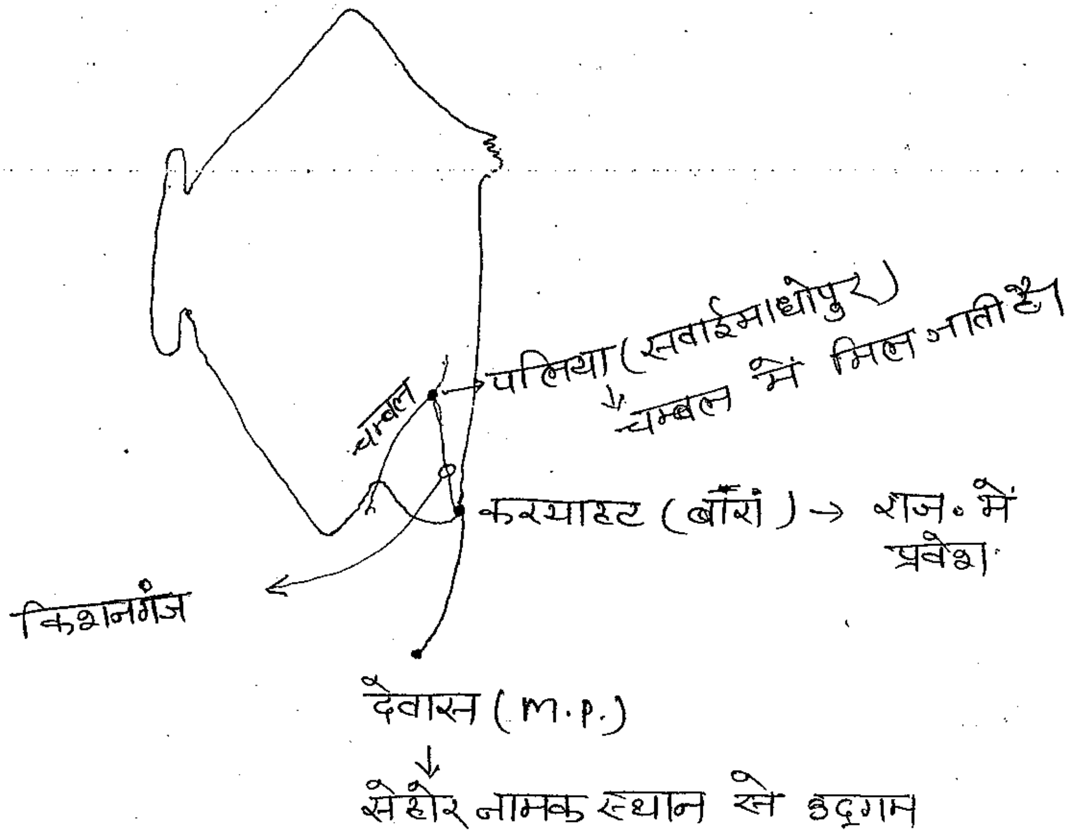

चम्बल नदी के बाद दूसरी नदी जो राज. व m.p. के मध्य सीमा बनाती है।

* **बनास नदी** ⇒ 480 k.m.

उपनाम → वर्णाशा
वशिष्ठी
वन की आशा

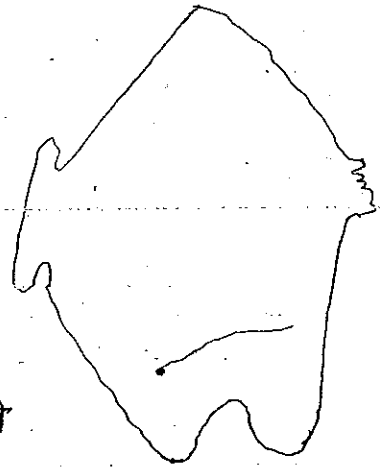

उद्गम ⇒
राजसमन्द में खमनौर की पहाड़ियों से

कोठारी नदी मिलती है। बीसलपुर बाँध

↓ ↑

माण्डलगढ़ बीसलपुर गाँव

↑ ↑

उदयपुर भीलवाड़ा टोंक

उद्गम — चित्तौड़गढ़ — भीलवाड़ा — सवाई माधोपुर

उद्गम
↓
राजसमन्द में खमनौर की पहाड़ियाँ

भीलवाड़ा
↓
बीगोद
↓
बेड़च, व मेनाल नदी मिलती है।

सवाई माधोपुर
↓
खण्डार तहसील
↓
रामेश्वर नामक स्थान पर चम्बल नदी से मिल जाती है।

बेड़च + मेनाल + बनास → बीगोद (भीलवाड़ा)
↓
त्रिवेणी संगम

- बीसलपुर बाँध के समीप खारी व डाई नदी बनास से मिलती है।

Note ⇒ पम्बा या पम्बन द्वीप मन्नार की खाड़ी में स्थित है, जिस पर रामेश्वरम् तीर्थ स्थल बना हुआ है।
↓
(तमिलनाडू)

* **बेडच नदी** →

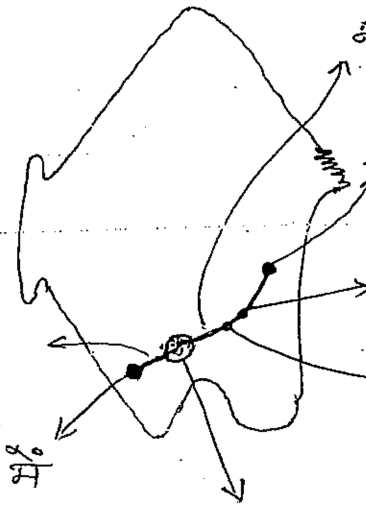

Imp. → गंभीरी नदी व बेडच नदी के संगम पर चित्तौड़गढ़ दुर्ग स्थित है।

* **कोठारी नदी** →

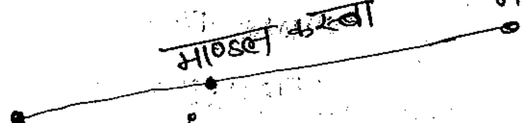

उद्गम → दिवेर पहाड़ी (राजसमंद)

↓

भीलवाड़ा में माण्डल कस्बे में पहुँचती है, यहाँ मेजा बाँध बना है।

भीलवाड़ा में कोठारी नदी के किनारे बागोर सभ्यता स्थित है।

→ 'माण्डलगढ़' में आकर यह नदी बनास नदी से मिल जाती है।

* खारी नदी ⇒ मीठे पानी की नदी है।

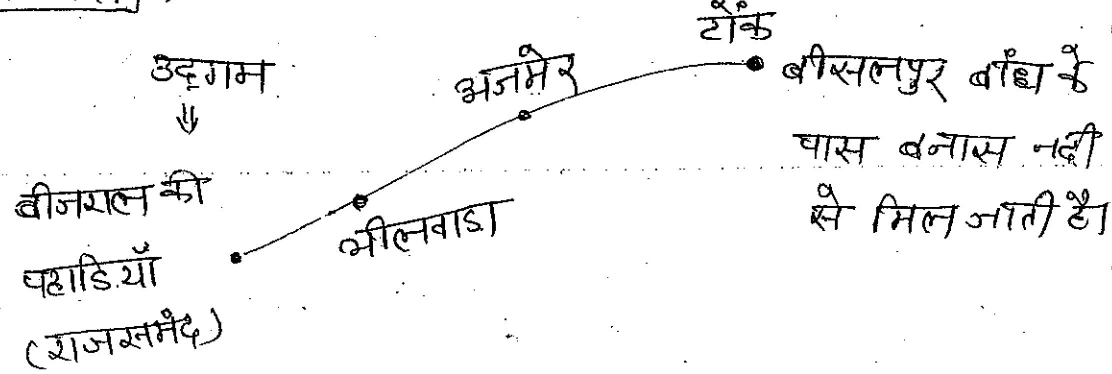

* बाणगंगा ⇒

अर्जुन की गंगा कहते हैं।

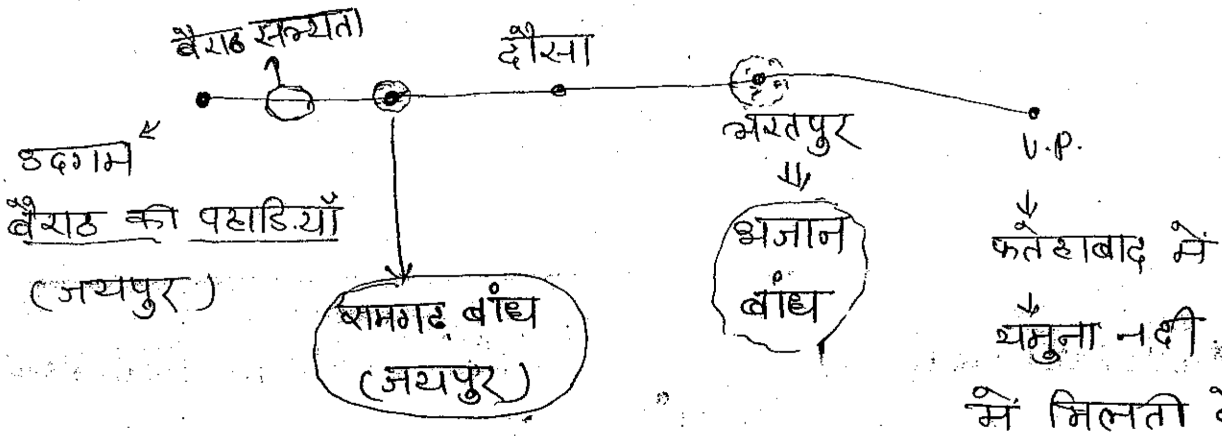

- इस नदी के किनारे बैराठ (जयपुर) में बैराठ सभ्यता है, जहाँ बौद्धों के अवशेष मिले हैं [प्राचीन बौद्ध संस्कृति का प्रमुख केन्द्र माना जाता है]।

* **पार्वती नदी** →

उद्‍गम → करौली
⇓
सपोटरा तहसील
⇓
नादौती की पहाड़ियों से

- इस नदी पर 'पाँचना बाँध' बना है। [करौली]
↓
मिट्टी से निर्मित राजस्थान का सबसे बड़ा बाँध है, जिसे अमेरिका की सहायता से बनाया गया है।

→ सहायक नदी →

- भैंसावट
- माची
- अटा
- भद्रावती
- बरखेड़ा

] — पाँचना बाँध के पास पार्वती नदी से मिलती है।

→ यह नदी U.P. में यमुना नदी मिलती है।

* अरब सागर का अपवाह तंत्र (17%)

Imp 1. माही नदी ⇒

कुल लं॰ ⇒ 516 K.M.

राज॰ में लं॰ ⇒ 171 K.M.

Imp उपनाम ⇒

वागड़ की गंगा

कांठल की गंगा

आदिवासियों की गंगा

दक्षिण राज॰ की जीवन रेखा

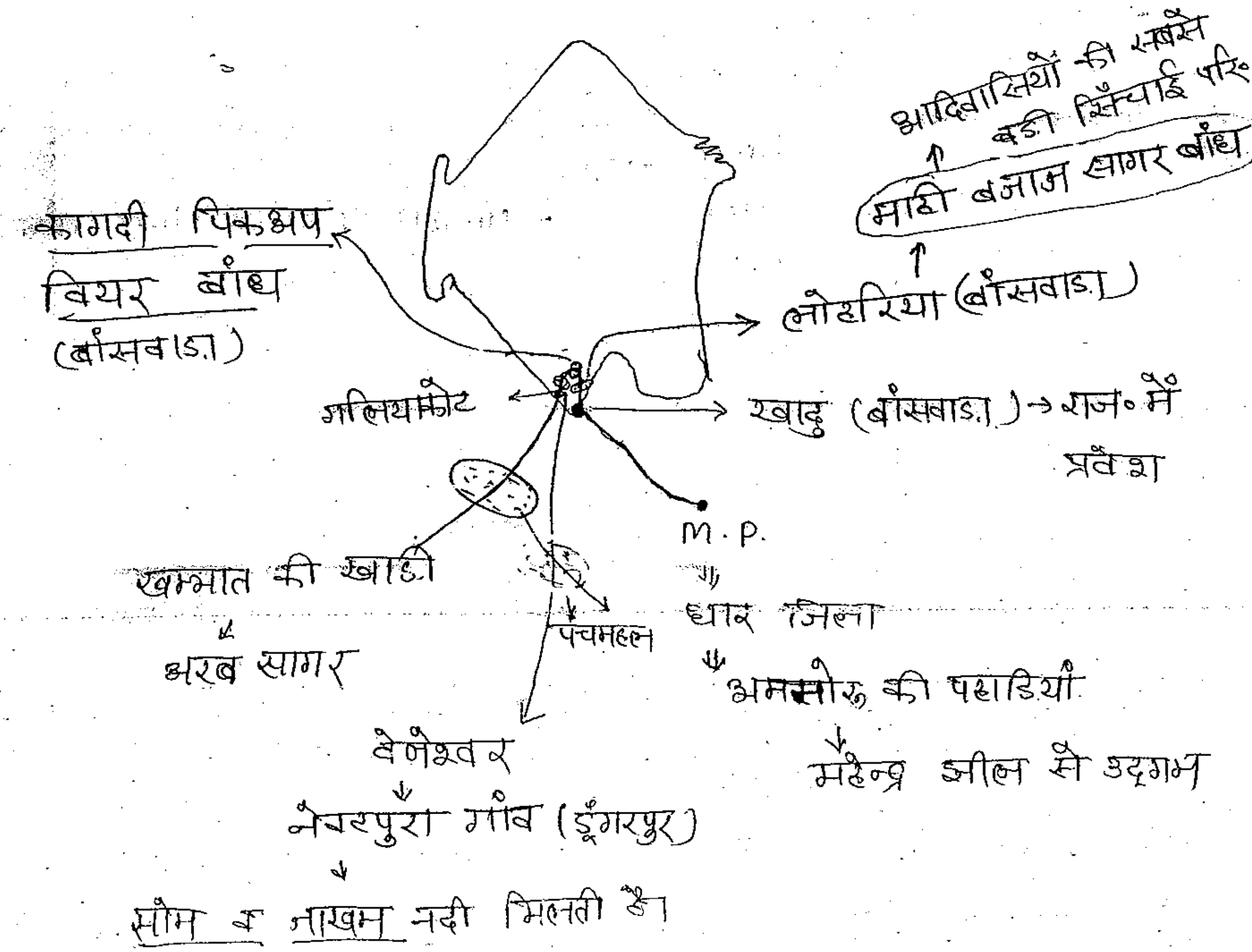

खार → हनुमानगढ़ में इन्दिरा गाँधी नहर प्रवेश करती है।
(स्थान)

सीताबाड़ी का मेला (हाड़ौती) बाराँ
↓
सहरिया जनजाति का कुंभ

— खम्भात की खाडी में गिरती है।

* **बेणेश्वर (डूंगरपुर)** → माघ पूर्णिमा के दिन मेला भरता है।
↓
आदिवासियों का कुंभ कहते है।

माही + सोम + जाखम → त्रिवेणी संगम

— बेणेश्वर के पास एक स्थान है → गलियाकोट (डूंगरपुर)
⇓
1. बोहरा सम्प्रदाय की प्रमुख पीठ
2. फखरूद्दीन शाह की दरगाह
3. रमकड़ा उद्योग
↓
(खिलौना उद्योग)

Imp → माही नदी कर्क रेखा को दो बार काटती है।
कांगो नदी भूमध्य रेखा " " " "
लिम्पोपो नदी मकर रेखा " " " "

→ पंचमहल → रामपुर (गुजरात में)
↓
कडाना बांध बना है।

→ इस नदी में गुजरात (55%) व राजस्थान (45%) की मिश्रित परियोजना है।

45 X 2 = 90

* **जाखम नदी**

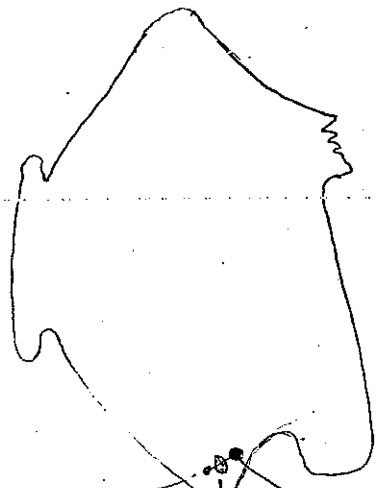

डूंगरपुर
↑
नेवटपुरा में माही नदी में मिल जाती है।

उद्गम → भंवरमाता की पहाड़ियाँ (प्रतापगढ़)

↓

जाखम बांध → 81 m. ऊँचा
↓
प्रतापगढ़ के जाखमिया नामक स्थान पर

↓

Imp. * राजस्थान का सबसे ऊँचा बांध

- प्रतापगढ़ में यह नदी सीतामाता अभ्यारण्य से गुजरती है।
↓
100-200मी ऊँचा तक उछलती है ← उड़नगिलहरी के लिए famous

Imp. राजस्थान का सबसे लम्बा बांध →
माही बजाज सागर बांध
⇓
ल० = 3109 मी०

- उड़नगिलहरी को स्थानीय भाषा में 'मझौवा' कहते है।

* **सोम नदी** :
उद्गम → बीछामेडा की पहाड़ियाँ (उदयपुर)
↓
नेवटपुरा गाँव (डूंगरपुर) में माही नदी से मिलती है।

- सोम नदी पर उदयपुर में सोम कागदार बाँध परि॰ स्थित है।

- इस नदी पर डूंगरपुर में सोम - कमला अम्बा परियोजना स्थित है।

* **लूनी नदी** ⇒

कुल लम्बाई ⇒ 495 K.m.

राजस्थान में ल॰ ⇒ 330/350 K.M.

अनापाजोबाजा

उपनाम ⇒

- लवणवती → प्राचीन नाम
- सागरमती → अजमेर में कहते हैं
- → साक्री नदी ↓ किशनगढ़ में कहते हैं।
- → रेल | नाडा → जालौर में कहते हैं।

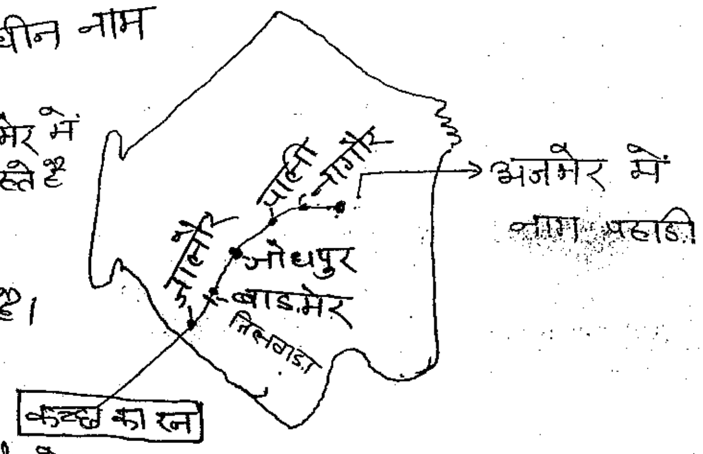

→ यह नदी नाग पहाड़ी से बाड़मेर के बालोतरा तक मीठे पानी की नदी है।

→ बालोतरा के बाद में खारे पानी हो जाता है।

→ प॰ राज॰ की सबसे लम्बी नदी।

→ बाड़मेर जिले में तिलवाड़ा नामक स्थान पर मल्लीनाथ का पशुमेला भरता है।

↓

थारपारकर गाय की नस्ल के लिए प्रसिद्ध है।

→ जवाई नदी → पाली में उद्गम होता है, जालौर से बहते हुए बाड़मेर में लूनी नदी में मिल जाती है।

Imp. इस नदी पर पाली ~~की~~ जिले की बाली तहसील के गोरिया गाँव में जवाई बाँध बना है, जिसे 'मारवाड़ का अमृत सरोवर' कहते हैं।

उम्मेद सागर जलाशय

→ ~~जगनिवास महल~~ के पास एक स्थान है 'बीजारी'
झील
↓
~~इस~~ यहाँ पर
नटनी का चबुतरा बना है।

→ राजस्थान का पहला शिल्पग्राम 'हवालाग्राम' इसी झील के पास है।

Imp – देश की सबसे पहली सौर ऊर्जा से चलने वाली नाव सर्वप्रथम इसी झील में चलाई गई।

– मानसिंह जब प्रताप के पास समझाने गया था, तब इस नदी की पाल पर रात्रि भोजन का आयोजन किया।

– उदयसिंह ने राजमहलों का निर्माण करवाया, जिसके पीछे यह झील होने के कारण इसे पिछोला झील कहते हैं।

– राजस्थान का दूसरा रोपवे →
इस झील पर दूध तलाई पर है।

– इंग्लैण्ड के फर्ग्युसन ने उदयपुर के राजमहलों की तुलना विण्डसर महलों से की है।

3. **फतेहसागर झील :**

उदयपुर

- उदयपुर के देवाली नामक स्थान के पास होने के कारण इसे देवाली तालाब कहते हैं।

→ 1678 A.D. में इस झील की नींव 'ड्यूक ऑफ कनाट' ने रखी, इसलिए इसे कनाट बाँध भी कहते हैं।

→ 1688 A.D. में महाराणा जयसिंह ने इस झील का निर्माण करवाया।

→ 1888 A.D. में इस झील का पुनर्निर्माण महाराणा फतेहसिंह ने करवाया, इसलिए इसे फतेहसागर झील कहते हैं।

Imp. इस झील में एक टापू है, जहाँ 'नेहरू उद्यान' स्थित है।

Imp. सुभाष उद्यान ⇒ अन्नासागर झील

Imp. — देश की सबसे पहली सौर वैधशाला की स्थापना इस झील में की गई। [1975 A.D.]

studygyan24

Dinesh Choudhary
Owner

Free Modal Paper

Vijendra Choudhary
Assistant Worker

Vacancy Name	Modal Paper Number	Modal Paper Provide Starting Date	Total Post
Delhi Police Head Constable (Clerk)	30	Starting On 17 Novemberr 2019	554
Rajasthan High Court	20	Starting On 20 Novemberr 2019	5000
Indian Navy SSR / MR 2020	30	Starting On 23 Novemberr 2019	2700
REET Level 1 & 2	35	ऑफिशल नोटिफिकेशन जारी होते ही	35000+
Rajasthan Police Constable & SI	50	Being Provided उपलब्ध कराये जा रहे है	5000
Rajasthan Patwar Modal Paper	50	Being Provided उपलब्ध कराये जा रहे है	3835
Railway Group D	30	Being Provided उपलब्ध कराये जा रहे है	1,03,769
Railway NTPC	30	Being Provided उपलब्ध कराये जा रहे है	35,277
BSTC & PTET	40	Starting On 01 January 2020	24,000+
Haryana Police	10	Being Provided उपलब्ध कराये जा रहे है	6000
RSSB Stenographer	15	ऑफिशल नोटिफिकेशन जारी होते ही	1085
RSSB Gram Sevak	15	ऑफिशल नोटिफिकेशन जारी होते ही	2140+

यदि आप भी मुफ्त मोडल पेपर प्राप्त करना चाहते है तो जिस Vacancy की तैयारी कर रहे हो उस Vacancy का नाम लिखकर WhatsApp No. 8949451550 पर मैसेज करे

www.studygyan24.com studygyan24 dinesh_choudhary09

→ इस झील के पास <u>सहेलियों की बाड़ी</u> (उद्यान) स्थित है।

4. राजसमन्द झील →

राजसमन्द

- राजसमन्द झील <u>कांकरोली रेल्वे स्टेशन</u> के पास है।

* राज प्रशस्ति ⇒ '<u>मेवाड़ का इतिहास</u>'
↓ इस झील के किनारे है।

<u>विश्व की सबसे बड़ी प्रशस्ति</u>

- <u>संस्कृत</u> भाषा में
- राजसिंह के दरबारी कवि <u>रणछोड़ भट्ट</u> तैलंग द्वारा प्रशस्ति लिखी गई। → काले रंग के संगमरमर के पत्थरों पर 25 शिलालेख

- इस झील का निर्माण राजसिंह ने <u>1662-72</u> A.D. में करवाया।

- इस झील के उतरी भाग को नौ-चौकी की पाल कहा जाता है।

- इस झील के किनारे <u>राजसमंद</u> <u>द्वारिकाधीश</u> का मन्दिर है।

- इस झील के पास बैबर माता का मन्दिर बना हुआ है।

* पुष्कर झील → अजमेर
→ क्रेटर झील का उदाहरण है, प्राकृतिक व प्राचीन है।
Imp राजस्थान की सबसे बड़ी प्राकृतिक मीठे पानी की झील।
- कार्तिक पूर्णिमा को मेला → राजस्थान का रंगीन मेला
- 52 घाट → परिहार शासकों द्वारा निर्माण
- 1911 में मैडम मैरी ने 1 घाट का निर्माण करवाया → गाँधी घाट

* आनासागर झील → अजमेर
- 1137 AD में अर्णोराज ने निर्माण करवाया।
- चन्द्रा नदी निकलती है।
- जहाँगीर ने यहाँ दौलत बाग बनवाया। वर्तमान में सुभाष उद्यान कहलाता है।
- झरने का निर्माण
- शाहजहाँ ने - 5, → 12 दरियों का निर्माण करवाया था

* फायसागर झील - अजमेर
* कोलायत झील - बीकानेर
* बालसमन्द → जोधपुर
* कायलाना → जोधपुर
* नक्की झील → माउण्ट आबू

खारे पानी की झील ⇒
सांभर
डीडवाना
कुचामन
डेगाना
नावा
लाल छापर
पचपदरा

राजस्थान का 1st रामसर स्थल → केवलादेव, IInd → साँभर झील

राजस्थान की नदी घाटी परियोजनाएं (सिंचाई)

सिंचाई :- वर्षा के अभाव मे भूमि को कृत्रिम तरीके से जल पिलाने की क्रिया को सिंचाई कहा जाता है।

→ राजस्थान एक कृषि प्रधान राज्य है यहां की लगभग 70% जनसंख्या कृषि पर आधारित है।

→ राजस्थान की भौगोलिक स्थितियों के आधार पर जैसे बलूई मिट्टी, वर्षा की कमी के कारण सिंचाई की अत्यधिक आवश्यकता होती है। क्योंकि राजस्थान मे भारत के औसत वर्षा का लगभग आधे से भी कम औसत वर्षा होती है। (57.6 cm.)

India - 117

सिंचाई की विशेषताएं :-

(i) सिंचाई से कृषि के उत्पादन मे वृद्धि होती है।

(ii) सिंचाई के द्वारा एक वर्ष मे एक से अधिक फसलों का उत्पादन किया जा सकता है।

(iii) सिंचाई कृषि को स्थायित्व प्रदान करती है लेकिन जिन स्थानो पर किसान वर्षा पर आधारित होते है उन स्थानों पर कृषि मानसून का जुआ बन जाती है।

(iv) जिन ~~स~~ स्थानो पर कृषि के कृत्रिम तरीके उपलब्ध नहीं होते उन स्थानो पर कृषि असीमित होती है ~~कि~~ लेकिन जिन स्थानो पर उपलब्ध होते है वहां पर कृषि अर्थव्यवस्था की विशेषता बन जाती है।

राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है। जिसका कुल क्षे० 342.52 लाख हैक्टेयर है।

1 हैक्टेयर = 100 Meter X 100 Meter = 10,000 M^2

→ इस कुल क्षेत्रफल का राजस्थान में कृषि योग्य क्षेत्र 260.01 (75%) लाख हैक्टेयर (75%) है जो कि देश के कुल कृषि क्षेत्र का 11% है।

→ इस कुल कृषि क्षेत्र में से शुद्ध सिंचित क्षेत्र 66.61 लाख हैक्टेयर एवं सकल सिंचित क्षेत्र 83.22 लाख हैक्टेयर है।

राजस्थान में सिंचाई के साधन

1. **कुए व नलकूप** :- 69.73%

→ राजस्थान में सबसे अधिक इन साधनों से सिंचाई जयपुर में होती है इसके अलावा अलवर, भरतपुर, करौली, दौसा, सवाईमाधोपुर आदि में होती है।

2. **नहरें** :- 29.60%

राजस्थान में सबसे अधिक नहरों से सिंचाई गंगानगर और हनुमानगढ़ में होती है। इसके अलावा चुरु, झुंझुनु, बीकानेर जैसलमेर, बाड़मेर, जालौर, जौधपुर आदि में नहरों के द्वारा सिंचाई होती है।

3. **तालाब** :- 0.69%

→ राजस्थान में सबसे अधिक तालाबों से सिंचाई भीलवाड़ा जिले मे होती है इसके अलावा दक्षिणी राजस्थान में भी होती है।

→ नदी घाटी परियोजनाएं चार प्रकार की होती है।

(a) **बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजना** :-

वे परियोजनाएं जिनसे सिंचाई, पेयजल एवं विद्युत आदि की पूर्ति करवायी जाती हैं। बहुउद्देश्य परियोजनाएं कहलाती है।

जैसे

(i) भाखड़ा नाँगल परियोजना

(ii) व्यास परियोजना

(iii) चम्बल - घाटी परियोजना

(iv) माही परियोजना

(b) **वृहद परियोजनाएं** :- वे परियोजनाएं जिनका सिंचाई क्षेत्र 10,000 हैक्टेयर से अधिक हो।

जैसे- - गंग नहर

- इंदिरा गांधी नहर
- राजीव गांधी सिद्धमुख नोहर
- रत्न पुरवा
- नर्मदा
- जाखम
- बीसलपुर

- ईशरदा बांध (सवाईमाधोपुर)

(c) **मध्यम परियोजनाएं** :- वे परियोजनाएं जिनका कृषि योग्य क्षेत्र 2,000 से 10,000 हैक्टेयर तक हो।

जैसे- - सावन-भादो
- विलास
- सोम- कागदार
- सोम- कमला - अम्बा

(d) **लघु परियोजनाएं** :- वे परियोजनाएं जिनका कृषि योग्य क्षेत्र 2000 हैक्टेयर से कम हो।

a) बहुउद्देश्य नदी घाटी परियोजना ⇒

(i) **भाखड़ा - नांगल परियोजना** :- यह देश की सबसे बड़ी नदी घाटी बहुउद्देश्य नदी घाटी परियोजना है जो कि राजस्थान, पंजाब, हरियाणा की मिश्रित परियोजना है। इस परियोजना के निर्माण का सर्वप्रथम विचार 1908 में लुईस डेन के मस्तिष्क में आया।

→ लेकिन स्वतंत्रता के बाद मार्च 1948 में इसका निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ।

→ इस परियोजना का निर्माण दो चरणों में हुआ जिसमे दो बांध बनाये गये।

(i) भांखड़ा बांध :→ यह देश का द्वितीय सबसे ऊंचा बांध है जिसकी आधारशिला 17 NOV. 1955 को देश के प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के द्वारा रखी गयी।

→ जो कि ~~Oct~~ 1960 में अमेरिकी बांध निर्माता हार्वे स्लोकेम के निर्देशन में बनकर तैयार हुआ। जिसे 22 Oct 1963 को जवाहर लाल नेहरू ने राष्ट्र को समर्पित कर दिया।

→ इस बांध का निर्माण सतलज नदी पर हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जिले में किया गया है। इस बांध की ऊंचाई 225.55 Meter, लम्बाई - 518.16 Meter & चौड़ाई - 9.14 Meter है

→ इस बांध के पिछे के जलाशय को गोविन्द सागर झील कहा जाता है जो कि भारत की ~~सबसे~~ बड़ी ~~के~~ मीठे पानी की कृत्रिम झील है।

(India का सबसे ऊंचा - **टिहरी** बांध - 261 meter)

→ इस बांध के दोनो किनारो पर विद्युत संयंत्र स्थापित किये गये है जिनकी कुल विद्युत क्षमता

→ 108 × 5 = 540 Mw

→ 157 × 5 = 785 Mw है।

(ii) नांगल बांध :- यह बांध पंजाब के रोपण जिले मे स्थित है। सतलज नदी पर

→ इस बांध की लम्बाई ~~3~~ 40.8 Meter & ऊंचाई 29 Meter है इस बांध पर दो विद्युत संयंत्र लगाये गये है

(i) गंगेवाल - 83.58 Mw

(ii) कोटला - 84.57 Mw

इस बांध से सिंचाई के लिए दो नहरे निकली गयी है।

* बारी - बिस्ट दोआब

* भांखड़ा नहर

NOTE भांखड़ा नांगल समझौता 1959 के अनुसार राजस्थान को इसका 15.22 % हिस्सा प्राप्त होता है।

→ इस परियोजना की कुल विद्युत क्षमता 1493 Mw एवं सिंचाई क्षमता 14.6 लाख हैक्टेयर है जिसमे से राजस्थान को 2.3 लाख हैक्टेयर पर सिंचाई उपलब्ध होती है एवं 227.32 Mw विद्युत प्राप्त होती है।

NOTE राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में इस परियोजना से सिंचाई सुविधा एवं सीकर, चुरु, झुंझुनु, हनुमानगढ़, गंगानगर एवं बीकानेर को पेयजल की आपूर्ति करवायी जाती है।

* 2) **चम्बल नदी घाटी परियोजना** :- यह परियोजना राजस्थान और M.P. की मिश्रित परियोजना है। जिसमें राजस्थान और M.P. का 50-50 % हिस्सा है।

इस परियोजना का निर्माण 3 चरणों में हुआ है।

(i) प्रथम चरण :- 1953-60 A.D.

Imp. इस चरण मे दो बांध बनाये गये।

* गांधी सागर
* कोटा बैराज

(ii) दूसरा चरण :- 1960-70 A.D.

Imp. इस चरण मे 'राणा प्रताप सागर' बांध बनाया गया।

(iii) तीसरा चरण :- 1962-73 A.D.

Imp. इस चरण मे 'जवाहर सागर बांध' बनाया गया।

(i) I चरण :- 1953-1960 A.D.

a) गांधी सागर बांध :- यह चम्बल नदी पर निर्मित सबसे पहला एवं सबसे बड़ा बांध है।

→ इस बांध का निर्माण 1960 A.D. को पूरा हुआ। यह बांध M.P के मंदसौर जिले में भानपुरा तहसील मे चम्बल नदी पर स्थित है। इस बांध पर 23 MW की 5 विद्युत ईकाईयां लगाई गई है जिससे कुल 115 MW विद्युत का उत्पादन होता है।

b) <u>कोटा बैराज</u> :- यह चम्बल नदी पर निर्मित <u>III बांध</u> है

→ लेकिन <u>राजस्थान</u> में चम्बल नदी पर निर्मित <u>1 बांध</u> है

→ इस बांध से विद्युत का उत्पादन नहीं होता यह <u>केवल</u> <u>सिंचाई</u> के लिए निर्मित किया गया है।

इससे सिंचाई के लिए दो नहरे निकाली गई है।

(i) दायी नहर (ii) बायी नहर

(i) दायी नहर :- इससे <u>राजस्थान</u> और <u>M.P</u> दोनो मे सिंचाई होती है।

→ राजस्थान मे इस नहर से <u>8 लिफ्ट</u> नहर निकाली गयी है। जिनमें से <u>दो</u> <u>कोटा मे</u> सिंचाई करती है एवं <u>6</u> <u>बारां</u> मे सिंचाई करती है।

(i) जालीपुरा
(ii) टीगोढ } - कोटा
(iii) अन्ता - अंता लिफ्ट नहर
(iv) अंता - अंता लिफ्ट Minor
(v) सोरखण्ड
(vi) पंचेल
(vii) गणेशगंज
(viii) कचारी

NOTE इन नहरो से राजस्थान के कुल 15633 हैक्टेयर क्षेत्र पर सिंचाई होती है एवं M.P के 1.70 लाख हैक्टेयर क्षेत्र पर सिंचाई होती है।

(ii) बायी नहर :- इससे केवल राजस्थान मे सिंचाई होती है

II चरण :- 1960-70 A.D.

राणा प्रताप सागर बांध :-

यह चम्बल नदी पर निर्मित चित्तौड़ के रावत भाटा नामक स्थान पर स्थित है

→ इस बांध पर 43 MW की 4 विद्युत इकाईयां लगाई है जिनसे कुल विद्युत का उत्पादन 172 MW होता है।

→ इस बांध की लम्बाई 110 Meter & ऊंचाई 36 Meter है। इस बांध से 1.2 लाख हैक्टेयर क्षेत्र पर सिंचाई की जाती है।

III चरण :- 1962-1973 A.D.

जवाहर सागर बांध

→ यह बांध कोटा के बोराबास नामक स्थान पर चम्बल नदी पर निर्मित है।

→ इस बांध पर 33 MW की 3 विद्युत इकाईयां लगी हुई है जिनसे कुल विद्युत का उत्पादन 99 MW होता है।

NOTE चम्बल नदी पर कुल विद्युत का उत्पादन 386 Mw होता है एवं 4.58 लाख हैक्टेयर क्षेत्र पर सिंचाई सुविधा उपलब्ध होती है।

जिसमें से राजस्थान को 50% हिस्सा प्राप्त होता है।

3.> माही नदी घाटी परियोजना :-

यह राजस्थान एवं गुजरात की मिश्रित परियोजना है जिसमें राजस्थान और गुजरात का अनुपात 45 : 55 है।

इस नदी पर तीन बाँध स्थित है

(i) माही बजाज सागर बाँध } - बांसवाड़ा
(ii) कागदी पिकअप वीयर बाँध }

(iii) कडाना बाँध - पंचमहल - गुजरात
↳ रामपुर नामक स्थान पर

→ इस नदी घाटी परियोजना से कुल विद्युत का उत्पादन 140 Mw होता है एवं इससे 8.8 लाख हैक्टेयर क्षेत्र पर सिंचाई सुविधा उपलब्ध होती है।

4.> व्यास नदी घाटी परियोजना :-

→ यह राजस्थान, पंजाब और हरियाणा की मिश्रित परियोजना है जिसका निर्माण दो चरणों में हुआ है

प्रथम चरण :-

(i) पंडोह बांध :→ यह बांध हिमाचल प्रदेश के मण्डी कस्बे में व्यास नदी पर स्थित है। इस बांध पर 165 MW की 6 विद्युत इकाईयां देहर नामक स्थान पर स्थापित की गई हैं जिनसे कुल विद्युत का उत्पादन 990 MW होता है।

→ इस बांध से एक हाइडल चैनल नहर निकाली गई है।

NOTE राजस्थान को ~~पंह~~ पंडोह बांध से 20% एवं पोंग बांध से 59% लाभ प्राप्त होता है।

II चरण

(ii) पोंग बांध :- यह बांध हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में व्यास नदी पर स्थित है

→ इस बांध पर 66 MW की 6 विद्युत इकाई लगी हुई है जिनसे कुल विद्युत का उत्पादन 396 MW होता है।

* शीतकाल में इन्दिरा गांधी नहर को पोंग बांध से पानी की आपूर्ति करायी जाती है।

→ इस चरण मे हाइडल चैनल की बग्गी बाईपास नहर पर 20MW की 2 विद्युत इकाईयां स्थापित की गई है जिनसे कुल 40MW का उत्पादन होता है।

व्यास नदी जल विवाद :-

व्यास नदी के जल विवाद को शांत करने के लिए 1986 A.D. मे अंतर्राज्यीय जल विवाद अधिनियम लागू किया गया। जिसमे ईराडी की अध्यक्षता मे एक इराडी आयोग गठित किया गया। इस आयोग ने अपनी रिपोर्ट मई 1987 A.D. मे प्रस्तुत की जिसके अनुसार पंजाब को 50 लाख एकड़ ~~फीट~~ फीट पर हरियाणा को 38 लाख 30 हजार एकड़ फीट पर एवं राजस्थान को 86 लाख एकड़ फीट पर आवंटित किया गया है।

b) वृहद परियोजनाएं :-

——— Lift नहर

* राजस्थान नहर :-

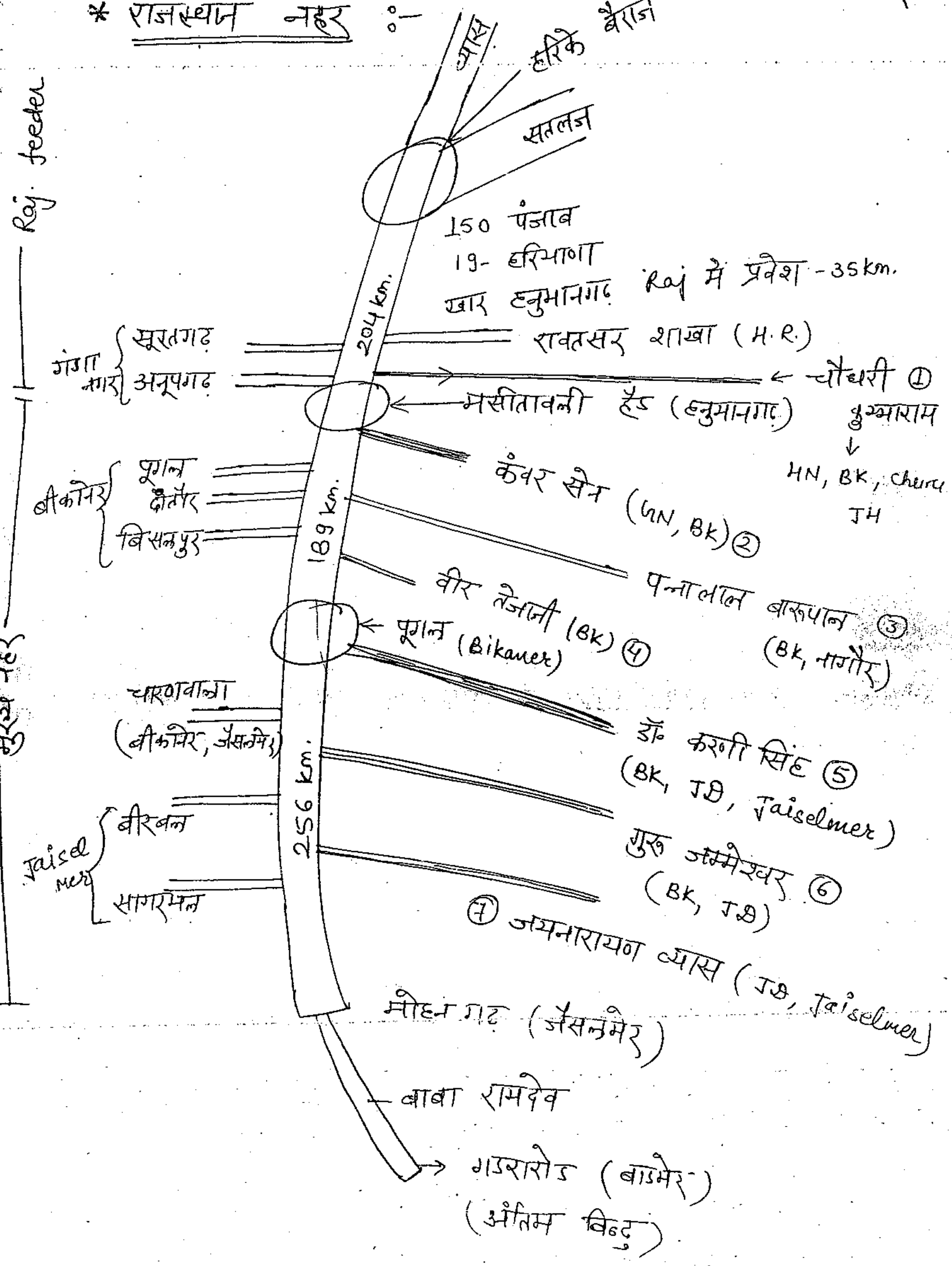

→ राजस्थान के मरु प्रदेश में हिमालय के पानी को लाकर हरा-भरा करने के लिए इस नहर का प्रारुप बीकानेर राज्य के सिंचाई इंजीनीयर कंवर सेन के द्वारा अपने ~~लि~~ लेख 'बीकानेर राज्य में पानी की आवश्यकता (1948)' में तैयार किया।

→ राजस्थान के मरु प्रदेश की स्थितियों को देखते हुए केन्द्र सरकार ने इसके प्रारुप को मंजूरी दे दी एवं सर्वप्रथम 31 March 1958 को ~~तत्~~ तत्कालीन केन्द्रीय गृह मंत्री श्री गोविन्द वल्लभ पन्त के द्वारा इसकी आधारशिला रखी गई।

*→ इस नहर को पंजाब के फिरोजपुर जिले में व्यास और सतलज नदियों के संगम पर स्थित हरिके बैराज से निकाला गया है।

→ इस नहर की कुल लम्बाई 649 km. है। इस नहर की गहराई 21 feet & इसके तल की चौड़ाई 134 feet है। इस नहर का निर्माण दो चरणों में हुआ है।

1. प्रथम चरण :- प्रथम चरण मे राजस्थान फीडर एवं मुख्य नहर का निर्माण किया गया

I चरण

- राजस्थान फीडर
  - 204 Km.
    - 150 km. पंजाब
    - 19 km. हरियाणा
    - 35 km. राजस्थान
- मुख्य नहर
  - 189 Km.
  - मसीता वाली हैड (हनुमानगढ़) से पुगल (बीकानेर) तक स्थित है

→ राजस्थान फीडर हरिके बैराज से लेकर मसीता वाली हैड हनुमानगढ़ तक स्थित है।

→ प्रथम चरण की मुख्य नहर मसीता वाली हैड हनुमानगढ़ से पुगल बीकानेर तक स्थित है।

2. द्वितीय चरण :-

दूसरे चरण मे नहर का निर्माण पुगल (बीकानेर) से लेकर मोहनगढ़ (जैसलमेर) तक किया गया। जिसकी कुल लम्बाई 256 Km. है

इस नहर से सिंचाई के लिए सर्वप्रथम 9 शाखाओ का निर्माण किया गया।

जिनमें से 1 शाखा नहर के बायी ओर से एवं आठ शाखाएं नहर के दायीं ओर से निकाली गई है।

(i) रावतसर शाखा – हनुमान गढ़ – बायीं शाखा

(ii) सूरतगढ़ – गंगानगर

(iii) अनूपगढ़ – गंगानगर

(iv) पूगल

(v) दंतौर

(vi) बीरसलपुर

(iv)–(vi) – Bikaner

(vii) चारणवाला – Bikaner + Jaiselmer

(viii) बीरबल

(ix) सागर मल

(viii)–(ix) – Jaiselmer

(ii)–(ix) दायीं शाखा

→ इस नहर से सात लिफ्ट परियोजनाएं निकाली गयी है। जिनमें से प्रथम चरण में एक लिफ्ट नहर एवं दूसरे चरण में 6 लिफ्ट नहरों का निर्माण किया गया है।

→ लिफ्ट नहरों का निर्माण कार्य <u>1968</u> में प्रारम्भ किया गया और सबसे पहले <u>लूणकरणसर</u> लिफ्ट नहर परियोजना का निर्माण किया गया जिसका निर्माण <u>1976</u> में पूर्ण हुआ।

नया नाम	पुराना नाम	जिले
(i) चौधरी कुंभा राम	गंधेली साहबा	हनुमानगढ़, बीकानेर, चुरू, झुंझुनु
(ii) कवरसेन (1st)	लूणकरणसर	गंगानगर, बीकानेर
(iii) पन्ना लाल बारूपाल	गजनेर	बीकानेर, नागौर
(iv) वीर तेजाजी	बांगड़सर (ग्राम पंचायत)	बीकानेर
(v) डॉ. करणी सिंह	कोलायत (तह.)	बीकानेर, जोधपुर, जैसलमेर
(vi) गुरु जम्भेश्वर	फलौदी	जोधपुर
(vii) जय नारायण व्यास	पोकरण	जोधपुर, जैसलमेर

NOTE राजस्थान के उत्तरी व पश्चिमी जिलों (9 जिले) को इस नहर परियोजना से लाभ प्राप्त होगा।

गंगानगर, हनुमानगढ़, चुरू, झुंझुनु, बीकानेर, जैसलमेर, जोधपुर बाड़मेर, नागौर

→ इस नहर परियोजना से अनुमानतः 37 लाख टन उत्पादन होगा। जिससे लगभग 1750 करोड़ रुपये की आय होगी एवं इस परियोजना से 19.63 लाख हैक्टेयर क्षेत्र पर सिंचाई सुविधा उपलब्ध होगी।

इस परियोजना से राजस्थान के 29 कस्बे एवं 3461 गांव लाभान्वित होंगे।

नहर के द्वारा वर्तमान समय में 16.17 लाख हैक्टेयर क्षेत्र पर सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है।

इन्दिरा गांधी नहर की प्रमुख पेयजल परियोजनाएं

1. कंवरसेन पेयजल परियोजना :- यह राजस्थान की सबसे लम्बी लिफ्ट नहर परियोजना है जिसकी कुल लम्बाई 151.64km है। इस परियोजना से गंगानगर एवं बीकानेर के 228 गांव को पेयजल की पूर्ति करवायी जाती है। एवं बीकानेर के लूणकरणसर तहसील को सिंचाई सुविधा उपलब्ध होती है।

2. राजीव गांधी लिफ्ट कनाल :- इस लिफ्ट कनाल से जोधपुर जिले के 158 गांव को पेयजल की पूर्ति करवायी जाती है एवं इस कनाल के द्वारा जोधपुर की प्रमुख झील कायलाना झील को पानी की पूर्ति करवायी जाती है जो कि राजस्थान की एकमात्र ऐसी झील है जिसमे इंदिरा गांधी नहर का पानी पहुंचता है।

3. आपणी योजना :- इस योजना से राजस्थान के हनुमानगढ़ व चुरु जिले के 370 गांव को पेयजल की पूर्ति करवायी जाती है। इसका निर्माण जापान की कम्पनी KFN

कम्पनी KFW की सहायता से किया गया है।

इंदिरा गांधी नहर परियोजना के लाभ :-

(i) राजस्थान के पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश में इस परियोजना से कृषि के उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि हुई है जिससे यहां प्रतिवर्ष 1450 करोड़ रुपये की आय होती है।

(ii) इस नहर परियोजना से मरुस्थलीय प्रदेश में वृक्षारोपण को बढ़ावा मिला है जिससे इस प्रदेश में अधिक हरियाली के कारण वर्षा की मात्रा में वृद्धि हुई है एवं भूमि का जल स्तर ऊंचा उठा है।

(iii) इस नहर परियोजना से सीमा सुरक्षा बल एवं भारतीय सेना को पेयजल की आपूर्ति करवायी जाती है इसी कारण कहा जा सकता है कि अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा में इस नहर का योगदान है।

(iv) इस नहर परियोजना से चारागाह एवं घास के मैदानों में वृद्धि हुई है जिससे राजस्थान में पशुपालन में वृद्धि हुई है।

(v) कृषि के अधिक उत्पादन से प्रति गांव एवं मंडियों में रोजगार के साधन उपलब्ध हुए हैं जिससे लोगो की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है।

(vi) इस नहर परियोजना से राजस्थान में औद्योगिक विकास को बढ़ावा मिला है।

(vii) सामाजिक एवं आर्थिक उन्नति हुई है।

(viii) पर्यटन का अत्यधिक विकास हुआ है।

(ix) इस परियोजना से राजस्थान में मछलीपालन, विद्युत आदि का विकास हुआ है।

इन्दिरा गांधी नहर की प्रमुख वि. समस्याएं :-

1. <u>सेम की समस्या</u> :- किसानों के द्वारा अत्यधिक सिंचाई एवं जल के अत्यधिक रिसाव के कारण नहर के आस-पास का क्षेत्र दलदली होता जा रहा है। जिसे सेम की समस्या कहा जाता है। इससे अत्यधिक मात्रा में भूमि बंजर होती जा रही है।

सेम समस्या के कारण

(i) समुचित जल व्यवस्था ना होने के कारण किसानों के द्वारा अत्यधिक सिंचाई का प्रयोग किया जाता है।

(ii) भूमि की लवणता के कारण जल का रिसाव जमीन के अंदर तक पूर्णतया नहीं हो पाता।

(iii) कम गहराई पर कठोर चट्टानों का पाया जाना।

(iv) नहर के आस-पास के क्षेत्र में पानी को निकालने के लिए

प्राकृतिक निकास की कमी ।

2 किसानों के द्वारा अत्यधिक सिंचाई के कारण इस क्षेत्र की भूमि लवणीय एवं क्षारीय होती जा रही है। इस समस्या के समाधान के लिए जिप्सम, हरी खाद, एवं चूने का उपयोग किया जाना चाहिए।

3. नहर के आसपास के क्षेत्र में पानी का प्राकृतिक निकास ना होने के कारण इन दलदली क्षेत्रों में अत्यधिक मच्छरों की उत्पत्ति हुई है जिससे इस क्षेत्र में मलेरिया जैसी बीमारियां काफी फैल रही है।

4. Dr. J.P. जाट एवं R.K गुर्जर ने शोध करके बताया है कि इस क्षेत्र में न्यून (निम्न) वायुदाब का केन्द्र मानसून के अनुकूल था - लेकिन अत्यधिक हरियाली के कारण यह उच्च वायुदाब में परिवर्तित हो रहा है जिससे मानसून पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

Imp:- 5. तीव्र जलवायु परिवर्तन एवं किसानों के द्वारा सेवण घास के मैदानों को खेती में परिवर्तित कर दिया है जिससे यहां वन्य जीव लुप्त होने के कगार पर है।

NOTE 31 Oct. 1984 को इंदिरा गांधी की मृत्यु के बाद 2 Nov. 1984 को राजस्थान नहर का नाम बदलकर इंदिरा गांधी नहर परियोजना कर दिया गया।

2. गंगा नहर :-

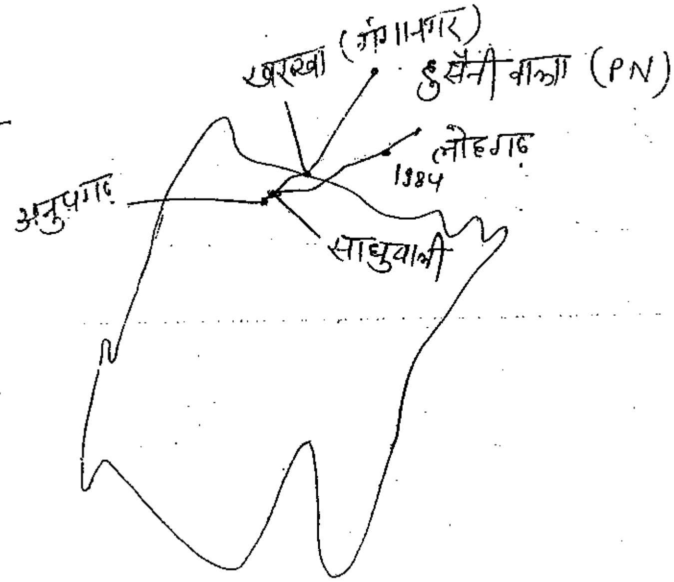

पंजाब - 112 km.
राज. - 17 km.

→ यह राजस्थान मे प्रथम वृहद सिंचाई परियोजना है जिसका निर्माण बीकानेर के राजा गंगा सिंह के द्वारा 1927 में करवाया गया।

→ 4 sept. 1920 को बीकानेर, बहावलपुर एवं पंजाब रियासतों के मध्य एक समझौता हुआ। जिसमे राजस्थान के लिए 0.33 MAF जल प्राप्त हुआ। जिसका उपयोग करने के लिए गंगा सिंह के द्वारा 5 sept. 1921 को फिरोजपुर हैड वर्क्स पर इस नहर की आधारशिला रखी गई।

→ इस नहर को पंजाब के फिरोजपुर जिले मे हुसैनीवाला नामक स्थान पर सतलज नदी से निकाला गया है। इस नहर का राजस्थान मे प्रवेश खखा नामक स्थान पर गंगानगर जिले मे होता है।

→ खखा से यह नहर रायसीन नगर, पदमपुर, जोरावर होते हुए अनुपगढ़ तक गई है।

→ इस नहर की कुल लम्बाई 129 km. है जिसमे से 112 km. पंजाब में एवं 17 km. राजस्थान में है।

→ इस नहर की वितरिकाओ की कुल लम्बाई 1280 km. है।

* राजस्थान में इसकी चार शाखाएं है ⇒

(i) लक्ष्मी नारायण जी

(ii) करणी जी

(iii) लालगढ़

(iv) समीजा

→ गंगनहर की जर्जर हालत को सुधारने के लिए 1984 में 80 km. लम्बी गंगनहर लिंक चैनल का निर्माण किया गया जिसका मुख्य उद्देश्य गंगानगर जिले को पानी की पूर्ति करवाना था।

गंग नहर लिंक चैनल :- इसे हरियाणा के लोहगढ़ (↓ सतलज नदी से) नामक स्थान पर निकाला गया है एवं गंगनहर से इसे साधुवाली नामक स्थान पर गंगानगर में जोड़ा गया है।

NOTE गंगनहर परियोजना से राजस्थान के 3.8 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल पर सिंचाई सुविधा उपलब्ध करवायी जाती है।

Imp
→ 31 Oct. 1927 को गंग नहर का उद्घाटन लॉर्ड इरविन के द्वारा किया गया।

3. **नर्मदा नहर परियोजना** :- राजस्थान का इस नहर परियोजना में 0.5 MAF हिस्सा है। इस नहर को गुजरात के सरदार सरोवर बांध से निकाला गया है जिसकी कुल लम्बाई 532 km. है। जिसमें से राजस्थान में इसकी लम्बाई 74 km. है।

→ इस नहर का पानी राजस्थान में सबसे पहले सीलू गांव जालोर में 18 March 2008 को पहुंच गया। लेकिन 27 March 2008 A.D. को जालोर के भानपुर गांव में एक समारोह के दौरान इस नहर के पानी को राजस्थान में प्रवेश करवाया गया। एवं अप्रेल 2008 तक इसका पानी गांधव कला बाड़मेर तक पहुंच गया।

→ इस नहर परियोजना से जालोर एवं बाड़मेर के 233 गांव को 2.46 लाख हैक्टेयर क्षेत्र पर सिंचाई सुविधा उपलब्ध करायी जाती है। एवं जालोर एवं बाड़मेर के 1336 गांव को पेयजल की पूर्ति करवायी जाती है।

4. **राजीव गांधी सिद्धमुख व नोहर परियोजना** :-

1982 के समझौते के अनुसार रावी-व्यास नदियों के जल का उपयोग करने के लिए इस नहर का निर्माण यूरोपीयन आर्थिक समुदाय की सहायता से किया गया। इस नहर का उद्घाटन 5 Oct. 1989 को हनुमानगढ़ के

भिनारी नामक स्थान पर राजीव गांधी के द्वारा उद्घाटन किया गया। इस नहर परियोजना से राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले की नोहर व भादरा तहसील एवं चुरू जिले की राजगढ़ तहसील के ~~1 लाख~~ 1,11,458 ~~लाख~~ हैक्टेयर क्षेत्र पर सिंचाई सुविधा उपलब्ध होती है।

5. **सिद्धमुख रतनपुरवा नहर परियोजना** :- इस परियोजना का निर्माण भी सिद्धमुख व नोहर परियोजना के साथ प्रस्तावित था लेकिन भारत में परमाणु परीक्षण की गतिविधियों को देखकर यूरोपीयन आर्थिक समुदाय ने सहायता देना बंद कर दिया इसी कारण इस परियोजना का निर्माण नाबार्ड की सहायता से 1999 में प्रारम्भ किया गया।

→ इस परियोजना से हनुमानगढ़ व चुरू जिले के 18350 हैक्टेयर क्षेत्र पर सिंचाई एवं हनुमानगढ़ जिले के 25 गांव व चुरू जिले के ~~2~~ 15 गांव लाभान्वित होंगे।

6. **गुड़गाव नहर / यमुना लिंक नहर परियोजना** :-

→ इस नहर परियोजना को यमुना नदी से आगरा के समीप ओखला गाँव से निकाला गया है।

इस नहर का राजस्थान मे प्रवेश जुरेरा गाँव कामा तहसील मे होता है।

→ इस नहर परियोजना से राजस्थान के भरतपुर जिले के कामां व डीग तहसीलों को 28200 हैक्टेयर क्षेत्र पर सिंचाई सुविधा उपलब्ध करवायी जाती है।

7. **बीसलपुर बांध परियोजना** :- बीसलपुर बांध परियोजना का निर्माण 1988-89 में किया गया। यह बांध टोंक के बीसलपुर नामक स्थान पर बनास नदी पर स्थित है। जिससे अजमेर के ~~सर्वाड~~ सरवाड, किशनगढ़, केकड़ी एवं जयपुर जिले को पेयजल की पूर्ति करवायी जाती है।

→ जयपुर को पेयजल पूर्ति के लिए सूरजपुरा गांव (टोंक) से लेकर बालावाला (सांगानेर, जयपुर) तक एक पाईपलाइन का निर्माण किया गया है।

→ इस परियोजना से टोंक जिले के 256 गांव ~~को~~ के 81800 हैक्टेयर क्षेत्र पर सिंचाई सुविधा उपलब्ध करवायी जाती है।

इस बांध से दो नहरे निकाली गई है।

(i) दायी नहर - 51.65 km. (ii) बायी नहर - 18.64 km.

8. **मेजा बांध परियोजना** :- इस बांध का निर्माण भीलवाड़ा में मांडल कस्बे के समीप कोठारी नदी पर किया गया है।

→ इस बांध की पाल पर ग्रीन माउंट पार्क स्थित है।

→ इस बांध से भीलवाड़ा जिले को 10.5 हजार हैक्टेयर क्षेत्र पर सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराई जाती है एवं भीलवाड़ा जिले को इसी बांध से पेयजल की पूर्ति होती है।

	नदी घाटी परियोजना	स्थान	नदी
1.	पार्वती बांध परियोजना नदी - पार्वती	धौलपुर	पार्वती
2.	इंदिरा गांधी लिफ्ट नहर परियोजना	सवाईमाधोपुर	चम्बल
3.	पिपलदा बांध परियोजना	सवाईमाधोपुर	चम्बल
4.	ईसरदा बांध परियोजना	सवाईमाधोपुर	बनास
5.	मोरेल बांध परियोजना	सवाईमाधोपुर	मोरेल
6.	टोरडी सागर बांध परियोजना	टोंक	सहोदरा
7.	अणवान बांध परियोजना	चित्तौड़गढ़	नालीओं से
8.	ओराई बांध परियोजना	चित्तौड़गढ़	ओराई
9.	पांचना बांध परियोजना	करौली	गंभीर
10.	चूली देवी बांध परियोजना	करौली	नाली
11.	छापी सिंचाई परियोजना	झालावाड़	छापी
12.	बांकली बांध परियोजना	जालौर पाली	सुकड़ी ~~बांकली~~

13. विलास बांध परियोजना बांरा

14. नारायण सागर बांध परि. अजमेर

जलवायु (Climate)

जलवायु:-

राजस्थान किसी स्थान पर दीर्घकाल की औसत वायुमंडलीय दशाओं को (तापमान, वायुदाब, आर्द्रता, वर्षा, वायुवेग) जलवायु कहा जाता है। (30-35 yrs. का समय)

मौसम:- किसी स्थान पर अल्प समय की औसत वायुमंडलीय दशाओं को मौसम कहा जाता है।

जैसे - some hours, some days

निष्कर्ष:- वर्तमान समय मे जलवायु परिवर्तन के कारण स्थानीय एवं वैश्विक स्तर पर जलवायु परिवर्तन हो रहे हैं जैसे- बाड़मेर में बाढ़, वर्षा की तीव्रता व आवृत्ति में परिवर्तन एवं अचानक जलवायु परिवर्तन हो रहे हैं। अतः इन्हें रोकने के लिए क्रमबद्ध विकास, पर्यावरण मित्र विकास एवं पर्यावरण प्रबंधन की आवश्यकता है।

* राजस्थान की जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक

राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है जिसके अलग-2 स्थानों पर अलग-2 प्रकार की भौतिक विशेषताएं हैं जैसे पर्वत, पठार, मरुस्थल, मैदान जिन्हे राजस्थान मे निम्न कारक प्रभावित करते है।

1. अक्षांश एवं देशांतर स्थिति :- राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार 23°3' N अक्षांश से 30°12' N अक्षांश तक विस्तृत है। इसी कारण राजस्थान के बांसवाड़ा जिले से निचे का भाग कर्क रेखा के निचे उष्ण कटिबंध मे एवं राजस्थान के ऊपर का भाग उपोष्ण कटिबंध में आता है।

→ ग्रीष्म काल के समय सूर्य की किरणे बांसवाड़ा जिले मे लगभग सीधी एवं गंगानगर जिले मे सर्वाधिक तिरछी होती है। राजस्थान मे ऊष्ण एवं उपोष्ण जलवायु पायी जाती है।

2. समुद्र तल से दूरी :-

→ राजस्थान की समुद्र तल से दूरी अधिक होने के कारण यहां शुष्क जलवायु पायी जाती है।

→ राजस्थान की अरब सागर से दूरी 400 km. एवं कच्छ की खाड़ी से 225 km. एवं खंभात की खाड़ी से 275 km. है।

→ राजस्थान एवं पश्चिम बंगाल दोनों समान अक्षांशीय स्थिति पर स्थित होते हुए भी समुद्र के तट के कारण पश्चिम बंगाल में उष्ण आर्द्र जलवायु एवं राजस्थान मे शुष्क जलवायु पायी जाती है।

3. <u>अरावली पर्वतमाला</u>* <u>की स्थिति</u> :- राजस्थान में अरावली पर्वतमाला <u>मध्यवर्ती भाग</u> में स्थित है जिसके पश्चिम में मरुस्थल एवं पूर्व ~~स्व~~ व दक्षिण-पूर्व में पठार व मैदान स्थित है।

→ अरावली पर्वतमाला ~~र~~ मानसून के समानांतर होने के कारण इसके पश्चिमी भाग में कम वर्षा होती है जिससे यहां की जलवायु शुष्क पायी जाती है।

4. <u>समुद्र तल से ऊंचाई</u> :- राजस्थान में अरावली पर्वतमाला की समुद्र तल से औसत ऊंचाई <u>930 Meter</u> है जबकि अन्य क्षेत्र की औसत ऊंचाई <u>350 Meter</u> है।

→ <u>अत्यधिक ऊंचाई</u> वाले क्षेत्रों में <u>वर्षा</u>, <u>वनस्पति एवं आर्द्रता</u> अधिक पायी जाती है जबकि निचले स्थानों पर इनकी कमी पायी जाती है। जिससे अलग-2 स्थानों पर अलग-2 प्रकार की जलवायु होती है।

5 <u>वनस्पति</u> :- राजस्थान में पूर्वी एवं दक्षिणी-पूर्वी भाग में अधिक वनस्पति जबकि मरुस्थलीय प्रदेश में बहुत कम वनस्पति पायी जाती है। इसी कारण इन क्षेत्रों में जलवायु में अंतर पाया जाता है।

6. <u>धरातल की बनावट</u> :- राजस्थान में <u>मरुस्थल</u>, <u>पर्वत</u> <u>पठार</u> और <u>मैदान</u> सभी प्रकार की धरातलीय संरचना पायी जाती है। और इसी धरातलीय संरचना से राजस्थान की

जलवायु प्रभावित होती है।

7. मृदा की संरचना :- अरावली के पश्चिम में रेतीली मिट्टी जिसमें मोटे-2 कण पाये जाते हैं इसी कारण यहां दिन के समय अधिक तापमान एवं रात्रि के समय कम तापमान पाया जाता है एवं मिट्टी में आर्द्रता कम एवं मौसम में शुष्कता अधिक होती है। जबकि अरावली के पूर्व में चिकनी मिट्टी जिसमें बारीक कण होते हैं जो धीरे-2 गर्म एवं धीरे-2 ठंडे होते हैं इसी कारण यहां मौसम में आर्द्रता बनी रहती है। एवं वनस्पति आवरण अधिक पाया जाता है।

8. मानसून :- यह भी राजस्थान की जलवायु को प्रभावित करता है।

राजस्थान में जलवायु के आधार पर ऋतुओं के प्रकार

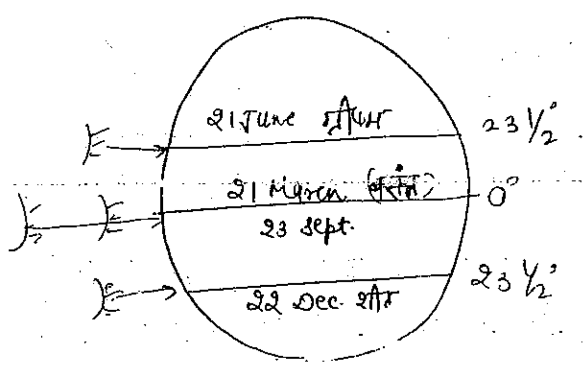

1. ग्रीष्म ऋतु :- यह ऋतु मध्य मार्च से जून तक होती है इस ऋतु में अधिक तापमान के कारण राजस्थान के पश्चिमी प्रदेश मे तेज एवं गर्म लू- पवनें चलती है।

→ ये लू- पवने वायु के भंवर के साथ मिलकर आंधी मे परिवर्तित हो जाती है।

→ इसी कारण राजस्थान के गंगानगर जिले मे सबसे अधिक आंधियां (27 days) व सबसे कम आंधियां झालावाड़ जिले में आती है (केवल 3 days)

→ राजस्थान में ग्रीष्म ऋतु का औसत तापमान 38°C होता है। एवं सबसे गर्म जिला व महिना चुरु व जून होते है।

→ इसी ऋतु मे राजस्थान का सबसे शुष्क स्थान फलौदी- जोधपुर होता है।

2. वर्षा ऋतु :- वर्षा ऋतु मध्य जून से सितम्बर तक होती है। इस ऋतु में अधिक ताप के कारण भारत के उत्तरी भाग मे निम्न वायु दाब पाया जाता है। जबकि हिन्द महासागर मे उच्च वायु दाब का केन्द्र बनता है। जिससे हवाएं हिन्द महासागर की ओर से भारत के उत्तरी भाग की ओर चलने लगती है जिन्हे भारत मे दक्षिणी- पश्चिमी- मानसून के नाम से जाना जाता है।

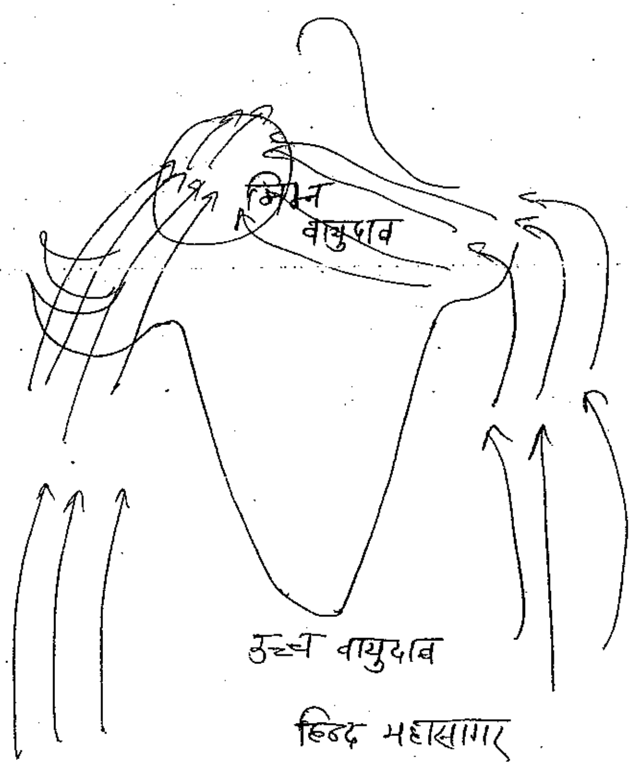

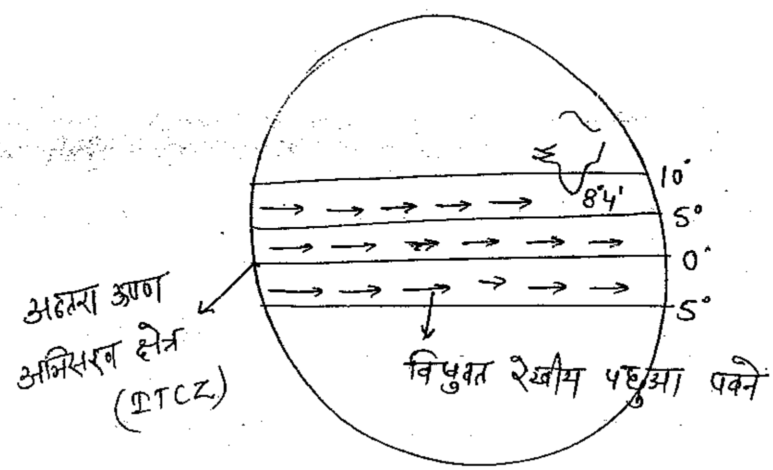

वर्षा ऋतु की विशेषताएँ :-

(i) राजस्थान में औसत वार्षिक वर्षा - 57.6 cm

राज्य में सबसे अधिक वर्षा वाला जिला - झालावाड (40 days) 80-120 cm.

राज्य में सबसे कम वर्षा वाला जिला - जैसलमेर (5 days) → 10 cm.

→ सबसे अधिक वर्षा वाला स्थान - माउंट आबू (सिरोही)
(48 days)

→ सबसे कम वर्षा वाला स्थान - समगांव (जैसलमेर)
(0 day)

→ राजस्थान में सबसे अधिक वर्षा - जुलाई के महिने मे (34%)
एवं अगस्त माह मे 33% होती है।

→ वर्षा वाला दिन उसे कहा जाता है जिस दिन 0.25 cm. वर्षा होती है।

→ राजस्थान में 50 cm. वर्षा रेखा राजस्थान को दो भागो में एवं 25 cm. वर्षा रेखा मरुस्थल को दो भागो में बांटती है।

→ राजस्थान मे दोनों मानसूनों से वर्षा प्राप्त करने वाला स्थान राजस्थान का दक्षिणी भाग है।

→ राजस्थान मे अधिकांशत वर्षा लगभग 90% दक्षिणी-पश्चिमी मानसून से होती है

शीत ऋतु :- मध्य दिसम्बर से लेकर फरवरी तक शीत ऋतु होती है लेकिन Oct. से लेकर मध्य December तक मानसून के लौटने का समय होता है।

(I)

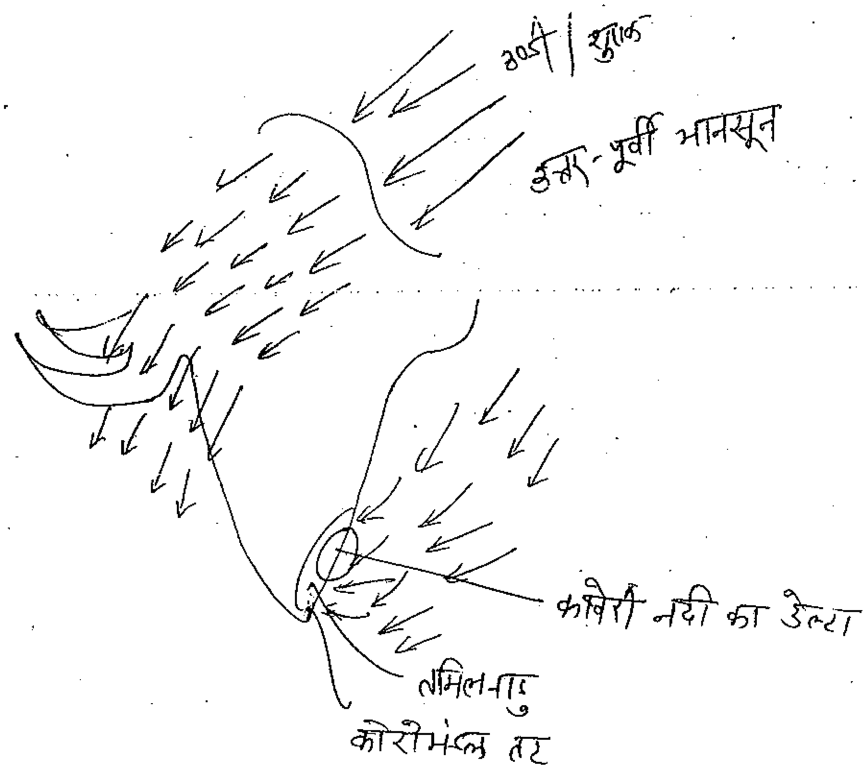

(II)

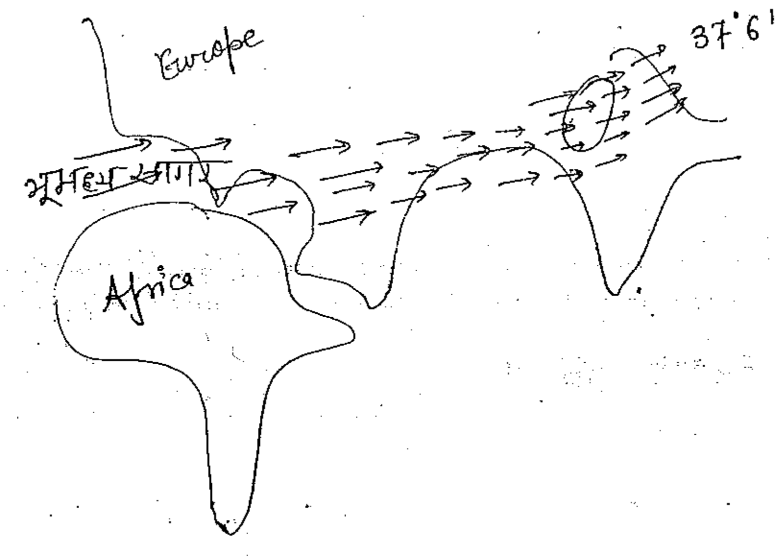

उत्तरी- पूर्वी मानसून :- इस मानसून से भारत के केवल, तमिलनाडु राज्य में / कावेरी नदी के डेल्टा पर / कोरोमंडल तट पर वर्षा होती है।

मावठ :- शीत ऋतु में भूमध्य सागर से आने वाले पश्चिमी विक्षोभों (भूमध्य सागरीय चक्रवात) से भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग में जो वर्षा होती है उसे मावठ के

नाम से जाना जाता है।

यह वर्षा सर्वाधिक जनवरी के महिने में होती है जिससे सबसे अधिक लाभ गेहूं की फसल को होता है। इसी कारण इसे रबी का अमृत कहा जाता है।

Imp → भारत का सबसे छोटा दिन शीत ऋतु में 22 Dec. होता है एवं सबसे ठंडा महीना जनवरी का होता है।

राजस्थान में वर्षा की कमी के कारण :→

(i) जो मानसून राजस्थान में प्रवेश करता है (अरब सागर) तो वह मरुस्थल के अत्यधिक तापमान एवं कम आर्द्रता के कारण मानसून की आर्द्रता में 50 - 90% तक कमी हो जाती है। इसके कारण मरुस्थलीय प्रदेश में कम इस शाखा से कम वर्षा होती है।

(ii) दक्षिणी- ~~पश्चिमी~~ पूर्वी मानसून (बंगाल की खाड़ी) की दूसरी शाखा राजस्थान में प्रवेश करने से पहले अपना पानी गंगा के मैदान में छोड़ आती है।

(iii) राजस्थान में प्राकृतिक अवरोध का अभाव है।

(iv) अरावली पर्वतमाला अरब सागर के मानसून के समानांतर एवं नीचे होने के कारण इसके लिए प्राकृतिक अवरोध का काम नहीं कर पाती।

(v) अन्य स्थानीय कारण

a) वनों का निकास

b) कंकरीट के जंगलों का विस्तार (बढ़ता हुआ शहरीकरण)

c) जैव-विविधता का ह्रास

d) जलवायु परिवर्तन

(e) मरुस्थल का विस्तार

राजस्थान मे जलवायु की विशेषताएं :-

(i) राजस्थान मे वर्षा का असमान वितरण पाया जाता है इसी कारण जिन स्थानों पर वर्षा कम होती है वहां मनुष्य का निवास कम एवं जिन स्थानों पर वर्षा अधिक होती है वहां मनुष्य का विकास अधिक पाया जाता है।

जैसे- पूर्वी मैदानी प्रदेश

(ii) अतिवृष्टि व अनावृष्टि

अतिवृष्टि :- जिस स्थान पर अत्यधिक वर्षा के कारण बाढ़ जैसी स्थिति उत्पन्न हो जाये उसे अतिवृष्टि कहा जाता है। इस स्थिति मे एक दिन मे लगभग 20-30 cm. के मध्य वर्षा होती है।

अनावृष्टि :- अकाल व सूखे की स्थिति । यह

Imp-खण्ड वृष्टि :- किसी स्थान पर लम्बे समय से वर्षा नही हो रही हो लेकिन उस स्थान पर एक साथ अधिक वर्षा हो जाये उस स्थिति को खण्ड वृष्टि कहा जाता है।

(iii) कम आर्द्रता एवं अत्यधिक वायु वेग

(iv) यहां कम आर्द्रता, अधिक तापमान के कारण ग्रीष्म ऋतु में लू जैसी पवनें चलती है।

राजस्थान के जलवायु प्रदेश :-

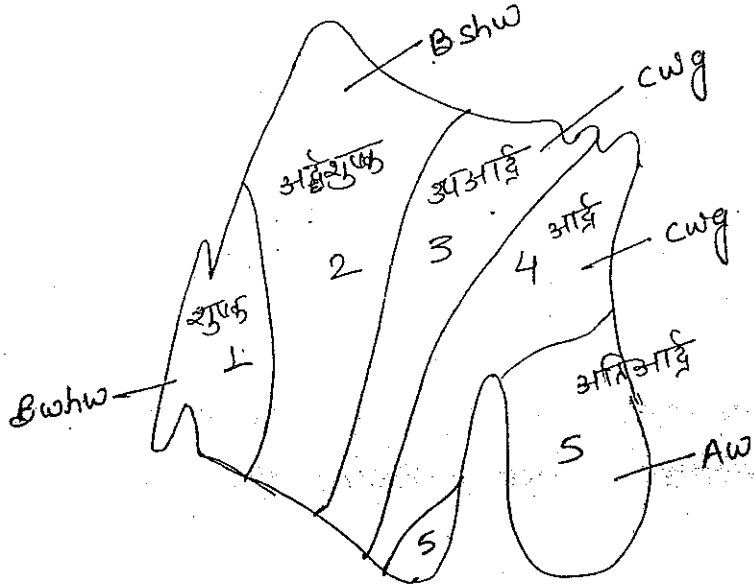

जलवायु प्रदेश :- वह विशिष्ट क्षेत्र जिसके अंदर जलवायु तत्व एवं वायुमंडलीय दशाओं के मध्य औसत आंतरिक समरूपता व समानता पायी जाती हो उसे जलवायु प्रदेश कहा जाता है। (तापमान, आर्द्रता, वायुवेग, वर्षा, वायुदाब)

राजस्थान को 5 जलवायु प्रदेशों में बांटा गया है।

(i) शुष्क जलवायु प्रदेश :- यह जलवायु प्रदेश जैसलमेर, बिकानेर, दक्षिणी गंगानगर, पश्चिमी जोधपुर एवं उत्तरी बाड़मेर में फैला हुआ है।

→ इस प्रदेश में औसत तापमान 40°C एवं वर्षा 0-20 cm. होती है

→ इस प्रदेश मे मुख्य रुप से मरूद्भिद वनस्पति पायी जाती है।

जैसे- आक, बेर, केर, केकड़ी, खेजड़ी, फोग

→ मुख्य रुप से इस प्रदेश मे कांटेदार झाड़ियां पायी जाती है।

→ कोपेन के द्वारा इस जलवायु प्रदेश को Bwhw

B- उपोष्ण

w - गर्म (warm)

h - उच्च अक्षांश (high latitude)

w - गर्म

(ii) अर्द्धशुष्क जलवायु प्रदेश :- इस प्रदेश में मुख्य रुप से गंगानगर, हनुमानगढ़, सीकर, चुरु, झुंझुनु, नागौर, पाली, जालौर, पूर्वी जोधपुर एवं दक्षिणी- पूर्वी बाड़मेर आता है।

→ इस प्रदेश मे औसत तापमान 36-38°C एवं वर्षा 20-40 cm तक होती है।

→ इस प्रदेश में आर्द्रता कम, ~~वायुदाब~~ एवं तापमान अधिक होता है।

→ इस प्रदेश में मुख्य रूप से उष्ण कटिबंधीय कांटेदार वन पाये जाते है।

→ इसे कोपेन के द्वारा BShw के नाम से प्रदर्शित किया गया है।

3. उपआर्द्र जलवायु प्रदेश :- इसके अंतर्गत अलवर, जयपुर, दौसा, अजमेर, पूर्वी शेखावाटी, राजसमंद, सिरोही, भीलवाड़ा टोंक आदि आते है।

→ इस प्रदेश का औसत तापमान 32-36°C एवं वर्षा 40-60 cm. होती है।

→ इस प्रदेश में पर्वतीय वन पाये जाते है।

→ इसे कोपेन के द्वारा Cwg के रूप में प्रदर्शित किया गया है। (शीतोष्ण गर्म मैदान)

4. आर्द्र जलवायु प्रदेश :- इसके अंतर्गत भरतपुर, धौलपुर करौली, सवाई माधोपुर, चित्तौड़गढ़, उत्तरी-पूर्वी कोटा, उत्तरी-पूर्वी उदयपुर आदि आते है।

→ इस प्रदेश का औसत तापमान 30-34°C तथा वर्षा 60-80 cm. तक होती है।

→ इस प्रदेश में मुख्य रूप से पतझड़ वन पाये जाते है।

→ इसे कोपेन के द्वारा Cwg का नाम दिया गया है।

5. अति आर्द्र जलवायु प्रदेश :- इसके अंतर्गत झालावाड़, बांरा, दक्षिणी-कोटा, प्रतापगढ़, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, दक्षिणी उदयपुर एवं सिरोही का माऊंट आबू क्षेत्र आता है।

→ इस प्रदेश मे औसत तापमान 25-30°C तथा वर्षा 80-120 cm. तक होती है।

→ इस प्रदेश में शुष्क सागवान वन एवं मानसूनी सदाबहार वन पाये जाते है।

जैसे :- आम, महुआ, बांस, सागवान, साल आदि

→ कोपेन के द्वारा इसे Aw नाम दिया गया है।

राजस्थान के कृषि जलवायु प्रदेश :-

→ राजस्थान एक विशाल भू-भाग पर स्थित है जिसमें कृषि वर्षा पर आधारित है। भारत को कुल 15 कृषि जलवायु प्रदेशों में एवं राजस्थान को 10 कृषि जलवायु प्रदेशों में बांटा गया है।

1, 2 → शुष्क मैदानी पश्चिमी प्रदेश - 2

3. सिंचित मैदानी उत्तरी पश्चिमी प्रदेश

4. अंत: स्थलीय जलोत्सरण के अंतवर्ती मैदानी प्रदेश

5. लूनी का अंतवर्ती मैदानी प्रदेश

6. अर्द्धशुष्क पूर्वी मैदानी प्रदेश

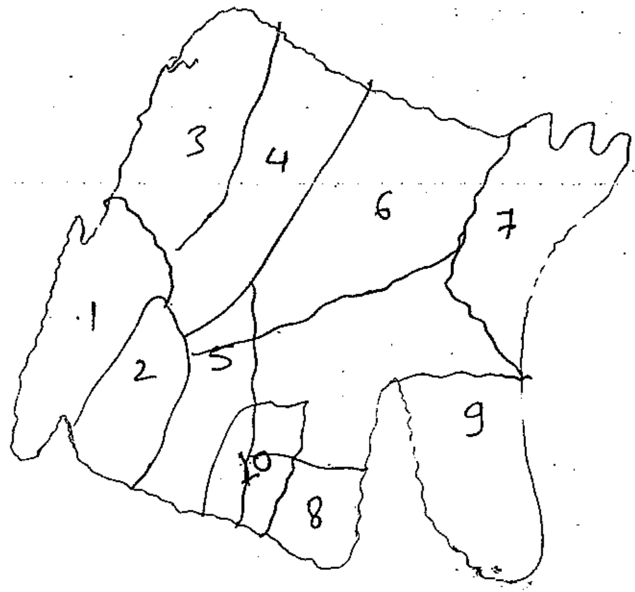

7. बाढ़ सम्भाव्य मैदानी प्रदेश

8. आर्द्र दक्षिणी मैदानी प्रदेश

9. आर्द्र दक्षिणी - पूर्वी मैदानी प्रदेश

10. अर्द्ध आर्द्र दक्षिणी मैदानी एवं अरावली पहाड़ी प्रदेश

1. शुष्क मैदानी पश्चिमी प्रदेश :- यह कृषि खण्ड जोधपुर, बाड़मेर में स्थित है। जिसमें वर्षा 200 mm से 370 mm तक होती है।

→ इस प्रदेश में मुख्य रूप से बाजरा, ग्वार एवं तारामीरा फसलें उत्पादित की जाती हैं।

→ इस क्षेत्र का कृषि प्रशिक्षण केन्द्र रामपुरा, जोधपुर में स्थित है जिसके द्वारा इस खण्ड के लिए बेर, आवला, बैंगन खजूर आदि उद्यानिक फसलों की सम्भावना व्यक्त की गई है।

3. सिंचित मैदानी उत्तर-पश्चिमी प्रदेश :-

इस कृषि जलवायु प्रदेश के अंतर्गत गंगानगर और हनुमानगढ़ जिले आते है यहां पर वर्षा 100 – 350 mm तक होती है।

→ यह राजस्थान का सबसे अधिक नहरी सिंचित क्षेत्र होने के कारण अत्यधिक उत्पादकता वाला क्षेत्र है इसी कारण यहां पर गेहूं, चना, सरसों, कपास, किंनू आदि फसले उत्पादित की जाती है।

→ इस कृषि जलवायु प्रदेश के कृषि प्रशिक्षण केन्द्र करनपुर (गंगानगर) एवं हनुमानगढ़ मे स्थापित किये गये है।

इस जोन मे बेर, किंनू, अनार, माल्टा, मिर्ची, गुलाब आदि फसलों की सम्भावना व्यक्त की गई है।

शुष्क मैदानी पश्चिमी प्रदेश :-

यह कृषि जलवायु प्रदेश जैसलमेर व बीकानेर मे स्थित है इस कृषि जलवायु प्रदेश मे वर्षा 100 – 350 mm तक होति है। एवं बाजरा, ज्वार, ग्वार आदि मोटे अनाजों का उत्पादन होता है।

→ इसका कृषि प्रशिक्षण केन्द्र लूणकरनसर (बीकानेर) मे स्थापित किया गया है एवं इस जोन में बेर, आंवला, खजूर, बैंगन आदि का भी अत्याधिक उत्पादन हो सकता है।

अंतस्थली जलोत्सरण का अंतर्वर्ती मैदानी प्रदेश :-

→ यह जलवायु प्रदेश सीकर, चुरू, झुंझुनु व नागौर जिले में स्थित है।

→ यहाँ पर वर्षा 300-500 mm तक होती है एवं मुख्य रूप से बाजरा, तिल, मोठ फसलों का उत्पादन होता है।

→ इसका कृषि प्रशिक्षण केन्द्र आबूसर झुंझुनू में स्थापित किया गया है एवं इस जोन में बेर, अनार, मैथी नींबू व अमरूद की फसलों का भी अत्यधिक उत्पादन हो सकता है।

लूनी का अंतर्वर्ती मैदानी प्रदेश :-

→ इस कृषि जलवायु प्रदेश में पाली, जालौर, सिरोही एवं जोधपुर जिले आते है

→ इसमें वर्षा 300-500 mm तक होती है एवं मुख्य रूप से बाजरा, मक्का, तिल, ईसबगोल, जीरा आदि फसलों का उत्पादन होता है।

→ इसका कृषि प्रशिक्षण केन्द्र सुमेरपुर पाली मे स्थापित किया गया है एवं इस जोन मे मे नींबू, मेंहदी, ईसबगोल, टमाटर, बैंगन आदि फसलों का भी अत्यधिक उत्पादन हो सकता है।

6. अर्द्ध शुष्क पूर्वी मैदानी प्रदेश :-

→ इस कृषि जलवायु प्रदेश मे जयपुर, दौसा, अजमेर, टोंक आदि जिले आते है।

→ इस प्रदेश मे वर्षा 500-700 mm तक होती है एवं मुख्य रूप से बाजरा, मूँगफली, मूंग, सरसो, गेहूं, चना, मटर आदि का उत्पादन होता है।

→ इस प्रदेश का कृषि प्रशिक्षण केन्द्र तबीजी अजमेर मे स्थापित किया गया है।

→ इस जोन मे अनार, गुलाब, गोभी, बैंगन, टमाटर आदि फसलों का भी अत्याधिक उत्पादन किया जा सकता है

7. बाढ़ सम्भाव्य मैदानी प्रदेश :-

→ इस कृषि जलवायु प्रदेश के अंतर्गत अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर, सवाईमाधोपुर जिले आते है जहां पर वर्षा 500-700 mm तक होती है एवं यहां पर बाजरा, मूंगफली, सरसो, मिर्ची, जौ, गेहूं आदि का उत्पादन होता है।

→ इसका कृषि प्रशिक्षण केन्द्र मलीकपुर भरतपुर में स्थापित किया गया है। एवं इस जोन में पपीता, टमाटर, लौकी आदि का भी अत्यधिक उत्पादन हो सकता है।

8. अर्द्ध आर्द्र दक्षिणी मैदान एवं अरावली पर्वतीय प्रदेश :-

→ इस कृषि जलवायु प्रदेश में उदयपुर, सिरोही, राजसमंद चित्तौड़ आदि जिले आते हैं।

→ इस प्रदेश में वर्षा 700-900 mm तक होती है

→ इस प्रदेश में मुख्य रूप से मक्का, अफीम, उड़द, अरहर उत्पादन होता है।

→ इसका कृषि प्रशिक्षण केन्द्र चित्तौड़गढ़ में स्थापित किया गया है एवं इस जोन में आम, सीताफल, आंवला, नींबू, अमरूद आदि का भी अत्यधिक उत्पादन किया जा सकता है।

9. आर्द्र दक्षिणी मैदानी प्रदेश :-

→ इस कृषि जलवायु प्रदेश में उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा प्रतापगढ़ जिले आते हैं।

→ यहां पर ~~वर्षा~~ वर्षा 600-1100 mm तक होती है एवं मुख्य रूप से मक्का, चावल, गेहूं, कपास, चना आदि का उत्पादन होता है।

→ इसका कृषि प्रशिक्षण केन्द्र उदयपुर में स्थापित किया गया है इस जोन में पपीता, केला, चीकू, टमाटर आदि का भी अत्यधिक उत्पादन होता है।

आर्द्र दक्षिणी - पूर्वी मैदानी प्रदेश :-

→ इस कृषि जलवायु प्रदेश में कोटा, बूंदी, बांरा, झालावाड़ जिले आते है। जहां पर वर्षा 500 - 1000 mm होती है। एवं मुख्य रुप से चावल, गेहूं, कपास, धनिये का उत्पादन होता है।

→ इसका कृषि प्रशिक्षण केन्द्र, छत्रपुरा, बूंदी मे स्थापित किया गया है। एवं इस जोन मे आम, संतरा, गुलाब धनिया आदि का भी अत्यधिक उत्पादन हो सकता है।

मृदा संसाधन

भूमिका :- मृदा मानव जीवन का मूल आधार है अतः सभी सभ्यताओं एवं संस्कृतियों का विकास मिट्टी से हुआ है।

→ मृदा संसाधन मानव जीवन को प्रभावित करता है जिन स्थानो पर मिट्टी अधिक उपजाऊ होती है वहां मनुष्य जीवन अधिक एवं जहां अनुपजाऊ होती है वहां मनुष्य का आवास कम पाया जाता है।

इसलिए कहा जा सकता है कि मृदा संसाधन एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है।

* **मृदा** :- भू- पृष्ठ पर असंगठित पदार्थों की वह ऊपरी परत जो कि मूल चट्टानों या वनस्पति के योग से निर्मित होती है मृदा कहलाती है।

निष्कर्ष :- वर्तमान समय में मृदा अपरदन, मरुस्थलीकरण मृदा प्रदूषण कंकरीट के जंगलों का विस्तार (बढ़ता हुआ शहरीकरण) अत्यधिक मानवीय हस्तक्षेप, अवैज्ञानिक कृषि, अवैज्ञानिक खनन कार्य इत्यादि के द्वारा हजारों वर्षों से निर्मित हमारी अमूल्य धरोहर का विनाश हो रहा है। अतः वैज्ञानिक कृषि कार्य, वैज्ञानिक पशु पालन, मानवीय हस्तक्षेप पर रोक, वैज्ञानिक खनन कार्य, आबाद शहरी-करण आदि को अपनाकर एवं धारणीय विकास व पर्यावरण मित्र विकास को अपनाते हुए हमारी इस अमूल्य धरोहर का संरक्षण व संवर्द्धन किया जा सकता है।

राजस्थान में मृदा का वर्गीकरण दो प्रकार से किया गया है ⇒

(i) **सामान्य वर्गीकरण** :-

इसमें मिट्टी को रंग के आधार पर वर्गीकृत किया गया है।

(i) रेतीली मिट्टी
(ii) भूरी रेतीली मिट्टी / भूरी - पीली मिट्टी
(iii) लाल मिट्टी

(iv) लाल काली मिश्रित मिट्टी

(v) लाल पीली मिट्टी

(vi) काली मिट्टी / मध्यम काली मिट्टी

(vii) जलोद मिट्टी / दोमट / कच्छारी मिट्टी

(viii) भूरी दोमट मिट्टी

(ix) पर्वतीय मिट्टी

(x) लवणीय मिट्टी

(2) 1991 में अमेरिका के वैज्ञानिकों द्वारा वैज्ञानिक आधार पर 11 भागों में बांटा था। जिसमें से राजस्थान में 5 प्रकार की मिट्टी पायी जाती है।

(i) वर्टीसोल (vertisoil)

(ii) एरिडोसोल (eridosoil)

(iii) अल्फीसोल (Alfisoil)

(iv) एन्टीसोल (Antisoil)

(v) इन्सेप्टीसोल (Anseptisoil)

सामान्य वर्गीकरण के आधार पर :-

(1) रेतीली मिट्टी / बलुई मिट्टी / मरुस्थली मिट्टी :-

→ यह मिट्टी जैसलमेर, बीकानेर, बाड़मेर, जोधपुर व नागौर व चुरू जिले में विस्तृत है।

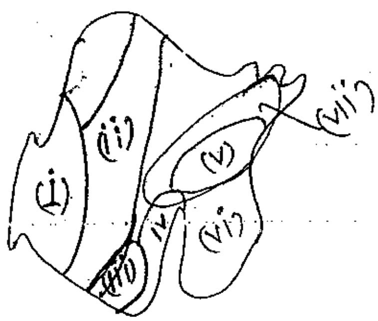

→ इस मिट्टी के कण मोटे होने के कारण इसमें जल धारण करने की क्षमता सबसे कम पायी जाती है।

→ इस मिट्टी में नाइट्रोजन व कार्बनिक पदार्थों की कमी परन्तु कैल्शियम के तत्वों की प्रधानता पायी जाती है। इस

→ मिट्टी में मुख्य रुप से मोटे अनाजो का उत्पादन जैसे ग्वार, मोठ, बाजरा आदि का उत्पादन होता है।

(ii) भूरी रेतीली मिट्टी / भूरी पीली मिट्टी :- यह मिट्टी मुख्य रुप से सीकर, चुरु, झुंझुनु, नागौर, पाली, जालौर में विस्तृत है।

→ इस मिट्टी में नाइट्रोजन एंव कार्बनिक पदार्थों की कमी एंव फॉस्फोरस के तत्वों की प्रधानता पायी जाती है।

→ इस मिट्टी में मुख्य रुप से ज्वार, बाजरा, मक्का, ईसबगोल, जीरा, मेंहदी, सरसो, जौ, गेहूं आदि का उत्पादन होता है।

(iii) लाल लोमी मिट्टी :- यह मिट्टी मुख्य रुप से उदयपुर, डुंगरपुर, बांसवाडा, भीलवाडा, चित्तौड, राजसमंद, सिरोही आदि जिलो में पायी जाती है।

→ इस मिट्टी मे नाइट्रोजन, कैल्शियम, फॉस्फोरस की तत्वों की कमी एवं लौहा व पोटाश के तत्वों की प्रधानता पायी जाती है।

→ इस मिट्टी में लौह के तत्व अधिक होने के कारण इसका रंग गहरा लाल हो जाता है।

→ इस मिट्टी में मुख्य रूप से मक्का की खेती की जाती है

~~लाल~~

4. लाल – काली मिश्रित मिट्टी :– यह राजस्थान में मुख्य रूप से काली व ~~ल~~ लाल मिट्टी के मध्य उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़ में स्थित है।

→ इस मिट्टी में नाइट्रोजन, कैल्शियम, फॉस्फोरस एवं फॉस्फेट के तत्वों की कमी पायी जाती है।

→ इस मिट्टी के कण छोटे-२ होते है इसीकारण यह मिट्टी कपास, गन्ना, चावल आदि के उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण है।

5. लाल – पीली मिट्टी :– यह मिट्टी सवाई माधोपुर, भीलवाड़ा, अजमेर व टोंक जिलों में पायी जाती है

→ इस मिट्टी में नाइट्रोजन, कैल्शियम के तत्वों की कमी एवं लौह ऑक्साइड के तत्वों की प्रधानता पायी जाती है

(vi) काली मिट्टी :- यह मिट्टी मुख्य रूप से कोटा, बूंदी, बांरा, झालावाड़ में पायी जाती है।

→ इस मिट्टी में कपास का अधिक उत्पादन होने के कारण इसे कपासी मिट्टी भी कहा जाता है।

→ इस मिट्टी में नाइट्रोजन व कैल्शियम के तत्वों की कमी एवं जैविक पदार्थ व पोटाश के तत्वों की प्रधानता पायी जाती है।

→ इस मिट्टी में कपास, गन्ना, चावल, खट्टे रसदार फल आदि का अत्यधिक उत्पादन होता है।

(vii) जलोढ़ / दोमट / कच्छारी मिट्टी :-

→ यह मिट्टी मुख्य रूप से सवाई माधोपुर, टोंक, भीलवाड़ा जयपुर, दौसा / माही नदी बेसिन / चम्बल नदी बेसिन / बनास नदी बेसिन में विस्तृत है।

→ इस मिट्टी में कैल्शियम व फॉस्फेट के तत्वों की कमी एवं नाइट्रोजन व पोटाश की अधिकता पायी जाती है।

→ इसी कारण राजस्थान में सबसे अधिक उपजाऊ मिट्टी जलोढ़ मिट्टी को माना जाता है।

→ इस मिट्टी में मुख्य रूप से सरसों, गेहूं, चावल, कपास गन्ना आदि का उत्पादन होता है।

(viii) भूरी दोमट मिट्टी :-

→ राजस्थान में यह मिट्टी मुख्य रूप से बनास नदी बेसिन में पायी जाती है।

(ix) पर्वतीय मिट्टी :- यह मिट्टी मुख्य रूप से राजस्थान के अरावली पर्वतीय प्रदेशों में पायी जाती है।

(x) लवणीय मिट्टी :- राजस्थान में यह मिट्टी मुख्य रूप से गंगानगर, बीकानेर, बाड़मेर, जालौर में पायी जाती है। इस मिट्टी में लवणीय व क्षारीय तत्व अधिक होने के कारण यह अनुपजाऊ मिट्टी है।

→ इस मिट्टी में जिप्सम, हरी खाद, रॉक फॉस्फेट आदि के उपयोग से इसे उपजाऊ बनाया जा सकता है।

* भूरी जलोढ़ मिट्टी :- गंगानगर, हनुमानगढ़ में पायी जाती है।

* वैज्ञानिक आधार पर वर्गीकरण :→

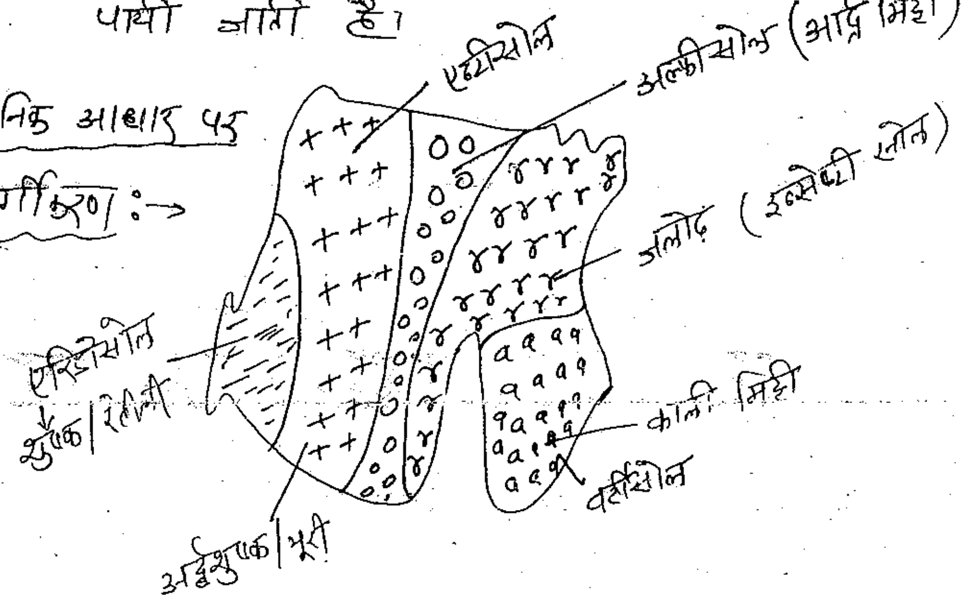

Ques मृदा अपरदन किसे कहते है मृदा अपरदन के कारण, प्रकार एवं कुप्रभाव को बताते हुए मृदा अपरदन को रोकने के उपायो का विस्तार से वर्णन करो-

Ans. मृदा अपरदन :- मृदा की 1 cm. से 2 cm. परत को बनने में हजारो वर्ष लग जाते है लेकिन यह उपरी परत कुछ ही समय मे नष्ट हो जाती है।

विभिन्न मानवीय एवं प्राकृतिक हस्तक्षेप से मृदा की उपरी परत का स्थानांतरण या नष्ट होना मृदा अपरदन कहलाता है

मृदा अपरदन के प्रकार

मृदा अपरदन के पांच प्रकार होते है ⇒

(i) अवनालिका अपरदन
(ii) उत्खात भूमि / बीहड़ भूमि
(iii) जल या चादरी अपरदन
(iv) परत अपरदन / वायु अपरदन
(v) धरातलीय अपरदन

* (i) अवनालिका अपरदन :- चम्बल नदी बेसिन का ढाल तीव्र एवं उसमें कठोर व कोमल चट्टाने एकांतर क्रम मे स्थित होने के कारण चम्बल नदी के द्वारा इस क्षेत्र मे नाली नुमा जो गहरे-2 गड्ढे बनाये जाते है उसे अवनालिका अपरदन कहा जाता है।

→ राजस्थान में सबसे अधिक अवनालिका अपरदन कोटा जिले में, चम्बल नदी क्षेत्र में या राजस्थान के दक्षिणी-पूर्वी भाग में सबसे अधिक होता है।

(ii) उत्खात भूमि / बीहड़ भूमि

→ राजस्थान में चम्बल नदी बेसिन के अंतर्गत चम्बल नदी के द्वारा निर्मित उबड़-खाबड़ नुमा आकृति को उत्खात / बीहड़ भूमि कहा जाता है।

राजस्थान में इस प्रकार का अपरदन सर्वाधिक सवाईमाधोपुर, करौली एवं धौलपुर में देखने को मिलता है।

(iii) जल या चादरी अपरदन :- वर्षा के जल या नदी के द्वारा मिट्टी की ऊपरी परत को बहा देना जल या चादरी अपरदन कहलाता है।

→ राजस्थान में सबसे अधिक चादरी अपरदन सिरोही व राजसमंद जिले में देखने को मिलता है।

(iv) वायु अपरदन / परत अपरदन :- राजस्थान में तेज हवाओं के द्वारा मिट्टी की ऊपरी परत को एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित कर देना परत या वायु अपरदन कहलाता है।

→ परत अपरदन राजस्थान में सबसे अधिक पश्चिमी राजस्थान में देखने को मिलता है।

(v) धरातलीय अपरदन :- धरातल पर तेज वायु, जल, नदियों के द्वारा धरातल की ऊपरी परत को स्थानांतरित कर देना धरातलीय अपरदन कहलाता है।

क्योंकि राजस्थान के सभी क्षेत्रों में देखने को मिलता है।

मृदा अपरदन के कारण :->

(i) राजस्थान में वनों की अत्यधिक कटाई के कारण या वनों के हो रहे विनाश से मृदा का अपरदन बढ़ रहा है। राजस्थ

(ii) राजस्थान मे अत्यधिक पशु चारण से मृदा का अपरदन हो रहा है। क्योंकि भेड़ एवं बकरियां घास के मैदानों में घास को अंतिम सीमा तक खा जाते हैं। जिससे उन स्थानों पर धीरे-२ घास के मैदान नष्ट हो जाते हैं।

(iii) राजस्थान में वर्षा से पहले जो तेज आंधियां चलती है उससे मृदा का अत्यधिक अपरदन होता है।

(iv) राजस्थान के दक्षिणी एवं दक्षिणी-पूर्वी भागों में आदिवासियों के द्वारा वालरा कृषि से वनों का विनाश हो रहा है जिससे मृदा अपरदन बढ़ रहा है।

(v) राजस्थान का किसान गरीब होने के कारण कृषि की नवीन तकनीकों का उपयोग नही कर पाता जैसे- फसलों को हेर-फेर ~~बदल-२~~ कर बोना, खेतों की मेड़ बंदी करना एवं कृषि के अवैज्ञानिक तरीको से मृदा का अपरदन होता है।

(vi) राजस्थान में कंकरीट के जंगलों का विस्तार (बढ़ता हुआ शहरीकरण) मृदा अपरदन के लिए जिम्मेदार है।

मृदा अपरदन के कुप्रभाव :→

(i) निरन्तर सूखा ।
(ii) बोई गई फसलों में बीजों का अंकुरण ना होना ।
(iii) निरन्तर जल स्तर का नीचा होना ।
(iv) नदी एंव नहरों के मार्ग अवरुद्ध होना ।
(v) भयंकर बाढ़ों का प्रकोप
~~(vi)~~

मृदा अपरदन को रोकने के उपाय :→

(i) वृक्षा रोपण
(ii) अत्यधिक वनों के विनाश को रोकना / नियंत्रण ।
(iii) ढालों पर पट्टीदार खेती / कृषि करना ।
(iv) चारागाहों का विकास करना ।
(v) खेतों मे मेड़ बंदी करना ।
(vi) नदी के मार्गों मे बांधों का निर्माण करना ।
(vii) नहरो के दोनो किनारों पर वृक्षा रोपण करना ।
(viii) वायु की दिशा के विपरित वृक्षों की पट्टी लगाना ।
(ix) वैज्ञानिक कृषि को अपनाना ।
(x) फसल चक्र अपनाना ।

Ques राजस्थान में मृदा की समस्याओं का विस्तार से वर्णन करो-

(i) निरन्तर कृषि के उत्पादन में कमी होना :-

राजस्थान का किसान निर्धन है। निर्धन होने के कारण वह आधुनिक तकनीकों का सही तरीके से उपयोग नहीं कर पाता जिससे उत्पादन में कमी होती है। उत्पादन में वृद्धि/कृषि भूमि को उपजाऊ बनाने के लिए मिट्टी के कटाव को रोकना, ऊसर भूमि को बंजर होने से बचाना, रासायनिक खादों का सही तरीके से उपयोग करना एवं वैज्ञानिक कृषि को अपनाने की आवश्यकता है।

(ii) खरपतवार की समस्या :- खेतों में मुख्य फसल के साथ अन्य जो अवांछनीय पौधे उगते हैं उन्हें ~~स्थानीय भाषा में~~ खरपतवार कहा जाता है।

→ इस समस्या का समाधान करने के लिए किसानों के द्वारा श्रमिकों से इसे उखड़वाना एवं रासायनिक खादों के द्वारा खरपतवार को कम किया जा सकता है।

(iii) मरुस्थल का प्रसार :- राजस्थान में मरुस्थल का प्रसार अत्यधिक तेज गति से बढ़ रहा है। जिससे राजस्थान के अलावा पंजाब, हरियाणा एवं, UP एवं गुजरात की भूमि दिन-प्रतिदिन बंजर होती जा रही है।

Imp → राजस्थान में इस समस्या के समाधान के लिए जोधपुर का काजरी संस्थान निरन्तर प्रयासरत है।

(KAZARI)

Imp 1952 → केन्द्रीय शुष्क अनुसंधान केन्द्र - काजरी - जोधपुर में स्थापित
↓
मरुस्थल से Related

जाफरी - वन्य जीवों के संरक्षण से संबंधित
(ZAFARI) → Zoological Animal forest Research Institute

आफरी - वनों को बढ़ाने का काम
→ (AFRI) - Arid Forest Research Institute

(iv) जलाधिक्य की समस्या :- राजस्थान के नहरी एवं नदियों के क्षेत्र में जल का स्तर जब ऊपरी मिट्टी तक पहुंच कर जो उसे आर्द्रता प्रदान करता है उसके कारण मिट्टी में वायु का प्रवाह रुक जाता है। एवं मिट्टी में ऑक्सीजन की कमी एवं CO_2 की अधिकता हो जाती है। जिससे मिट्टी अनुपजाऊ हो जाती है।

→ इस समस्या के समाधान के लिए नलकूपों को लगाना, खेतों में जल को रुकने ना देना एवं प्राकृतिक ढाल के अनुसार खेतों के पानी को नहर व नालों में छोड़कर इस समस्या का समाधान किया जा सकता है।

(v) सेम की समस्या :-

Some Important ~~pt~~ Ques. Related to soil

1. **पणो** :- राजस्थान में वर्षा के जल, तालाब, दलदली क्षेत्रों का जल जब सूख जाता है तो इस उपजाऊ मिट्टी को स्थानीय भाषा में 'पणो' कहा जाता है।

2. **बांझड़** :- राजस्थान मे जिन स्थानों पर वर्षा की कमी के कारण खेतों को बिना जोते हुए छोड़ दिया जाता है। उन स्थानों की अनुउपजाऊ मिट्टी को स्थानीय भाषा मे बांझड़ / अनुपजाऊ / परती भूमि कहा जाता है।

3. **नेहड़** :- राजस्थान के बाड़मेर व जालोर में कच्छ के रण का विस्तार होने के कारण वहां की मिट्टी लवणीय है जिसे स्थानीय भाषा में नेहड़ कहा जाता है।

4. **लैटेरेजो** :- OR Laterite soil :-

राजस्थान मे उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों के आस-पास अधिक वनस्पति एवं अधिक वर्षा के कारण निक्षालन (Leaching) की क्रिया से जो मिट्टी निर्मित होती है उसे स्थानीय भाषा मे लैटेरेजो कहा जाता है।

→ इस प्रकार की Laterite soil राजस्थान में दक्षिणी भागों में पायी जाती है।

30/7/14

5. पालर पानी :- राजस्थान में वर्षा के जल को इकट्ठा, तालाब एवं टांके में किया जाता है उसी वर्षा के पानी को स्थानीय भाषा में पालर पानी कहा जाता है।

6. तैलिया पानी :- सिंचाई के लिए उपयोग किए जाने वाले पानी में कार्बोनेट एवं हाइड्रोकार्बन आदि तत्वों की जब अधिकता हो जाती है तो उस पानी को तैलिया पानी कहा जाता है।

7. हार्ड पेन :- मरुस्थलीय प्रदेश में 90 से 150 मी॰ की गहराई में स्थित कठोर चट्टानों को हार्ड पेन कहा जाता है।

8. रेतीली मगरा :- पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश में मरुस्थलीय की मिट्टी को स्थानीय भाषा में रेतीली मगरा के नाम से जाना जाता है।

Note— राज॰ में मगरा नस्ल की भेड़ें भी पाई जाती है।

- मेवाड़ में उदयपुर से लेकर गोगुन्दा तक का पहाड़ी क्षेत्र मगरा के नाम से जाना जाता है।

9. धामासा :- पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश में पायी जाने वाली यह ऐसी वनस्पति है जो मरुस्थल के प्रसार को रोकती है।

10. सूड़ :- इसका शाब्दिक अर्थ खरपतवार को हटाना है। राजस्थान में खेतों में उगने वाले खरपतवार को खेतों में दबाना या उसे उखाड़ कर जलाना स्थानीय भाषा में सूड़ के नाम से जाना जाता है।

11. राजाड़ परियोजना :- चम्बल नदी बेसिन क्षेत्र में सेम की समस्या के समाधान के लिए 1991 में जो परियोजना चलाई गई उसे राजाड़ परियोजना के नाम से जाना जाता है। (कनाडा के सहयोग से)

12. काजरी (CAZRI) – Central Arid Zone Research Institute
[केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान], जोधपुर

इसकी स्थापना 1952 में शुष्क क्षेत्र अनुसंधान के नाम से की गई लेकिन 1959 में इसका नाम काजरी (CAZRI) कर दिया गया है।

→ यह संस्थान मुख्य रुप से राजस्थान में मरुस्थल के प्रसार को रोकने के लिए वृक्षों को लगाना एवं वहां पर उपस्थित वनस्पति पर शोध करना।

13 सुबबूल/विलायती बबूल :
भू संरक्षण की दृष्टि से यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण वृक्ष है, जो मृदा के कटाव पर रोक लगाता है।

14. निराइ-गुडाई (निनाण) :
इसका शाब्दिक अर्थ है → 'खरपतवार हटाना'।
- राज. में भूमि के कटाव को रोकने के लिए प्राथमिक भू परिरक्षण की प्रक्रिया निराइ-गुडाई कहलाती है। इससे भूमि कृषि योग्य बनती है। इससे फसल का उत्पादन अधिक होता है।

15. वाल्दा/चिमाला/कजिया/झुमिंग
वाल्दा/चिमाला/कजिया – अरावली पर्वतमाला
झुमिंग – (असम)

राजस्थान में वन सम्पदा एवं वन्य जीव अभ्यारण्य

* भूमिका :→ वन सम्पदा को "हरा सोना" एवं "मानव का सुरक्षा कवच" कहा जाता है।

वन मानवीय जीवन के लिए प्राचीन काल से आज तक आर्थिक, सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण सिद्ध हुए है।

वन सम्पदा, जीव-जन्तु, मनुष्य आदि को आवास प्रदान करता है। इसी कारण कहा जा सकता है कि भौतिक भूगोल में वन-सम्पदा महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है।

* वनस्पति :- प्राकृतिक रूप से उगने वाले पेड़-पौधे जिसमे मानवीय हस्तक्षेप नहीं पाया जाता वो प्राकृतिक वनस्पति के नाम से जानी जाती है।

निष्कर्ष :- वर्तमान समय में दावानल (जंगलों में लगने वाली आग), जनसंख्या वृद्धि, बढ़ता हुआ शहरी करण, नवीनीकरण एवं मानवीय हस्तक्षेप के द्वारा हमारे ये अमूल्य संसाधन नष्ट होते जा रहे है। अतः धारणीय विकास, पर्यावरण मित्र विकास, मानव हस्तक्षेप पर नियंत्रण, बढ़ते हुए शहरीकरण पर नियंत्रण, जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण आदि को अपनाकर प्राकृतिक वनस्पति का संरक्षण एव संवर्द्धन किया जा सकता है।

* भारत मे सर्वप्रथम वन नीति 1894 को लागू की गयी एवं स्वतंत्रता के बाद प्रथम वन नीति 1952 को लागू की गयी।

→ इसी 1952 की वन नीति में संशोधन करके 1988 में राष्ट्रीय वन नीति घोषित की गई। जिसके अनुसार 33.33% (OR 33%) भू-भाग पर वन होना अनिवार्य है।

→ 1910 में जोधपुर रियासत के द्वारा वन्य जीवों के संरक्षण संबंधी कानून बनाये एवं 1953 में राजस्थान सरकार के द्वारा वन अधिनियम को लागू किया गया।

→ 1953 में जब वन अधिनियम को लागू किया गया उस समय राज्य के कुल 13% भाग पर वन थे।

→ राजस्थान सरकार के द्वारा राज्य की प्रथम वन नीति 2010 को लागू की गई।

→ वर्तमान समय में राज्य के कुल 9.57% (32736.64 वर्ग किमी) क्षेत्र पर वन पाये जाते हैं जो कि देश के कुल वन क्षेत्र का 4.25% है।

→ वनों की दृष्टि से देश में राजस्थान का स्थान 9वाँ है।

→ राजस्थान में सबसे अधिक वन उदयपुर (क्षेत्रफल के हिसाब से) जिले में एवं सबसे कम चुरू जिले में पाये जाते हैं। जबकि भारत में सबसे अधिक वन मध्यप्रदेश में एवं सबसे कम पंजाब में पाये जाते हैं।

राष्ट्रीय उद्यान सबसे ज्यादा – मध्यप्रदेश – 9

II – अण्डमान निकोबार द्वीप समूह

राजस्थान में वनों का वर्गीकरण दो आधारों पर किया गया है।

(करौली → % के आधार पर सबसे ज्यादा वन)

1. प्रशासनिक आधार पर
2. जलवायु के आधार पर

1. प्रशासनिक आधार पर :- वन विभाग के ~~आध~~ द्वारा प्रशासनिक आधार पर वनों के तीन प्रकार है

(i) आरक्षित वन / संरक्षित वन :→ यह राजस्थान में कुल वन क्षेत्र के 38.02% पर स्थित है

→ ये वन सर्वाधिक उदयपुर जिले में पाये जाते है। इन वनों पर पूरी तरह से सरकार का अधिकार होता है अतः इन वनों मे लकड़ी काटना एवं पशु चारण पूरी तरह से वर्जित है।

→ जलवायु की दृष्टि से ये वन राजस्थान में अति महत्वपूर्ण है।

(ii) रक्षित वन / सुरक्षित वन :→ यह राज्य के कुल वन क्षेत्र के 53.48% भू-भाग पर स्थित है। जो कि सर्वाधिक बारां जिले मे पाये जाते है।

→ इन वनों पर भी सरकार का नियंत्रण होता है लेकिन सरकार की आज्ञा के आधार पर सीमित क्षेत्र में लकड़ी काटने एवं पशु चराने का काम किया जाता है।

→ ये वन भी राजस्थान में जलवायु की दृष्टि से महत्वपूर्ण होते है

(iii) अवर्गीकृत वन :—

→ ये वन राज्य के कुल वन क्षेत्र के 8.50% भू-भाग पर स्थित है। ये वन सर्वाधिक बीकानेर जिले में पाये जाते है। इन वनों मे लकड़ी काटने व पशु चराने पर कोई

प्रतिबंध नहीं है। लेकिन इन वनों मे लकड़ी काटने के लिए सरकार की अनुमति जरूरी है।

2- जलवायु के आधार पर वनों का वर्गीकरण :- जलवायु के आधार पर वनों को पांच भागों में बांटा गया है।

(i) शुष्क सागवान वन
(ii) उष्ण- कटिबंधीय शुष्क एवं धोंक वन
(iii) उष्ण - कटिबंधीय कांटेदार वन
(iv) उष्ण कटिबंधीय मिश्रित पतझड़ वन
(v) अर्द्ध आर्द्र सदाबहार वन

(i) शुष्क सागवान वन :- ये वन राजस्थान मे मुख्य रूप से उदयपुर, डुंगरपुर, बांसवाड़ा, झालावाड़, बांरा एवं प्रतापगढ़ चित्तौड़ मे पाये जाते है।

→ ये वन कुल वन क्षेत्र के 6.87 % (लग.) भू-भाग पर है
→ इन वनों के क्षेत्रो मे वर्षा 70-110 cm. तक होती है। इन वनों की उंचाई 10-21 Meter तक होती है। इन वनों मे मुख्य रूप से आम, सागवान, महुआ, बांस, बरगद आदि पाये जाते है।

→ प्रतापगढ़ के सीता माता अभ्यारण्य मे ये वन सर्वाधिक पाये जाते है।

(ii) उष्ण कटिबंधीय शुष्क एवं धोंक वन :- ये वन मुख्य रूप से अर्द्ध शुष्क जलवायु प्रदेश के क्षेत्रों मे पाये जाते हैं।

→ ये वन राज्य के कुल वन क्षेत्र का 58.19% है। इन वनों में मुख्य रूप से कांटेदार वृक्ष पाये जाते हैं। खेजड़ी, केर, बेर, रोहिड़ा, आक आदि पाये जाते हैं।

→ इन वनों के क्षेत्रों में वर्षा 25-50 cm. तक होती है।

(iii) उष्ण कटिबंधीय कांटेदार वन :- यह मुख्य रूप से शुष्क जलवायु प्रदेशों मे पाये जाते है जो कि कुल वन क्षेत्र का 6.23% है। इन वनों में मुख्य रूप से मरुदभिद वनस्पति पायी जाती है।

→ इस क्षेत्र में वर्षा 0-20/25 cm. तक होती है।

(iv) उष्ण कटिबंधीय मिश्रित पतझड़ वन : ये वन राजस्थान के पूर्वी मैदानी प्रदेशो मे अत्यधिक पाये जाते है जो कि राज्य के कुल वन क्षेत्र के 28.42% है। इन वनों में → मुख्य रूप से शीशम, साल, सागवान, नीम, पीपल, शहतूत, खेजड़ी आदि आते है। वर्षा - 50-80 cm.

(v) अर्द्ध आर्द्र सदाबहार वन :- ये वन राजस्थान मे सिरोही के माउंट आबू क्षेत्रों में अधिक ऊंचाई पर पाये जाते है जहां पर वर्षा 150 cm. तक होती है। ये वन राज्य के कुल वन क्षेत्र का 0.38% है। ये वन सदा हरे-भरे रहने के कारण सदाबहार कहलाते है। जिसमे मुख्य रूप से आम, जामुन, बरगद के वृक्ष पाये जाते है।

Ques **Imp** राजस्थान मे कितने राष्ट्रीय उद्यान है उनका विस्तार से वर्णन कीजिए-

* 3- राष्ट्रीय उद्यान

(i) रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान :- सवाईमाधोपुर → 392 वर्ग किमी

→ यह राजस्थान का प्रथम राष्ट्रीय उद्यान है जिसे 1 नवम्बर 1980 को राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा दिया गया।

→ विश्व वन्य जीव कोष के द्वारा चलाये गये टाइगर प्रोजेक्ट (1973) मे इसे ~~1973~~-1974 मे शामिल किया गया। जो कि राजस्थान की प्रथम बाघ परियोजना मानी जाती है यह देश की सबसे छोटी बाघ परियोजना है जिसे भारतीय बाघो का घर कहा जाता है।

→ इस राष्ट्रीय उद्यान मे त्रिनेत्र गणेश जी का मंदिर, जोगी महल एवं न्याय की छतरी (32 खंभो की छतरी) स्थित है।

→ इस अभ्यारण्य में मुख्य रुप से बाघ, शेर, बघेरा, भेड़ बगा, हिरण, नील गाय आदि वन्य जीव पाये जाते है।

(ii) केवलादेव घना पक्षी विहार :- भरतपुर, NH-11, 29 Km^2

→ इसे अभ्यारण्य का दर्जा 1956 मे एवं राष्ट्रीय उद्यान 26 Aug. 1981 को घोषित किया गया जो कि राजस्थान का दूसरा राष्ट्रीय उद्यान है।

{ स्वर्णिम त्रिकोण परिपथ दिल्ली - आगरा - जयपुर }

→ UNESCO के द्वारा 1985 A.D. मे इसे विश्व प्राकृतिक धरोहर की सूची में शामिल किया गया।

NOTE :- विश्व प्राकृतिक धरोहर की सूची मे शामिल स्थान

(i) मानस (Assam)

(ii) काजीरंगा (Assam)

(iii) सुन्दरबन (W.B.)

(iv) नन्दादेवी (उत्तराखंड)

(v) केवलादेव (Raj. - Bharatpur)

(vi) भितरकनिका (Orissa)

*→ इस राष्ट्रीय उद्यान को पक्षियों का स्वर्ग एवं एशिया की सबसे बडी पक्षी प्रजनन स्थली के नाम से जाना जाता है।

→ यहां मुख्य आकर्षण का केन्द्र साइबेरियन सारस एवं पायथन पोइन्ट पर मिलने वाला अजगर है।

→ यह राष्ट्रीय उद्यान Dr. Saleem ali की कार्यस्थली रहा है। इसमें राजस्थान की प्रथम वन्य जीव प्रयोगशाला एवं दूसरा सर्प उद्यान विकसित किया जा रहा है।

I^st^ Snake park - कोटा

3. मुकन्दरा हिल्स या दर्रा अभ्यारण्य :-

→ कोटा – झालावाड   proper place – कोटा

→ 274 वर्ग किमी

Imp इस अभ्यारण्य मे कोटा के महाराव मुकुन्द सिंह के द्वारा अवली मीणी महलों का निर्माण करवाया गया है जिन्हे राजस्थान का दूसरा ताजमहल कहा जाता है।

→ इस अभ्यारण्य में सर्वाधिक हिरामन तोते / गागरोनी तोते / हिन्दुओं का आकाश लोचन पाये जाते है।

→ इसे राजस्थान का तीसरा राष्ट्रीय उद्यान 9 Jan. 2012 को एवं तीसरी बाघ परियोजना 10 April 2013 को घोषित किया गया।

→ इस अभयारण्य में सर्वाधिक देववन पाये जाते है।

राजस्थान के अभ्यारण्य

1. **सरिस्का** :- अलवर, 492 वर्ग किमी

→ इसे 1955 मे अभ्यारण्य का दर्जा एवं 1978 मे बाघ परियोजना में शामिल किया गया। यह राजस्थान की सबसे बड़ी एवं दूसरी बाघ परियोजना है।

→ इस अभ्यारण्य में ~~hotel tiger Day~~ Dan का संचालन RTDC (राज. पर्यटन विकास निगम) के द्वारा किया जाता है।

→ इस अभ्यारण्य मे 4 धार्मिक स्थल है.

* तालवृक्ष → माण्डव्य ऋषि की तपो स्थली
* भर्तृहरी का मंदिर → कनफड़े नाथ की शरण स्थली
* पाण्डुपोल → सोते हुए / शयन मुद्रा मे हनुमानजी
* नीलकंठ → नृत्यरत गणेश की प्रतिमा

→ राजस्थान में सबसे अधिक हरे कबूतर सरिस्का अभ्यारण्य में पाये जाते है।

→ इस अभ्यारण्य में सबसे अधिक मोर पाये जाते है।

* राष्ट्रीय पक्षी – मोर – 1963 A.D. में घोषित

2. राष्ट्रीय मरु उद्यान :- जैसलमेर – बाड़मेर

1900 Km^2 + 1262 Km^2 → 3162 Km^2

→ यह राजस्थान का सबसे बड़ा ~~उद~~ अभ्यारण्य है जिसे 8 May 1981 को अभ्यारण्य का दर्जा दिया गया।

→ इस अभ्यारण्य में मुख्य आकर्षण का केन्द्र पवित्र सर्प एवं गोडावण पक्षी है।

→ इस अभ्यारण्य में आकल वुड फॉसिल्स पार्क एवं भाठी सिरीज स्थित है।

3. सिता माता अभ्यारण्य :- प्रतापगढ़, 326 Km^2

→ चितल की मातृभूमि

→ सर्वाधिक सागवान के वृक्ष

→ यहां एंटीलोप प्रजाति का चौसिंगा पाया जाता है।

→ राजस्थान में सबसे अधिक औषधि

→ विश्व प्रसिद्ध उडन गिलहरियां जिन्हे स्थानीय भाषा में मशोवा ~~मसौवा~~ कहा जाता है।

* → कर्ममोचिनी नदी का उद्गम स्थल

→ ठण्डे व गर्म जल के दो स्रोत → लव-कुश

→ इस अभ्यारण्य से जाखम नदी गुजरती है।

4. कुम्भलगढ़ अभ्यारण्य :- उदयपुर - राजसमंद - पाली

→ यह अभ्यारण्य भेड़िए के प्रजनन के लिए विश्व प्रसिद्ध है।

→ इस अभ्यारण्य में पाली के प्रसिद्ध रणकपुर जैन मंदिर (1444 खंभो का) स्थित है. जो मघाई नदी के किनारे स्थित है जिसका निर्माण देपाक ने करवाया

5. ताल छापर अभयारण्य : चुरु

→ यह अभयारण्य काले हिरणों के लिए प्रसिद्ध है। इस अभ्यारण्य में मोथिया साइप्रस रोटन्डस नामक नरम घास पायी जाती है।

6. सज्जनगढ़ अभ्यारण्य :- 5.2 km² → सबसे छोटा अभयारण्य

→ इस अभयारण्य में राजस्थान का दूसरा जैविक पार्क विकसित किया गया है।

I^st Biological park - नाहरगढ़ (जयपुर) अभयारण्य

↓

राज्य का प्रथम भालू बचाव केन्द्र स्थापित किया गया है।

अभयारण्य		स्थान
7. बस्सी अभयारण्य	—	चित्तौड़गढ़
8. भैंसरोड़गढ़ "	—	चित्तौड़गढ़
9. रावली टॉडगढ़ "	—	अजमेर, पाली, राजसमंद

↓
यह राजस्थान के तीन संभागों में स्थित है।

10. चम्बल घड़ियाल " — कोटा (राजस्थान, UP, MP)
↓
देश का एकमात्र नदी पर स्थित है।
अभयारण्य एवं अंतर्राज्यीय अभयारण्य है।

11. गजनेर अभयारण्य — Bikaner
यह रेत के तीतर के लिए प्रसिद्ध है।
↓
it is also called बरबड़ पक्षी

12. जमवा रामगढ़ अभयारण्य — Jaipur

13. फुलवारी की नाल अभयारण्य — उदयपुर

14. रामसागर वन विहार अभयारण्य — धौलपुर

15. केसरबाग अभयारण्य — धौलपुर

राजस्थान के प्रमुख मृग वन :- 7

1. दुर्ग मृग वन – 1969 A.D. – चित्तौड़गढ़
2. सज्जनगढ़ मृग वन – 1984 A.D. – Udaipur
3. मचकुंड पुष्कर मृग वन – 1985 A.D. – Ajmer
4. माचिया सफारी पार्क मृग वन – 1985 A.D. – Jodhpur
5. अशोक विहार मृग वन – 1986 A.D. – Jaipur
6. संजय उद्यान मृग वन – 1986 A.D. – Jaipur
7. अमृतादेवी मृग वन – 1994 A.D. – Jodhpur

TRICK दुर से मृ मा आकर संजय को आम दिया
1. 2. 3. 4. 5 6. 7.

राजस्थान के प्रमुख जन्तु आलय – 5

1. जयपुर जन्तुआलय :→ यह राजस्थान का सबसे बड़ा एवं प्रथम जन्तुआलय है। जिसकी स्थापना 1876 में जयपुर के महाराजा रामसिंह द्वितीय के द्वारा रामनिवास बाग में की गई है।
→ यह जन्तुआलय मगरमच्छो के कृत्रिम प्रजनन के लिए प्रसिद्ध है।

2. उदयपुर जन्तुआलय :→ इसकी स्थापना मेवाड़ के महाराणा स्वरूप सिंह के द्वारा 1878 मे उदयपुर के गुलाब बाग में की गई।

3. बीकानेर जन्तुआलय :- 1922

4. जोधपुर जन्तुआलय :- 1936

4. जोधपुर जन्तुआलय – 1934
→ यह गोडावण पक्षी के कृत्रिम प्रजनन के लिए प्रसिद्ध है।

5. कोटा जन्तुआलय – 1954 A.D.

(33) – राजस्थान के प्रमुख शिकार निषिद्ध क्षेत्र / आखेट निषिद्ध क्षेत्र

1. राजस्थान का सबसे बड़ा शिकार निषिद्ध क्षेत्र → फोरसर संवत्सर – चुरू

2. सबसे छोटा – सैंथल सागर – जयपुर

NOTE :→ राजस्थान में सबसे अधिक शिकार निषिद्ध क्षेत्र बीकानेर में है। (7)
जोधपुर में – 5
अजमेर – 3

राजस्थान के वनमंडल – 13

1. जोधपुर → (9 जिले)
2. जयपुर वनमंडल – जयपुर, दौसा, सीकर, झुंझुनु
3. भरतपुर वनमंडल – अलवर - भरतपुर, धौलपुर, करौली
4. अजमेर वनमंडल –
5. टोंक वनमंडल – भीलवाड़ा – टोंक
6. कोटा "
7. बूंदी "
8. बारां "

9. झालावाड़ वनमंडल

10. चित्तौड़ वनमंडल

11. बांसवाड़ा वनमंडल

12. उदयपुर वनमंडल - उदयपुर- राजसमंद

13. सिरोही वनमंडल - सिरोही

राजस्थान की प्रमुख वनस्पतियों के प्रकार

~~खेजर~~

1. खेजड़ी :- इसे राजस्थानी भाषा में "सीमलो" तथा इसे धार्मिक ग्रंथो में "शमी", राजस्थान का कल्प वृक्ष, मरुस्थल का सागवान, सफेद कीकर, राजस्थान का राज्य वृक्ष [31 Oct. 1983 A.D.] आदि उपनामो से जाना जाता है।

Scientific Name - prosopis sinereria (प्रोसोपिस सिनेरेरिया)

→ सिंधी भाषा में इसे "धोकड़ा" कहते है।

→ राजस्थान में दशहरे के पर्व पर इस वृक्ष की पूजा की जाती है।

→ इस वृक्ष से संबंधित "रुख भायला" ~~का~~ एवं खेजड़ा ऑपरेशन (1951 A.D.) संबंधित है।

2. पलाश / ढोंक :- इसे स्थानीय भाषा में "खाखरा" कहा जाता है।

→ इस वृक्ष पर फाल्गुन के माह में लाल व पीले रंग के फूल खिलते है इसी कारण इसे जंगल की आग / Flame of the Forest कहा जाता है।

→ इस वृक्ष की लकड़ी अधिक मजबूत होती है जिससे फर्नीचर कृषि के औजार, एवं ईंधन के लिए लकड़ी प्राप्त होती है।

→ यह वृक्ष मुख्य रूप से चित्तौड़, उदयपुर, डूंगरपुर, बाँसवाड़ा, बारां, झालावाड़, कोटा आदि स्थानों पर पाया जाता है।

3. सागवान :- सागवान का वृक्ष राजस्थान में बांसवाड़ा चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़, झालावाड़ आदि स्थानों पर पाया जाता है जो कि राज्य के कुल वन क्षेत्र का 7% है।

→ इस वृक्ष की लकड़ी अत्यधिक मजबूत होती है। जिससे अनेक उपयोगी वस्तुएं बनायी जाती हैं।

खेजड़ली गांव :- जोधपुर में महलों के निर्माण के लिए चूना पकाने के लिए ईंधन की आवश्यकता पड़ने पर जोधपुर के राजा अभयसिंह राठौड़ के द्वारा वनों से लकड़ी काटने का आदेश दिया गया तब हकीम दास गिरधर भण्डारी के द्वारा जालियावाड़ा नामक स्थान से वृक्ष काटना प्रारम्भ किया गया। वृक्षों के कटने की आवाज सुनकर अमृता देवी (इमरती देवी) आकर वृक्ष से लिपट जाती है।

28 Aug 1730 A.D. को वृक्षों के रक्षार्थ 363 लोगों के द्वारा अपना बलिदान किया गया। उसी की याद में प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ल दशमी को एक विशाल मेला लगता है जो कि विश्व का सबसे बड़ा वृक्ष मेला है।

NOTE :- वृक्षों को बचाने के लिए पहला बलिदान 1604 में जोधपुर के रामासड़ी गांव के कर्मा एवं गोरा के द्वारा किया गया।

वन नीति - 2010 :- राजस्थान में वनों के संरक्षण एवं सवर्द्धन के लिए 17 feb. 2010 को राजस्थान की प्रथम वन नीति को लागू किया गया।

बांस :- आदिवासियों के "हरा सोना" के नाम से प्रसिद्ध यह वृक्ष राजस्थान में बांसवाड़ा, डूंगरपुर, सिरोही, उदयपुर आदि जिलों में पाया जाता है।
इसका उपयोग मुख्यत चारपाई बनाने, झोपड़ी बनाने में आदि के रूप में किया जाता है।

महुआ :- यह आदिवासियों का कल्प वृक्ष कहलाता है। इसका फल खाने एवं तेल बनाने के काम आता है एवं आदिवासियों के द्वारा इससे "मावड़ी" नामक शराब बनायी जाती है। यह वृक्ष मुख्यत बांसवाड़ा, सिरोही, झालावाड़, बांरा आदि जिलों में पाया जाता है।

खस घास :- इसका उत्पादन सवाई माधोपुर, टोंक, भरतपुर में होता है एवं इस घास से सुगंधित तेल, इत्र एवं शर्बत बनायी जाती है।

बुर घास :- यह मुख्य रूप से भरतपुर जिले में पायी जाती है।

सेवण घास :- यह घास मुख्य रुप से जैसलमेर जिले मे लाठी सिरीज पर पायी जाती है।

→ इस घास पर गोडावण पक्षी अण्डे देता है इसी कारण इसे गोडावण की शरण स्थली कहा जाता है।

→ जैसलमेर ~~क्षत्र~~ मे इस घास का सर्वाधिक उपयोग भेड़ो के लिए किया जाता है।

Scientific Name - लसियुरस सिडीकुस

बूर :- रेगिस्तान में पायी जाने वाली सुगंधित घास जो मुख्य रुप से बीकानेर के कोलायत, देशनोक, नोखा आदि स्थानों पर पायी जाती है।

पचकुड़ा :- राजस्थान में पांच प्रकार के फल एवं बीजों से पचकूड़ा नामक सब्जी तैयार की जाती है। यह मुख्यत ~~शीतलाष्टमी~~ शीतलाष्टमी को बनायी जाती है। इसमें मुख्य रुप से सांगरी, केर, काचरी, कूमट के बीज, गूंदा के फल होते है।

केसर- छांटा :- दक्षिणी राजस्थान मे जब ग्रामीण जन किसी वन क्षेत्र की सुरक्षा हेतु संकल्प लेते है तो वो किसी मंदिर में जाकर केसर एकत्रित करते है। एवं निर्धारित दिन पर ढोल बजाते हुए वन क्षेत्र में जाकर हरे पेड़ो पर केसर छिड़कते है। एवं उनकी रक्षा के लिए एक व्यक्ति को नियुक्त किया जाता है।

हरे वृक्ष काटने वाले व्यक्ति को सज़ा का प्रावधान होता है

* होहोबा - जोजोबा :- पीले सोने के नाम से प्रसिद्ध इसका उत्पादन अमेरिका के मरुस्थलीय प्रदेश में किया जाता है। राजस्थान में इसे इजराइल की सहायता से गंगानगर, जोधपुर, चुरू व जयपुर में उत्पादित किया जा रहा है।

इसके बीजों में 40-60% तेल की मात्रा होती है।

बीड़ :- शेखावाटी क्षेत्र में चारागाह एवं घास के मैदानों को स्थानीय भाषा में बीड़ कहा जाता है।

तेंदू / टिमरु :- तेंदू के पत्ते से बीड़ी बनायी जाती है इसका उत्पादन उदयपुर, चित्तौड़, झालावाड़, बांसवाड़ा एवं बारां में होता है। लेकिन राजस्थान में बीड़ी के प्रमुख केन्द्र अजमेर, किशनगढ़, ब्यावर, पाली, भीलवाड़ा, कोटा एवं, टोंक व नसीराबाद में स्थित है।

→ तेंदू पत्ते का राष्ट्रीयकरण 1974 में किया गया है।

कत्था :- खैर वृक्ष के तने के आंतरिक भाग को उबालकर हांडी प्रणाली से कत्था बनाया जाता है। राजस्थान में कत्थे का वार्षिक उत्पादन 400-500 टन तक होता है। इसके राजस्थान में प्रमुख केन्द्र उदयपुर, चित्तौड़ झालावाड़, बूंदी, कोटा, भरतपुर, जयपुर में है।

टसर :- राज्य में टसर या कृत्रिम रेशे का विकास कोटा उदयपुर, बांसवाड़ा में किया गया। जिसमें अर्जुन के वृक्ष लगाकर रासायनिक विधि से कृत्रिम रेशम बनाया जाता है।

अम्बरतरी :- यह उपोष्ण कटिबंधीय सदाबहार वन क्षेत्र में आबू पर्वत क्षेत्र में पाया जाता है।

→ इसका वैज्ञानिक नाम दिकिल_परेरा आबू एसिंस है।

→ यह विश्व में केवल सिरोही के माउंट आबू क्षेत्र में पायी जाती है।

चौहटन क्षेत्र :- बाड़मेर के चौहटन क्षेत्र में गोंद का सर्वाधिक उत्पादन होता है इसके अलावा यहां पर सुईयों का मेला प्रसिद्ध है। इसे भारत का सूडान कहा जाता है।

धोंक / धोकड़ा :- राजस्थान में सबसे अधिक लगभग 60% धोंक का वृक्ष पाया जाता है।

यह शुष्क गर्म प्रदेश का वृक्ष है। इसका उपयोग मुख्य रूप से कोयला बनाने में किया जाता है।

रोहिड़ा :- इसे मरुस्थल का सागवान, ~~मारवाड़ी~~ मारवाड़ टीक, एवं इसका वैज्ञानिक नाम टिकोमेला एन्डुलेटा है। रोहिड़ा इमारती लकड़ी के लिए प्रसिद्ध है।

इस पर खिलने वाले फूल केसरिया एवं पीले रंग के रेगिस्तान में सुंदरता को बढ़ाते हैं।

बांगड़ का कल्प वृक्ष :- बांगड़ में बांसवाड़ा शहर से रतलाम मार्ग पर बाईं तालाब क्षेत्र पर एक प्राचीन कुंज में राजा व रानी कल्प वृक्ष है।

→ रानी पर बैंगन के आकार के पुष्प एवं राजा पर पुष्प नहीं खिलते।

देववन :- प्राचीन समय में वन प्रबंधन के लिए चलायी गई पद्धति को देववन के नाम से जाना जाता है।

* → कोटा के समीप दांड देवी वन क्षेत्र में स्थित देववन ~~क्षेत्र~~ राज्य में सर्वाधिक जैव-विविधता वाला क्षेत्र है।

* → रामगढ़ विषधारी वन खण्ड का धोंक वृक्ष वन क्षेत्र प्रसिद्ध देववन है।

* → छीपाबड़ोद (बारां) के समीप देव नारायण में स्थित वन क्षेत्र देववन के लिए प्रसिद्ध है।

* → सोरसन (बारां) में ब्राह्मणी माता का देववन प्रसिद्ध है।

→ उदयपुर वन मण्डल द्वारा 1992 में देव वन संरक्षण अभियान चलाया गया।

राजस्थान मे वनो / वन संवर्द्धन से संबंधित पुरस्कार

1. अमृता देवी स्मृति पुरस्कार :- यह पर्यावरण से संबंधित राज्य का सर्वोच्च पुरस्कार है।

→ इसकी शुरुआत 1994 में किया गया। यह पुरस्कार पाने वाला प्रथम व्यक्ति श्री गंगा राम बिश्नोई है।

→ यह पुरस्कार संस्थागत श्रेणी मे एवं व्यक्तिगत श्रेणी में प्रदान किया जाता है।

संस्थागत श्रेणी - 50,000/-

व्यक्तिगत - 25,000/-

→ 2013 का संस्थागत श्रेणी में दिया गया पुरस्कार दुडकी ग्राम पंचायत जिला दौसा को दिया गया।

→ 2014 का व्यक्तिगत स्वर्गीय श्री शैतान सिंह को दिया गया।

2. वानिकी पंडित पुरस्कार :- राजस्थान का यह दूसरा सर्वोच्च पुरस्कार है।

3. इंदिरा प्रियदर्शिनी वृक्ष मित्र पुरस्कार :- यह पुरस्कार वृक्षारोपण एवं परती भूमि के विकास हेतु दिया जाता है। यह पुरस्कार उदयपुर जिले की शालू खेड़ा वन समिति द्वारा दिया जाता है।

अब इस पुरस्कार का नाम बदलकर "पन्नाधाय वृक्ष मित्र पुरस्कार" कर दिया गया है।

NOTE :- इन पुरस्कारों के अलावा राजस्थान में

* वनपाल पुरस्कार
* वन रक्षक पुरस्कार
* कैलाश सांखला वन्य जीव संरक्षण पुरस्कार आदि दिये जाते हैं।

राजस्थान में वानिकी विकास से संबंधित योजनाएं

1. अरावली वृक्षारोपण योजना :- यह कार्यक्रम 1992 को राजस्थान के 10 जिलों में प्रारम्भ किया गया।

जयपुर, अलवर, सीकर, झुंझुनु, नागौर, पाली, बांसवाड़ा सिरोही, उदयपुर, चित्तौड़

→ अरावली क्षेत्र के नष्ट हुए पारिस्थितिकी तंत्र को मूल अवस्था में लाने के लिए जापान की एक संस्था OECF (ओवरसीज इकॉनोमिक कॉपोरेशन फण्ड) के सहयोग से इस परियोजना को प्रारम्भ किया गया।

वर्तमान समय में OECF का नाम बदलकर JBIC (Japan Bank for International Co-operation) रखा गया है।

2. पंचवटी अभियान :- यह अभियान 1 April 2007 को प्रारम्भ किया गया। इस अभियान को प्रारम्भ करने का मुख्य उद्धेश्य आयुर्वेदिक विभाग के सभी संस्थाओं के द्वारा कम से कम पांच पौधे लगाना अनिवार्य था।

3. वानिकी विकास परियोजना :- 1995 A.D.
→ जापान की प्रमुख संस्था OECF के सहयोग से 15 गैर-मरुस्थलीय जीलों में यह परियोजना प्रारम्भ की गई। जिसमें जन सहभागिता से वृक्षा रोपण एवं चरागाहों का विकास करके पारिस्थितिकी की पुनः स्थापना की गई।

4. राज्य वानिकी कार्य योजना :- 1996-2016 A.D. तक राज्य वन विभाग ने राज्य के संकर ग्रस्त वनों की स्थिति से निपटने के लिए एक 20 वर्षीय कार्य योजना तैयार की गई।

* NOTE :- राजस्थान वन-विभाग की स्थापना - 1950 A.D.

5. एकीकृत बंजर भूमि विकास परियोजना :- / पटल योजना
→ 1991 A.D.
→ डूंगरपुर जिले में SIDA (swidish सिडमूस इंटरनेशनल डवलप एजेंसी) के सहयोग से यह योजना प्रारंभ की गई।

जिसमें वन-विकास, सिंचाई, पशुपालन एवं वन संरक्षण को बढ़ावा दिया जा रहा है।

NOTE SIDA के सहयोग से इसरी भूमि विकास परियोजना दुर्गापुरा जयपुर में चलाई जा रही है।

6. सामाजिक वानिकी योजना :→ 1985-86 A.D.

→ वृक्षारोपण का कार्य * जन सहभागिता, पंचायतों तथा स्थानीय लोगों के सहयोग से करवाने के लिए विश्व बैंक की सहायता से यह योजना शुरू की गई। एव राज्य में सर्वाधिक वानिकी का विकास इसी योजना से हुआ है।

→ यह 7 वीं पंच वर्षीय योजना में चलाई गई है।
[1985-1990 A.D.]

खनिज - संसाधन

* ऐसे खनिज जिन पर राजस्थान का एकाधिकार है

1. पन्ना
2. जास्पर
3. तामड़ा (Garnet) / रक्त मणि
4. वोलेस्टेनाइट

* वे खनिज जिनमें उत्पादन में राजस्थान प्रथम स्थान पर है।

1. जस्ता (97%)
2. फ्लोराइड (96%)
3. एस्बेस्टॉस (96%)
4. रॉक फॉस्फेट (95%)
5. जिप्सम (94%)
6. चूना-पत्थर (93%)
7. खड़िया मिट्टी / क्लेर (92%)
8. घीया पत्थर / ~~Soft~~ Soap Stone (90%)
9. चांदी (80%)
10. मकराना (मार्बल) - 75%
11. सीसा - 75%
12. फेल्सपार - 75%
13. टंगस्टन - 75%
14. कैल्साइट - 70%
15. फायर क्ले - 65%
16. इमारती पत्थर - 60%
17. बेन्टोनाइट - 60%
18. कैडमियम - 60%

* वे खनिज जिनकी राजस्थान में कमी है।

लौहा, कोयला, मैंगनीज, खनिज-तेल, ग्रेफाइट

भूमिका :- वर्तमान समय में खनिज अर्थव्यवस्था का आधार स्तम्भ एवं रीढ़ है। इनके बिना वर्तमान विज्ञान एवं प्रगति के क्षेत्र में विकास की संभावना नहीं की जा सकती। इसी कारण भारत जैसे विकासशील देशों में खनिज सम्पदा का महत्वपूर्ण योगदान है।

खनिज :- भूमि को खोदकर निकाले गये प्राकृतिक, रासायनिक तत्व जो कि अजैविक क्रियाओं के द्वारा बनते है खनिज कहलाते है।

जिन स्थानों से खोदकर खनिज निकाले जाते है उन स्थानो को खान कहा जाता है।

राजस्थान में खनिज से संबंधित महत्वपूर्ण संस्थाएँ

1. राजस्थान राज्य खनिज विकास निगम :- इसकी स्थापना कम्पनी अधिनियम 1956 के अंतर्गत 27 sept. 1979 को की गई। बाद में 20 feb. 2003 को इसका राजस्थान राज्य खान एवं खनिज लिमिटेड में विलय कर दिया गया।

2. राजस्थान राज्य खान एवं खनिज लिमिटेड :- इसकी स्थापना 1948 में बीकानेर जिप्सम लिमिटेड के नाम से की गई। लेकिन 1974 के बाद में इसका नाम राजस्थान राज्य खान एवं खनिज लिमिटेड कर दिया गया।

इसके प्रमुख कार्य :-

(i) उदयपुर के झामड़-कोटड़ा नामक स्थान पर रॉक फास्फेट का कार्य इसी संस्था के द्वारा किया जाता है।

(ii) गिरल बाड़मेर में 125 MW का विद्युत संयंत्र इसी के द्वारा स्थापित किया गया है।

(iii) जैसलमेर के बड़ाबाग नामक स्थान पर 106.3 MW की विद्युत इकाईयां इसी के द्वारा स्थापित की गई है।

- 2001 — 4.9 MW
- 2002 — 4.9 MW
- 2004 — 5 MW
- 2004-05 — 7.5 MW
- 2005-2006 — 15 MW
- 2006 —
- 2007-08 — 22.5
- 2008-09 — 15 MW
- 2009-10 — 31.5

(iv) राजस्थान राज्य खान एवं खनिज लिमिटेड, राष्ट्रीय केमिकल एण्ड फर्टिलाइजर लिमिटेड दोनो के द्वारा 425 करोड़ रु. की लागत से राजस्थान राष्ट्रीय केमिकल एण्ड फर्टीलाइजर लिमिटेड के नाम से DAP (खाद) का कारखाना चित्तौड़गढ़ में स्थापित किया गया है।

DAP → diammonium phosphate

→ जिसकी प्रतिवर्ष उत्पादन क्षमता 2.55 लाख टन है।

3. हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड :- खेतड़ी (झुंझुनूं) — 1967
4. हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड – देबारी (उदयपुर) – 1966
5. भारतीय खनिज ब्यूरो – 1948 नागपुर (बारां)
6. खनिज अंवेषण निगम लि. – नागपुर – 1972

खनिजों से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य

* खनिज मूल्य की दृष्टि से – बिहार (13.1) > MP > गुजरात > Assam > Rajasth (5.7)
* खनिज उत्पादन " → Jharkhand > Raj.

→ राजस्थान का भारत मे खनिज उत्पादन की दृष्टि से 22% योगदान है। जिसमें से 15% धात्विक खनिजों का तथा 25% अधात्विक खनिजों का एवं 26% लघु खनिजों का योगदान है।

→ राजस्थान का भारत मे उत्पादन की दृष्टि से झारखंड के बाद दूसरा स्थान है।

→ राजस्थान (5.7%) का भारत में मूल्य की दृष्टि से 5 वां स्थान है। (5.7%)
प्रथम स्थान - बिहार -(13.1), MP

→ राजस्थान का अधात्विक खनिजो की दृष्टि से भारत मे प्रथम स्थान है। एवं धात्विक खनिजो की दृष्टि से 4 स्थान है

→ राजस्थान मे 67 प्रकार के खनिज पाए जाते है। इसी कारण इसे "खनिजों का अजायबघर" कहा जाता है।

→ लेकिन खनिजो का दोहन अवैज्ञानिक दृष्टि से होने के कारण राजस्थान मूल्य की दृष्टि से पिछड़ा हुआ है।

राज. मे खनिजो के प्रकार

1. धात्विक खनिज :- वे खनिज जो रासायनिक क्रिया के द्वारा अन्य खनिजों से अलग कर दिये जाते है एवं यह अयस्क के रूप मे पाये जाते है।

NOTE :- जिन खनिजों के पीछे UM / यम / अम आता हो वे सभी खनिज धात्विक खनिज होते है।

जैसे लोहा, तांबा, सीसा, जस्ता, टंगस्टन, मैंगनीज सोना, चांदी, यूरेनियम, प्लेटिनम, कैडमियम, आदि

2. अधात्विक खनिज :- वे खनिज जिन्हे रासायनिक क्रिया के द्वारा अन्य खनिजों से अलग नही किया जा सके अधात्विक खनिज कहलाते है।

→ इन खनिजों को औद्योगिक खनिज के नाम से भी जाना जाता है।

eg- अभ्रक, जिप्सम, रॉक फॉस्फेट, चूना पत्थर, संगमरमर, घीया पत्थर, फेल्सपार, आदि

3. ईंधन खनिज :- ये खनिज ऊर्जा के प्रमुख स्रोत होते है इन खनिजो मे मुख्य रूप से प्राकृतिक, तेल, प्राकृतिक गैस एवं कोयला आता है।

→ इन खनिजों से मुख्य रुप से ऊर्जा प्राप्त की जाती है।

धात्विक खनिज

1. लौहा :- राजस्थान में लौहा मुख्य रुप से अरावली के उत्तर पूर्व एवं दक्षिण-पूर्व में पाया जाता है।

लौहा अयस्क चार प्रकार का होता है।

(i) मैग्नेटाइट - 74%

(ii) हेमेटाइट - 64%

(iii) लिमोनाइट - 50%

(iv) सिडेराइट - 40%

→ राजस्थान में मुख्य रुप से लौहे का उत्पादन निम्न स्थानों पर होता है एवं राजस्थान में हेमेटाइट व लिमोनाइट लौह अयस्क पाया जाता है।

प्रमुख खान

* मोरीजा - बानोल - जयपुर
* नीमला - रायसेला - दौसा
* सिंघाना डाबला - झुंझुनुं
* नीम का थाना - सीकर
* थूर हुण्डेर - उदयपुर
* नाथरा की पाल - उदयपुर

→ राजस्थान में सबसे अधिक लौहे का उत्पादन जयपुर जिले से होता है। यह हेमेटाइट प्रकार का है।

2. सीसा-जस्ता :- सीसे जस्ते के अयस्क को गेलेना (PbS) कहा जाता है। यह अयस्क मिश्रित रूप में मिलने के कारण इसे जुड़वा खनिज भी कहते है।

→ राजस्थान में जिन स्थानों पर सीसे जस्ते का उत्खनन होता है उन्ही स्थानों से चांदी व तांबा का उत्खनन होता है।

प्रमुख खान

* जावर खान :→ उदयपुर
  → यह देश की सबसे बड़ी जस्ते की खान है।
* राजपुर- दरीबा :- राजसमंद
* पुर- दरीबा - भीलवाड़ा
* रामपुरा - आगूचा - भीलवाड़ा
* गुडा किशोरी दास - अलवर
* चौथ का बरवाड़ा - सवाई माधोपुर
* मोचिया मगरा - उदयपुर
* रेल - मगरा - राजसमंद
* रघुनाथगढ़ - सीकर

→ राजस्थान में जस्ते के उत्खनन के लिए दो संयंत्र स्थापित किये गये है।

(i) हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड - उदयपुर :→ इसकी स्थापना केन्द्र सरकार के द्वारा की गई जो मुख्य रूप से देवारी नामक स्थान पर उत्खनन का कार्य करता है।

(ii) चन्देरिया - सुमेल्टर स्मेल्टर - चित्तौड़गढ़
→ इसकी स्थापना ब्रिटेन के सहयोग से की गई जो मुख्य रूप से जस्ते का उत्खनन कार्य करता है।

→ राजस्थान में सीसा गलाने का संयंत्र ना होने के कारण सीसे के अयस्क को टुंडू बिहार भेजा जाता है।

→ राजसमंद के दरीबा नामक स्थान पर सीसा गलाने का संयंत्र स्थापित किया गया है लेकिन इसकी क्षमता कम होने के कारण सीसे के बचे हुए अयस्क को बिहार भेजा जाता है।

3. चांदी :- देश में सबसे अधिक चांदी का उत्पादन राजस्थान में होता है।

चांदी की प्रमुख खान

* राजपुर - दरीबा - राजसमंद

* रामपुरा - आगूचा - भीलवाड़ा

4. सोना :- राजस्थान में सबसे अधिक सोने के भण्डार बांसवाड़ा जिले में पाये जाते है।

→ इसके अलावा दौसा जिले में भी सोने के क्षेत्रों का पता लगाया गया है।

बांसवाड़ा के प्रमुख स्थान

* आनन्द पुर - भूकिया क्षेत्र

* जगतपुरा क्षेत्र

NOTE आनन्दपुर भूखिया बांसवाड़ा में हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड के द्वारा सोने की खोज का कार्य किया जा रहा है।

5. तॉबा :- तांबां राजस्थान में सबसे अधिक खेतड़ी नामक स्थान से निकाला जाता है।

→ तांबे के उत्पादन में राजस्थान का उड़ीसा के बाद दूसरा स्थान है। एवं भंडार की दृष्टि से उड़ीसा, आंध्रप्रदेश के बाद तीसरा स्थान है।

→ राजस्थान मे तांबा परिशोधन शाला खेतड़ी कस्बे मे स्थापित की गयी है।

→ राजस्थान मे तांबे के उत्खनन का कार्य हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड के द्वारा किया जाता है।

→ हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड की राजस्थान में 3 परियोजनाएं चल रही है।

(i) HCL – Hindustan copper Lt. → खेतड़ी (झुंझुनु)

(ii) चांदमारी – कॉपर लि॰ → झुंझुनु

(iii) नीम का थाना → सीकर
कॉपर लिमि॰

तांबे के प्रमुख उत्खनन क्षेत्र

* खेतड़ी – झुंझुनु
* खो दरीबा – अलवर
* नीम का थाना – सीकर
* पुर – दरीबा – भीलवाड़ा
* भगोनी – अलवर
* बन्नो वाली की ढाणी – सीकर.
* राजपुर – दरीबा – राजसमंद

{ तांबा तीनो चट्टानों में पाया जाता है आग्नेय, अवसादी तथा कायांतरित

NOTE राजस्थान में सबसे अधिक तांबे के क्षेत्रों का नीम का थाना सीकर में पता लगाया गया है।

6. मैंगनीज

राजस्थान मे सबसे अधिक मैंगनीज का उत्पादन बांसवाड़ा जिले में होता है।

7. संगमरमर

→ संगमरमर मुख्य रूप से अवसादी चट्टानों में पाये जाते है।

→ चूना-पत्थर पर अत्यधिक दाब, ताप एवं आंतरिक क्रियाओं के द्वारा जो चट्टाने कठोर हो जाती है उन अवसादी चट्टानों को मार्बल (संगमरमर) कहा जाता है।

* राजनगर - राजसमंद

→ राजस्थान मे सबसे अधिक मार्बल का उत्पादन राजसमंद जिले से होता है। एवं राजस्थान में सबसे अधिक खनन के पट्टे मार्बल के है।

* किशनगढ़ - अजमेर

→ राजस्थान के किशनगढ़ में देश की सबसे ~~अ~~ बडी संगमरमर मण्डी है। या संगमरमर परिशोधन शाला है।

* मकराना - नागौर

→ राजस्थान मे सफेद संगमरमर का उत्पादन मकराना की खान से होता है।

→ मकराना के संगमरमर से आगरा का ताजमहल, जोधपुर का जसवंत थड़ा, सिरोही के देलवाड़ा के जैन मंदिर एवं कलकता का विक्टोरिया भवन निर्मित है।

NOTE :- विश्व मै सबसे अधिक प्रसिद्ध संगमरमर इटली देश में पाया जाता है। - इटालियन मार्बल

* सफेद संगमरमर :- मकराना नागौर
* गुलाबी - भरतपुर
* पीला एवं छींटदार - जैसलमेर
* बादामी - जोधपुर
* काला - भैंसलाना (जयपुर)
* हरा - उदयपुर
* गुलाबी लहरदार - राजसमंद
* लाल - धौलपुर, करौली

NOTE :- धौलपुर के लाल संगमरमर से राष्ट्रपति भवन का निर्माण किया गया है।

NOTE :- मकराना के सफेद संगमरमर को कैल्साइट के नाम से जाना जाता है।

खेरवाड़ा - उदयपुर :- राज. सरकार के द्वारा हाल ही में खेरवाड़ा उदयपुर की खान को प्रदूषण मुक्त खान का प्रमाण पत्र जारी किया गया है।

8. टंगस्टन :- इस खनिज का उपयोग विद्युत उपकरणों, रक्षा उपकरणों एवं वस्तुओं को काटने आदि में किया जाता है।

इसके अयस्क को वुलफ्रेमाइट कहा जाता है।

1. डेगाना भाकरी :- यह देश की सबसे बड़ी टंगस्टन परियोजना है (सबसे बड़ी खान), नागौर के डेगाना नामक

स्थान पर रेवत की पहाड़ियां में स्थित है।

2. वालदा क्षेत्र :- सिरोही - राज० राज्य टंगस्टन विभाग के द्वारा वालदा में भी टंगस्टन का खनन प्रारम्भ कर दिया गया है।

आबू रेवदर - सिरोही

सेवरिया - पाली

पीपलिया - पाली

9. जिप्सम :- हरसौंठ / कैल्शियम सल्फेट

इसका रवेदार रूप सेलेनाइट कहलाता है एवं इसको सूखाने पर P.O.P (plaster of paris) की प्राप्ति होती है एवं राज० में क्षारिय भूमि को उपजाऊ बनाने के लिए जिप्सम का उपयोग किया जाता है। इसके अलावा रासायनिक खाद, रंग रोगन एवं गंधक का तेजाब के निर्माण में भी इसका उपयोग किया जाता है।

→ इसका सर्वाधिक उत्पादन नागौर जिले में होता है

प्रमुख क्षेत्र

* गोठ- मांगलोद - नागौर (सर्वाधिक)
* भदवासी - नागौर
* बिरसासर - राज्य की सबसे बड़ी खान - बीकानेर
* जामसर - राज्य का सबसे बड़ा जमाव - बीकानेर

4/8/14

* खैरवाड़ा → [उदयपुर] →
राज्य सरकार के द्वारा हाल ही में खैरवाड़ा (उदयपुर) की खान को प्रदूषण मुक्त खान का प्रमाण पत्र जारी किया गया है।

* टंगस्टन *

इस खनिज का उपयोग विद्युत उपकरणों, रक्षा उपकरणों एवं वस्तुओं को काटने आदि में किया जाता है।

- इसके अयस्क को वुल्फ्रेमाइट कहा जाता है।

(i) * डेगाना - भाखरी →
यह देश की सबसे बड़ी टंगस्टन परियोजना है। (सबसे बड़ी खान) जो कि नागौर के डेगाना नामक स्थान पर रेवत की पहाड़ियों में स्थित है।

(ii) * वाल्दा क्षेत्र (सिरोही) →
राजस्थान राज्य टंगस्टन विभाग के द्वारा वाल्दा में भी टंगस्टन का प्रारंभ कर दिया गया है।

(iii) आबु रेवदर (सिरोही)

(iv) सेवरिया एवं पीपलिया (पाली)

* जिप्सम / हरसौंठ / कैल्सियम सल्फेट *

- इसका रवेदार रूप सेलेनाइट कहलाता है। एवं इसको सुखाने पर POP (प्लास्टर ऑफ पेरिस) की प्राप्ति होती है एवं राजस्थान की क्षारीय भूमि को उपजाऊ बनाने के लिए जिप्सम का उपयोग किया जाता है।
- इसके अलावा रासायनिक खाद, रंग रोगन एवं गन्धक के तेजाब के निर्माण में भी इसका उपयोग किया जाता है।
- इसका सर्वाधिक उत्पादन नागौर जिले में होता है।

* प्रमुख खान / क्षेत्र ⇒

(i) गोठ मांगलोद (नागौर) → सर्वाधिक जिप्सम

(ii) भदवासी (नागौर)

(iii) बिरसासर → राज्य की सबसे बड़ी खान (बीकानेर)

(iv) जामसर → राज्य का सबसे बड़ा जमाव (बीकानेर)

- इसके अलावा जैसलमेर, बाड़मेर एवं श्रीगंगानगर में भी पाया जाता है।

चूना पत्थर

यह मुख्य रूप से अवसादी चट्टानों में पाया जाता है।

- चूना पत्थर की खानों में अगर 45% से अधिक मैग्नीशियम हो तो वह 'डोलोमाइट' कहा जाता है।

* स्टील ग्रेड चूना पत्थर → जैसलमेर के सानू क्षेत्र में
* सीमेंट ग्रेड चूना पत्थर ⇒ चित्तौड़गढ़
* कैमिकल ग्रेड चूना पत्थर ⇒ जोधपुर व नागौर

Note
मोरन (नागौर) में सूरज फार्मा मार्का चूना पत्थर पाया जाता है।

अभ्रक

→ अभ्रक आग्नेय एवं कायान्तरित चट्टानों में टुकड़ों के रूप में पाया जाता है।

- इसका उपयोग विद्युत उद्योगों में, सजावटी सामानों में एवं ताप भट्टियों में किया जाता है।

- यह ताप एवं ध्वनि का कुचालक होता है।

→ माइकेनाइट उद्योग → अभ्रक के चूरे से ईंट तथा चादरें बनाने वाले उद्योग को माइकेनाइट उद्योग कहा जाता है।

- इस उद्योग के सर्वाधिक कारखाने भीलवाड़ा जिले में पाये जाते हैं।

* रूबी अभ्रक → सफेद अभ्रक को रूबी अभ्रक कहा जाता है।

* बायोटाइट अभ्रक → गुलाबी अभ्रक को बायोटाइट अभ्रक कहा जाता है।

- इसका उपयोग दवाइयों, सजावटी सामान, वायुयान एवं ताप भट्टियों में किया जाता है।

* प्रमुख क्षेत्र →

1. भीलवाड़ा → शाहपुरा, कोटड़ी, फुलिया, नट की खेड़ी।

- अभ्रक का सर्वाधिक उत्पादन भीलवाड़ा में होता है।

2. अजमेर →

ब्यावर, जालिया, भिनाय

3. उदयपुर

4. जयपुर → बंजारी खान

→ राजस्थान का उत्पादन की दृष्टि से तीसरा स्थान है।

रॉक फास्फेट

जिन चट्टानों में ट्राई कैल्शियम फास्फेट का प्रतिशत अधिक पाया जाता है, उन्हें रॉक फास्फेट चट्टान कहा जाता है।

- इसका उपयोग रासायनिक खाद के उत्पादन में अत्यधिक किया जाता है।

* क्षेत्र ⇒

1. झामर कोटड़ा (उदयपुर) ⇒ देश की सबसे बड़ी रॉक फॉस्फेट खान।

- इसके अलावा उदयपुर के मारोन, कानपुरा, नीमच आदि से भी इनका उत्पादन होता है।

2. जैसलमेर → भाडी सीरिज, बिरमानिया क्षेत्र, फतेहगढ़

3. जयपुर ⇒
अचरोल

4. सीकर →
करपुरा

एस्बेस्टॉस (90%) (मिनरल सिल्क)

* उपयोग ⇒ सीमेंट, चादर, रेल के डिब्बे, जहाज, टाइल्स, ।

* एस्बेस्टॉस के दो प्रकार के होते हैं →

(I) क्राइसोलाइट

(II) एम्फीबॉल → यह बढ़िया किस्म का एस्बेस्टॉस राजस्थान में पाया जाता है ।

* प्रमुख क्षेत्र →

1. उदयपुर → खैरवाड़ा, ऋषभदेव, सलूम्बर

2. राजसमन्द →
तिरवी

3. डूंगरपुर → देवल, खेमारू, जलवा

4. भीलवाड़ा

5. पाली

6. अजमेर

फेल्सपार

→ यह एक ऐसा खनिज है, जो स्वतंत्र रूप से प्राप्त नहीं होता है।

- इसके साथ पोटाश व सोडाइस्पर पर पाया जाता है।

* प्रमुख क्षेत्र ⇒

1. अजमेर → मकरेरा
↓
सर्वाधिक फेल्सपार → 96%

2. भीलवाड़ा →
माण्डल व आसींद

3. पाली → चनौदिया

4. अलवर → खैरतल

* उपयोग → चीनी मिट्टी के बर्तनों मे उपयोग।

काँच बालुका

* U.P. के बाद राज० का दूसरा स्थान है।

* प्रमुख क्षेत्र →

1. जयपुर → झर, कानौता, बाँस्को
↓
सबसे अधिक उत्पादन

2. बूंदी → बारोदिया

चीनी मिट्टी

इसका उपयोग रबर उद्योग, पेन्ट्स, सीमेंट आदि में किया जाता है।

* उत्पादन क्षेत्र →

1. सवाई माधोपुर → बासु रायसीना, चौथ का बरवाड़ा
↓
सबसे अधिक चीनी मिट्टी

2. सीकर → गोवर्द्धनपुरा, टोरडा, बूचरा

Note चीनी मिट्टी का उचित उपयोग करने के लिए इसकी धुलाई अनिवार्य है।
- इसकी धुलाई का कारखाना नीमकाथाना (सीकर) में स्थापित किया गया है।

डोलोमाइट

पाउडर एवं चूना बनाने में उपयोग किया जाता है।
- राज॰ में सबसे अधिक उत्पादन जयपुर जिले (48%) में, अलवर (23%), सीकर (15%) में होता है।

Note हाल ही में राजसमन्द जिले के मरनेश्वर क्षेत्र में डोलोमाइट के भण्डारों का पता चला है।

वोलेस्टोनाइट (100%)

* उपयोग ⇒ रंग रोगन, कागज उद्योग, रासायनिक उद्योग।
→ राजस्थान में सर्वाधिक उत्पादन सिरोही जिले में होता है

* प्रमुख क्षेत्र ⇒

1. सिरोही → फिल्ला, बेल्ला
2. उदयपुर ⇒ बड़ा ऊपरला खेड़ा, सायरा
3. डूंगरपुर
4. अजमेर

यूरेनियम

* उपयोग → परमाणु विखण्डन में
→ यूरेनियम का सर्वाधिक उत्पादन उदयपुर जिले से होता है इसके अलावा भीलवाड़ा, सीकर व टोंक जिले से इसका उत्पादन होता है

पन्ना

- यह आभूषण बनाने के काम आता है
- यह हरे रंग का मखमल के समान बहुमूल्य पत्थर है।
- इसे हरी अग्नि भी कहा जाता है।

→ पन्ना बैरिलियम एल्युमिनियम का मिश्रण होता है

* पन्ना मण्डी व पन्ना नगरी → जयपुर

- 1943 में सर्वप्रथम इसे काला गुमान क्षेत्र (उदयपुर) में खोजा गया।

* उत्पादन क्षेत्र ⇒
    1. उदयपुर → काला गुमान क्षेत्र

2. राजसमन्द ⇒ टिक्की

Note
हाल ही में ब्रिटेन की कंपनी मॉइस मैनेजमेंट लिमिटेड ने अजमेर से नाथद्वारा तक पन्ने की पट्टी की खोज की है।

तामड़ा → 100%

- इसे गारनेट, रक्त मणि व लाल मणि भी कहते है।
- यह लौहा व एल्युमिनियम का मिश्रण होता है
- यह दो प्रकार का होता है →
    1. अब्रेसिव
    2. जैम ⇒ राजस्थान में

*. उत्पादन क्षेत्र →
    1. टोंक ⇒ राजमहल, जनकपुरा

2. अजमेर → सरवाड़, खरखरी

हीरा

चितौड़गढ़ जिले के केशरपुरा क्षेत्र में हीरे के भण्डार प्राप्त हुए हैं।

घीया पत्थर

सर्वाधिक उत्पादन उदयपुर में होता है।
- उदयपुर में देवपुरा की खान सबसे बड़ी घीया पत्थर की खान है।

बेन्टोनाइट

इसका उपयोग वनस्पति व खनिज तेलों को साफ करने के लिए किया जाता है
- राज॰ में इसके सबसे अधिक भण्डार बाड़मेर जिले में स्थित हैं।

मुल्तानी मिट्टी

⇓

बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर

ग्रेनाइट

राजस्थान में सबसे अधिक ग्रेनाइट का उत्पादन जालौर जिले में होता है, इसीलिए जालौर को ग्रेनाइट सिटी कहा जाता है।

ग्रेनाइट प्रोसेसिंग केन्द्र → जालौर

→ विश्व में सबसे मंहगा पत्थर ग्रेनाइट पत्थर होता है।

स्लेट पत्थर

↓

अलवर → सबसे अधिक

कैल्साइट

↓

सीकर → सर्वाधिक

3. राजस्थान के ईंधन खनिज →

(i) **कोयला** →
राजस्थान में कोयले के कुल भण्डार 105 करोड़ टन है।

- राजस्थान में लिग्नाइट कोयले का उत्पादन होता है, जिसे भूरा कोयला भी कहते हैं।

* प्रमुख उत्पादन क्षेत्र →

1. बाड़मेर → 60 करोड़ टन भण्डार
↓
कपूरड़ी, जालिपा, गिरल, भादका

2. बीकानेर → 23 करोड़ टन
↓
पलाना, नापासर, बिथनोक, गुरहा (गुढ़ा)

3. नागौर → 20 करोड़ टन
↓
बरसिंहपुरा

Note
सर्वाधिक कोयले का उत्पादन कपूरड़ी (बाड़मेर) से एवं सबसे उत्तम किस्म का कोयला पलाना (बीकानेर) से प्राप्त होता है।

(ii) खनिज तेल व प्राकृतिक गैस →
राज. में सर्वप्रथम जैसलमेर घोटारू नामक स्थान पर 1983 में गैस के भण्डार प्राप्त हुए।

* मनिहारी टिब्बा → जैसलमेर

Note
घोटारू नामक स्थान पर हीलियम व मीथेन गैस के भण्डार पाये जाते है।

* गुडा मलाणी → बाड़मेर
- यह विश्व के सबसे कम गहराई पर उत्तम श्रेणी के पेट्रोल के भण्डार है।
- इसके अलावा बाड़मेर में कोसलू, कवास क्षेत्र, सादा झुल्ड आदि क्षेत्रों पर तेल के भण्डार पाये जाते हैं।

→ बीकानेर के बाघे वाला से तवारी वाला तक 13 K.M. क्षेत्र में तेल के भण्डार पाये गये हैं।

* बाड़मेर के तेल व गैस क्षेत्र →

(A) मंगला → 5 Feb. 2004 A.D. को कवास क्षेत्र के नोगासर गाँव में प्राप्त हुआ। (बाड़मेर)

(B.) कामेश्वरी → अडेल गाँव (बाड़मेर)

(C) एश्वर्या → बायतु गाँव (बाड़मेर)

(D) सरस्वती → कोसलू गाँव (बाड़मेर)

(E) विजया, भाग्यम → बोथिया गाँव (बाड़मेर)

(F) राजेश्वरी → बाड़मेर

(G) ... → बाड़मेर

कंपनी

Note

1. जैसलमेर नागौर बेसिन → IOC
2. बाड़मेर सांचौर बेसिन → किथर्न एनर्जी
3. श्रीगंगानगर बेसिन ⇒ एस्सार कम्पनी
4. जैसलमेर → ONGC
5. जैसलमेर बेसिन → फिनिक्स इन्टरनेशनल कंपनी

* तेल व प्राकृतिक गैस की पाइप लाइन ⇒

1. HBJ ⇒ हजारी, बीजापुर, जगदीशपुर
(गुजरात) (M.P.) (U.P.)

इस पाइप लाइन के द्वारा अन्ता (बारां) गैस विद्युत गृह, गडेपान खाद्य संयत्र (कोटा), सिमकोर ग्लास फैक्ट्री (कोटा), धौलपुर विद्युत गृह आदि को इस पाइप लाइन से गैस की पूर्ति कराई जाती है।

* राजस्थान की खनिज नीति

राज॰ में प्रथम खनिज नीति 1978 A.D. में श्री शेखावत के मुख्यमंत्री काल में घोषित की गई।

* 1978 की खनिज नीति → इसमें खनिज पदार्थों की

खोज हेतु सर्वेक्षण पर जोर दिया गया। एवं छोटे पट्टे धारियों को रिड उपलब्ध करवाया गया तथा SC. व ST के लिए संगमरमर के खनन पट्टे दिलाये गये।

* खनिज नीति 1994 → मशीनीकृत एवं वैज्ञानिक खनन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राज्य में खनन नीति 16 Aug. 1994 को जारी की गई।

→ प्रमुख उद्देश्य ⇒ (i) आधुनिक तकनीक को अपनाकर नवीन खनन क्षेत्रों की खोज करना।

(ii) यंत्रिकरण एवं वैज्ञानिक विधि से खनन कार्य करना।

(iii) खनिज आधारित उद्योगों की स्थापना हेतु प्रोत्साहन देना।

(iv) खनिज के उत्पादन व निर्यात में वृद्धि करना।

(v) नियम व प्रक्रिया को सरल बनाकर उत्पादन में वृद्धि करना

(vi) खनन क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों की वृद्धि करना।

(vii) खनिज उद्योगों के लिए मानवीय साधनों का विकास करना।

5/08/14

खनिज नीति के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सरकार के प्रमुख कदम →

1. निर्यात में वृद्धि एवं प्रोत्साहन हेतु सेमिनार, मेले व प्रदर्शनियों का आयोजन करना।

2. स्वदेशी व विदेशी निवेशकों व उद्यमियों को खनिज पदार्थों की खोज में वृद्धि करने व निर्यात के लिए अवधि ~~ऋण~~ उपलब्ध करवाना।

3. उद्योग लगाने वालों को खनन पट्टे, आवंटन की प्राथमिकता दी गई।

4. खनन उद्योगों को आधारभूत सुविधाएँ उपलब्ध कराई ~~आ~~ गई। ⇒

यथा - (i) खनन क्षेत्रों को सड़क से जोड़ना

(ii) श्रमिक, खानों में कार्यरत श्रमिकों के बच्चों को स्कूल व अस्पताल की सुविधा, खनन क्षेत्रों में वनों का विकास।

5. अजमेर में प्रयोगशाला को परिष्करण एवं रसायन विश्लेषण हेतु सुदृढ़ करना।

6. उदयपुर में विभागीय प्रयोगशाला तथा खान ब्यूरो परिष्करण प्रयोगशाला स्थापित करना।

इस खनन

* इस खनन में प्रमुख सरकार की नीति →

1. खनन पट्टों की अवधि 10 वर्ष से 20 वर्ष करना।

2. खादान लाइसेन्स की अवधि एक वर्ष से बढ़ाकर 5 वर्ष ~~तक~~ की गई।

3. खान पट्टों का नवीनीकरण 20 वर्षों के लिए कर दिया गया।

4. खनन के निर्धारित क्षेत्र 0.5 से बढ़ाकर 1 हैक्टेयर तक कर दिया गया।

5. संगमरमर व ग्रेनाइट प्लॉटों का आकार 1 हैक्टेयर से बढ़ाकर 2.25 हैक्टेयर कर दिया गया।

6. अवैध खनन को रोकने के लिए नियमों को अधिक कठोर बनाया गया।

7. क्षेत्रीय कार्यालयों की स्थापना की गई ताकि बेहतर प्रशासन दिया जा सके।

8. खानों का निरीक्षण करने वाले सहायक खनन अभियन्ता के ऊपर प्रथम श्रेणी के अधिकारियों को नियुक्त किया गया।

* <u>निष्कर्ष</u> →

यह कहा जा सकता है, कि अगर 1994 की खनिज नीति के नियमों एवं प्रावधानों को राज्य सरकार लागू करे और उनका कठोरता से पालन करे तो खनिज के क्षेत्र में क्रांति लाई जा सकती है।

ग्रेनाइट व मार्बल नीति 2002

* प्रथम ग्रेनाइट नीति 1991
* दुसरी ग्रेनाइट नीति ⇒ January 1995
* प्रथम मार्बल नीति - oct. 1994.

* 8 Janiury 2002 को राज्य सरकार ने नवीनतम मार्बल व ग्रेनाइट नीति घोषित की, जिसके प्रमुख प्रावधान इस प्रकार है ⇒

1. पट्टे जारी करने से पूर्व पत्थर की उपलब्धता सुनिश्चित की जायेगी।
2. खनिजों का पता लगाने के लिए लाइसेंस दिये जायेंगे।
3. ग्रेनाइट पट्टों का क्षेत्र 2.25 हैक्टेयर से बढाकर 3 हैक्टेयर एवं अधिकतम 9 हैक्टेयर भूमि आवंटित की जायेगी।
4. मार्बल पट्टों पर 2.25 से बढाकर 4 हैक्टेयर कर दिया जायेगा।
5. दोनों नीतियों मे SC. व ST. को 10%, OBC को 5% बेरोजगार स्नातकों को 3% एवं भूतपूर्व सैनिकों को 2% आरक्षण दिया जायेगा।

* विज़न 2020 →
खनन उद्योग को गति प्रदान करने हेतु खनिज विभाग द्वारा खनन क्षेत्र की दीर्घ कालीन योजना विज़न 2020 को 15 August 1999 को जारी लागू किया गया।

* उद्देश्य →
1. राजस्थान की खनिज सम्पदा का पूर्ण वैज्ञानिक दोहन
2. खनिज प्रधान क्षेत्रों में आधारभूत सुविधाएँ उपलब्ध करना।
3. खनिज सम्पदा से प्राप्त राजस्व में वृद्धि करना।

Q: राजस्थान में खनन उद्योग की विशेषता, समस्या एवं उनके समाधान का उल्लेख कीजिए।

Ans 1. राजस्थान में अनेक खनिज पाये जाते हैं, लेकिन उनका क्षेत्रीय वितरण असमान है। जैसे - दक्षिणी एवं दक्षिणी पूर्वी भाग खनिजों के धनी क्षेत्र हैं, लेकिन उत्तरी भाग में खनिज कम पाये जाते हैं।

- कुछ महत्वपूर्ण खनिज पश्चिमी राजस्थान में भी पाये जाते हैं।

2. राजस्थान में ईंधन व लौह धात्विक खनिजों की कमी है।

3. राजस्थान में कुछ धात्विक खनिजों के पर्याप्त भण्डार हैं, लेकिन उनका असमान वितरण है।

4. राजस्थान में परिवहन के अभाव में कुछ खनिजों का दोहन उचित तरीके से नहीं होता है। अतः परिवहन के साधनों का विकास करना अनिवार्य है।

5. राज्य में खनन कार्य आर्थिक दृष्टि से मजबूत व्यक्तियों के पास नहीं है। इसी कारण नवीन तकनीकों का प्रयोग पुराने तरीके से किया जाता है।

6. ऊर्जा आपूर्ति की कमी तथा खानों में मशीनों के द्वारा खनन न होना। इन दोनों समस्याओं के कारण अभ्रक का खनन प्रभावित होता है।

7. ऊँची दर पर रेल द्वारा भाड़ा (किराया) वसूल करना जिससे खनन प्रभावित होता है।

8. श्रमिकों का अभाव है, अतः प्रशिक्षण प्राप्त श्रमिकों की आवश्यकता है।

9. खनन क्षेत्रों में पानी की कमी के ~~साथ~~ अत्यधिक गहराई में खनन कार्यों से जो पानी निकलता है, ~~उसके निकास की उचित व्यवस्था नहीं है।~~

10. खनिजों के उपयोग में विविधता नहीं है, परिणाम-स्वरूप अनुसंधान कार्य आवश्यक है। जिससे अन्य उपयोग की जानकारी प्राप्त हो सके।

11 खनिजों की बहुत सी खानें छोटी हैं, जिससे इनमें सफलतापूर्वक कार्य नहीं किया जा सकता।

12. राज्य में खनन उत्पादन लागत अधिक है, जिसके कारण अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में ~~खनिज~~ हानि होती है।

13. अधिक लागत के कारण →

(i) अकुशल श्रमिक

(ii) अकुशल प्रबन्ध

(iii) खनन के पुराने व अविकसित तरीके

(iv) यंत्रीकरण व आधुनिक तकनीकों का अभाव

(v) परिवहन के पर्याप्त साधनों का अभाव

14. राज्य में खनिज के विकास की विपुल संभावनाएँ है, लेकिन राज्य सरकार के पास उचित बजट न होने के कारण खनन का विकास नहीं हो पा रहा है। अतः खनन कार्य के लिए उचित धन राशि की आवश्यकता है।

* ऊर्जा के परम्परागत एवं गैर परम्परागत स्त्रोत *

* उपयोगिता के आधार पर ऊर्जा के स्त्रोत
    - परम्परागत
    - गैर परम्परागत

* समाप्यता के आधार पर ऊर्जा के स्त्रोत
    - नवीकरणीय/नव्यकरणीय
    - अनवीकरणीय

* परम्परागत ऊर्जा संसाधन → वे ऊर्जा संसाधन जिनका उपयोग लम्बे समय से किया जा रहा है। और इनसे ऊर्जा प्राप्त करने के लिए तकनीकी आवश्यकता नहीं होती है, परम्परागत ऊर्जा संसाधन कहलाते हैं।

जैसे → कोयला, लकड़ी, गोबर आदि,

* गैर परम्परागत ऊर्जा संसाधन → वे ऊर्जा स्त्रोत जो मानव ने अपने विकास क्रम में खोजे तथा इनसे ऊर्जा प्राप्त करने के लिए उन्नत या उच्च तकनीक की आवश्यकता हो, गैर परम्परागत ऊर्जा के साधन कहलाते हैं।

जैसे → बायो गैस, पवन ऊर्जा, सौर ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा, समुद्री तरंग ऊर्जा, समुद्री पवन ऊर्जा।

* नवीकरणीय ऊर्जा संसाधन ⇒
इन्हें चक्रीय ऊर्जा संसाधन भी कहते हैं।

- वे ऊर्जा स्त्रोत जो कभी समाप्त नहीं होते और उचित समय पर जिनका प्रतिस्थापन प्राकृतिक क्रिया द्वारा किया जा सकता है, इन्हें नवीकरणीय ऊर्जा स्त्रोत कहते हैं।

जैसे → सौर (सूर्य), जल, पवन, लकड़ी, गोबर आदि

* अनवीकरणीय ऊर्जा स्त्रोत ⇒
इन्हें अचक्रीय ऊर्जा संसाधन भी कहते हैं।

- वे ऊर्जा स्त्रोत जिनका एक बार उपयोग करने से समाप्त हो जाते हैं, तथा प्राकृतिक क्रियाओं द्वारा उचित समय पर प्रतिस्थापित नहीं किया जाता है, इन्हें अनवीकरणीय ऊर्जा संसाधन कहते हैं।

जैसे → कोयला, पेट्रोल, गैस आदि

Q:- राजस्थान में विद्युत स्टेशनों के प्रकारों का वर्णन कीजिए।

Ans राजस्थान में विद्युत स्टेशन पाये जाते है -

1. STPP →

⇓ Super Thermal Power Plant

यदि किसी प्लांट की कुल क्षमता 1000 मैगावाट या इससे अधिक हो, तो उसे STPP कहते हैं।

जैसे →

सूरतगढ़ (गंगानगर), कोटा

2. SCPP ⇒ सुपर क्रिटीकल पॉवर प्लांट

⇓

यदि किसी प्लांट की एक इकाई की क्षमता 500 मैगावाट या इससे अधिक हो, तो उसे SCPP कहते हैं।

जैसे →

छबड़ा (बारां)

Q:→ राजस्थान में विद्युत क्षेत्रों में सुधारों पर टिप्पणी लिखिए।

Ans विद्युत संविधान में समवर्ती सूचि का विषय है।

→ भारत में प्रथम विद्युत इकाई 1897 में दार्जीलिंग (प० बंगाल) में जल विद्युत गृह के रूप में स्थापित की गई।

- दूसरा

राजस्थान में स्वतंत्रता से पूर्व 15 छोटे-छोटे विद्युत गृह थे। जिनकी कुल उत्पादन क्षमता 1226 मैगावाट थी, जिससे प्रदेश के कुल 26 शहर एवं गांवो को विद्युत की पूर्ति कराई जाती थी।

- स्वतंत्रता के बाद इस स्थिति को देखते हुए राजस्थान में विद्युत सुधार प्रारंभ किये गये, जो निम्नांकित है।

1957 में राजस्थान राज्य विद्युत मण्डल की जयपुर में स्थापना की गई, जिसका मुख्य उद्देश्य नियोजित रूप से विकास एवं वितरण तथा उत्पादन पर ध्यान देना था।

→ राजस्थान विद्युत नियामक आयोग 2000 → राजस्थान विद्युत नियामक अधिनियम 1998 के आधार पर इसका गठन किया गया।

- इसने सुझाव दिया कि उत्पादन प्रसारण एवं

वितरण की इकाईयों को अलग-2 रखा जावे और इन तीनो कंपनियों को लाइसेंस जारी करने के लिए अधिकार दिये जायें।

कुछ समय पूर्व 1999 में राजस्थान विद्युत क्षेत्र सुधार अधिनियम पारित करके विद्युत क्षेत्र के सुधारों को संस्थागत रूप में लागू किया गया।
- यह अधिनियम सन् 2000 में लागू हुआ, तथा 2000 में राजस्थान राज्य विद्युत मण्डल का विभाजन करके 5 कम्पनियों का गठन किया गया ⇒

1. राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड ⇒ जयपुर
2. राजस्थान राज्य विद्युत प्रसारण निगम लि. → जयपुर
3. जयपुर विद्युत वितरण नि. लि.
4. जोधपुर विद्युत वितरण नि. लि.
5. अजमेर विद्युत वितरण नि. लि.

1. राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड ⇒ यह राजस्थान में विद्युत उत्पादन के लिए उत्तरदायी है।
- राजस्थान राज्य विद्युत मण्डल के नियंत्रण में सभी परियोजनाएँ इसे स्थानान्तरित कर दी गई है।

2. राजस्थान राज्य विद्युत प्रसारण निगम लिमिटेड

इसका प्रमुख कार्य 400 K.V., 220 K.V. विद्युत प्रसारण एवं सब-स्टेशनों का निर्माण, परिचालन एवं संचालन संबंधी कार्य।

- विद्युत संबंधी सूचना एवं आँकड़ो का संकलन, अध्ययन एवं आधुनिकीकरण के द्वारा सुधारात्मक कार्यों को लागू करना।

3. जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड

यह निगम राज्य के 12 जिलों में विद्युत वितरण का कार्य करता है।

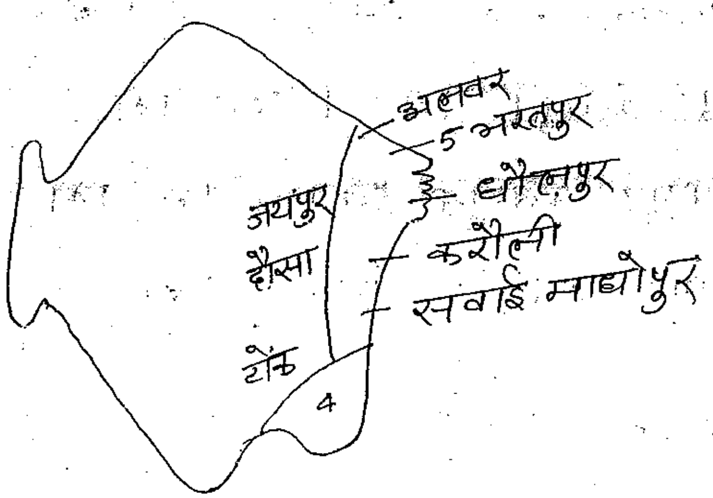

4. अजमेर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड

यह राज्य के 11 जिलों में विद्युत वितरण का कार्य करता है।

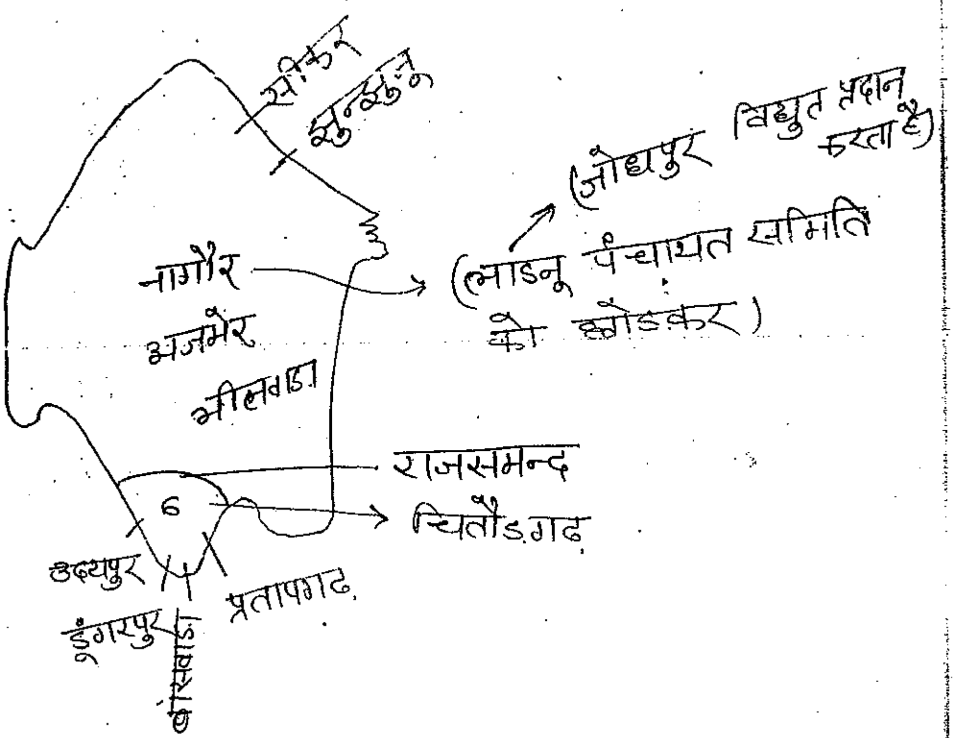

4. जोधपुर विद्युत

यह राज्य के उत्तरी व पश्चिमी क्षेत्र के 10 जिलों में विद्युत की सेवाएं प्रदान करता है।

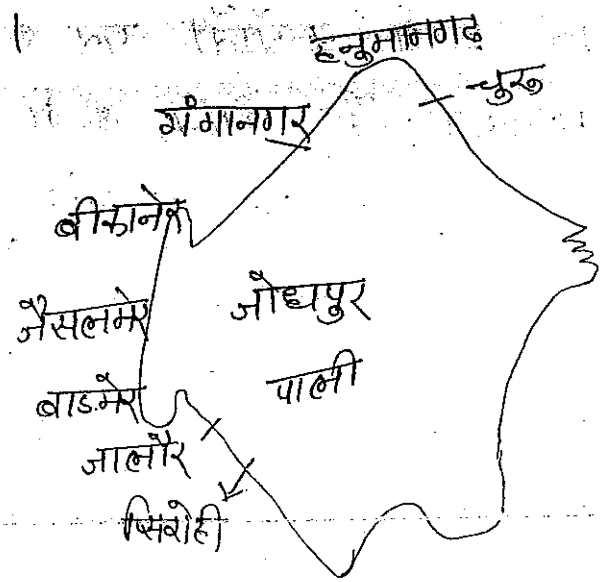

सन् 2001 में वर्ल्ड बैंक की सहायता से उत्पादन, प्रसारण एवं वितरण के क्षेत्र में [illegible] किये गये।

इन सभी प्रयासों के फलस्वरूप विद्युत छीजत में कमी आई। तथा विद्युत चोरी काफी हद तक रुकी है, जिसके कारण प्रत्येक क्षेत्र में सही समय पर गुणवत्तापूर्ण एवं मुक्ति युक्त विद्युत की आपूर्ति सुनिश्चित हुई है।

विद्युत उत्पादन की लागत में काफी कमी आई है, तथा उत्पादन बढ़ा है।

- इसी के अन्तर्गत परम्परागत संसाधनों के अतिरिक्त गैर परम्परागत स्त्रोतों के विकास की संभावना तलाशी जा रही है।

* निष्कर्ष ⇒

आज भी ऊर्जा सुधार पर्याप्त नहीं है, अतः गैर परम्परागत ऊर्जा स्त्रोतों पर ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है, ताकि ऊर्जा सुरक्षा एवं ऊर्जा स्वतंत्रता सुनिश्चित की जा सके।

06/08/

Q :→ गैर परम्परागत ऊर्जा संसाधन किसे कहते है? और इससे संबंधित राजस्थान में ढाँचा / प्रारूप क्या है?

अथवा

गैर परम्परागत ऊर्जा स्त्रोतों का अर्थ स्पष्ट करते हुए इससे संबंधित ~~स~~ संस्थाओं को विस्तार से बताइये।

Ans ऊर्जा के गैर परम्परागत स्त्रोत जो नये हो, तथा उनसे ऊर्जा प्राप्त करने के लिए तकनीकी आवश्यकता होती हो, गैर परम्परागत ऊर्जा स्त्रोत कहलाते है।

राजस्थान में गैर परम्परागत ऊर्जा स्त्रोतों से संबंधित प्रमुख संस्थाएँ →

1. राजस्थान ऊर्जा विकास एजेन्सी (REDA) → 1985
⇓
वर्तमान में इसका विलय अक्षय ऊर्जा निगम में कर दिया है।

- यह पूर्व में ~~ऊर्जा~~ जयपुर में था, जिसका मुख्य उद्देश्य गैर परम्परागत ऊर्जा स्त्रोतों का विकास करना तथा उपयोग को बढ़ावा देना था।

2. राजस्थान राज्य ऊर्जा निगम लिमिटेड (RSPCL) → 1995
⇓
इसका विलय भी अक्षय ऊर्जा निगम में कर दिया है।

- यह भी जयपुर में था, इसका प्रमुख कार्य गैर परम्परागत ऊर्जा स्त्रोतों की स्थापना करना था।

७. राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम (RREC) ⇒ इसकी स्थापना 2002 में की गई।

- इसका मुख्यालय जयपुर में स्थित है।
- यह गैर परम्परागत ऊर्जा स्त्रोतों के विकास, उत्पादन, प्रसारण एवं विद्युत उत्पादन संयंत्रों की स्थापना से संबंधित कार्यों को देखता है।

* राजस्थान सरकार की विद्युत परियोजनाएँ

परम्परागत	गैर परम्परागत
1. तापीय परियोजनाएँ	1. सौर ऊर्जा
2. जल परियोजनाएँ	2. पवन ऊर्जा
3. गैस परियोजनाएँ	3. बायोमास

1. तापीय परियोजनाएँ ⇒
   - सूरतगढ़
   - कोटा
   - छबड़ा (बारां)
   - बरसिंगसर (बीकानेर)
   - गिरल (बाड़मेर) → 125 ~~मेगा~~ मेगावाट

2. जल विद्युत परियोजनाएँ ⇒ माही, आखम, चम्बल आदि

3. गैस विद्युत परियोजनाएँ ⇒
   1. धौलपुर,

२. झामरकोटड़ा (उदयपुर)

४. रामगढ़ आदि
↓ (जैसलमेर)

सौर ऊर्जा की परियोजनाएँ ⇒

खींवसर (नागौर)

फागी (जयपुर)

धुनिया (जोधपुर)

बूढ़सर (जैसलमेर)

२. <u>पवन ऊर्जा के संयत्र</u> ⇒

अमरसागर (जैसलमेर)

देवगढ़ (प्रतापगढ़)

सोढा बंधन (जैसलमेर)

बीठड़ी (जोधपुर)

बड़ा बाग (जैसलमेर)

३. बायोमास ऊर्जा संयत्र ⇒

पदमपुर (श्रीगंगानगर)

निवाई (टोंक)

रंगपुर (टोंक)

पचार (बारां)

कोटपुतली (जयपुर)

सांगरिया (हनुमानगढ़)

~~अध्येयिस्त~~

राजस्थान में पशुधन

* भूमिका ⇒

शुष्क एवं मरूस्थलीय क्षेत्र के कारण वर्षा की कमी और कृषि का पर्याप्त विकास नहीं होने के कारण पशुधन राजस्थान की अर्थव्यवस्था में आधार स्तम्भ का काम करता है।

Note डॉ. डार्विन के अनुसार,

पशुधन के बिना खेत बिना जुते रहते, खेत खलिहान खाद्यानों के अभाव में खाली पड़े रहते तथा एक शाकाहारी देश में इससे अधिक दुःखदायी बात क्या हो सकती है, कि यहाँ पशुओं के अभाव में दूध, घी, पनीर आदि पौष्टिक पदार्थों का अकाल हो जाता।

* पशुधन ⇒

पशु या पशुओं का समूह जिसे कृषि कार्यों में, श्रम, खाद्य उत्पाद एवं अन्य कार्यों हेतु पालतू बनाया जाता है, तो उसे पशुधन कहते हैं।

* **निष्कर्ष** →
कृषि की गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए पशुओं की नस्ल सुधार, वैज्ञानिक तरीके से पशुपालन एवं पशु प्रतिरूप को कृषि जलवायु के अनुरूप करने की आवश्यकता है, जिससे पशुधन का सतत विकास किया जा सके।

* राजस्थान में पशुपालन से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य →

भारत में ब्राजील के बाद विश्व का सर्वाधिक पशुधन पाया जाता है, जो कि विश्व का कुल 16% है।

- राजस्थान में भारत के लगभग 11% पशु 10% दूध 40% ऊन, 30% माँस, पाया जाता है।
- राजस्थान में पशु संपदा के आकलन के लिए राजस्व मण्डल अजमेर प्रत्येक 5 वर्ष के अन्तराल में पशु गणना करवाता है।
- राजस्थान व भारत में प्रथम पशु गणना दिसम्बर 1919 से April 1920 के मध्य हुई थी।
- 2007 की पशु गणना राजस्थान की 18 वीं पशु गणना थी, जो कि पहली ऐसी पशु गणना है, जो नस्ल के आधार पर की गई है।
- राजस्थान की 19वीं पशु गणना 2012 में करवाई गई है, जिसके प्रमुख अधिकारी श्री भँवरलाल है।

→ वर्ष 2007 की पशु गणना में राज्य के कुल पशु ⇒ 5.79 करोड़, 50 लाख मुर्गियाँ।

→ 2007 का पशु घनत्व ⇒ 166 प्रति वर्ग K.m.

→ 2003 का पशु घनत्व ⇒ 144 प्रति वर्ग K.m.

2003 की तुलना में 2007 की पशु गणना में 88 लाख पशुओं की वृद्धि हुई है।

→ 2007 की पशु गणना के अनुसार ⇒

1. बकरियाँ → 218.82 लाख (37.79%)
'बाड़मेर' में सर्वाधिक

2. गाय → 124.11 ~~115.82~~ लाख (21.43%)
उदयपुर में सर्वाधिक

3. भैंस → 113.42 लाख (19.93%)
अलवर में सर्वाधिक

4. भेड़ → 112.84 लाख (19.49%)
बाड़मेर में सर्वाधिक

- 2003 की तुलना में 2007 में सर्वाधिक वृद्धि दर 30.18% बकरियों में हुई।

✓ - राजस्थान में सर्वाधिक पशुधन → बाड़मेर
IInd → जोधपुर

✓ - सबसे कम पशुधन → धौलपुर

→ सर्वाधिक घनत्व → डूँगरपुर → 309

→ सबसे कम घनत्व → जैसलमेर → 74

Q:→ राजस्थान सरकार द्वारा पशुधन के लिए क्या-क्या प्रयास किये जा रहे हैं? विस्तार से लिखो।

Ans राजस्थान प्रदेश पशुधन को बनाये रखने तथा इसके विकास व स्वास्थ्य की सुरक्षा की दृष्टि से राजस्थान सरकार द्वारा 1957 में पशुपालन विभाग की स्थापना एवं 1963-64 ई. में भेड़ व ऊन विभाग की स्थापना की गई।

- 2000-2001 में दोनों विभागों का विलय कर पशुपालन डेयरी विकास विभाग के नाम से स्थापना की गई। लेकिन वर्तमान में इसे पशुपालन विभाग के नाम से भी जाना जाता है।

* सरकार के प्रमुख प्रयास ⇒

1. चिकित्सा सुविधाएँ ⇒

राजस्थान में वर्तमान में 1537 पशु चिकित्सालय, 249 प्रथम श्रेणी के पशु चिकित्सालय, 1880 उप पशु स्वास्थ्य केन्द्र, राज्य स्तरीय रोग निदान केन्द्र, जयपुर, क्षेत्रीय रोग निदान केन्द्र, अजमेर, कोटा, जोधपुर, उदयपुर, बीकानेर एवं 27 जिला स्तरीय रोग निदान प्रयोगशालाएँ है।

Note रोग निरोधक टीका के उत्पादन हेतु प्रादेशिक पशु चिकित्सा जैविक इकाई →
जामडोली (जयपुर)

राज्य स्तरीय रेडियोलॉजी इकाई →
अजमेर
~~अ~~ जयपुर

~~क्षय रोग~~
→ क्षेत्र रोग इकाईयाँ ⇒
जयपुर, कोटा, उदयपुर

→ रेबीज नियंत्रण इकाई →
अजमेर, जयपुर

- वर्तमान राज्य में 14,265 गौ वंश इकाईयों पर एक पशु चिकित्सा संस्था कार्यरत है।

2. प्रशिक्षण केन्द्र ⇒
निजी क्षेत्र में पशुधन सहायक प्रशिक्षण केन्द्र →
1. बस्सी (जयपुर)
2. डाबर बम्भोरी (कोटा)
3. सूरपुर (जोधपुर)
4. बसेड़ी (धौलपुर)
5. उदयपुर

3. सहायक प्रशिक्षण ~~विद्या~~ विद्यालय
भरतपुर, जयपुर, रूपवास, जोधपुर

राजस्थान राज्य पशुधन प्रबंध एवं प्रशिक्षण संस्थान → जामडोली (जयपुर)

→ पशु पोषाहार संस्थान → पशुओं व पक्षियों को सस्ता-संतुलित व पौष्टिक आहार उपलब्ध कराने तथा पशुओं की पोषाहार संबंधी समस्याओं के समाधान हेतु जामडोली (जयपुर) में 1991 में पशु पोषाहार संस्थान की स्थापना की गई।

4. राजस्थान पशुधन विकास बोर्ड → इसकी स्थापना 25 March 1998 को जामडोली (जयपुर) में राजस्थान सहकारी अधि. के तहत की गई।

→ प्रमुख उद्देश्य →
(i) पशुधन संसाधनों का सम्पूर्ण दोहन
(ii) पशुधन का संवर्धन एवं विकास
(iii) पशुपालकों के आर्थिक स्तर में वृद्धि
(iv) पशु उत्पादों में वृद्धि करना

5. राज्य गौ सेवा आयोग ⇒ इसकी स्थापना राजस्थान गौ-सेवा आयोग अधिनियम 1995 के तहत 23 March 1995 को जयपुर में की गई।

6. गौशाला विकास कार्यक्रम ⇒
राज्य में वर्तमान में लगभग 192 पंजीकृत गौशालाएं हैं, एवं दो गौ सदन हैं।
⇓
(i) दौसा
(ii) कोडमदेसर (बीकानेर)

एक शीर्ष संस्था राजस्थान गौशाला पिंजरापोल (जयपुर) में स्थित है।

- राजस्थान की सभी गौशालाओं में पशुओं के इलाज, कृत्रिम गर्भाधान, टीकाकरण, चारा उत्पादन आदि कार्य किये जाते हैं।

7. एडमास योजना ⇒
यह योजना भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा गाय व भैंस के पशु रोगों की पहचान व निदान करने के उद्देश्य से 1 April 1991 में प्रारंभ की गई।

8. पशु चिकित्सा महाविद्यालय ⇒
कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर के अधीन राज्य का एकमात्र पशु निदान व चिकित्सा महाविद्यालय बीकानेर में 16 August 1954 से संचालित है।

Note - राजस्थान में अन्य पशु चिकित्सा महाविद्यालय नाथद्वारा में खोला जायेगा।

Note

निजी क्षेत्र में राज्य का पहला पशु विज्ञान व चिकित्सा महाविद्यालय ⇒ अपोलो कॉलेज ऑफ वेटनरी मेडिसिन, जयपुर 2002-03

Q:2. राजस्थान में भेड़ व ऊन विकास को विस्तार से लिखो।

Ans भारत में राजस्थान का भेड़ व ऊन उत्पादन में महत्वपूर्ण स्थान है।

- राज्य में शुष्क एवं ~~अर्द्ध~~ अर्द्धशुष्क क्षेत्र भेड़पालन के लिए उपयुक्त है।
- प्रतिवर्ष राज्य को ऊन उत्पादन से 20 करोड़ रुपये तथा भेड़ों के माँस से 100 करोड़ रुपये की आय होती है।
- राज्य में लगभग 2 लाख परिवारों के 20 लाख व्यक्ति भेड़ पालन से जुड़े हुए हैं।
- 2007 की पशु गणना के अनुसार भेड़ों की कुल संख्या 112.84 लाख है, जो देश की कुल भेड़ों का 16.31% है।
- इस दृष्टि से राज्य का देश में दूसरा स्थान है।
- Ist स्थान - आन्ध्रप्रदेश

* सरकार के निम्न प्रयास ⇒

1. भेड़ प्रजनन केन्द्रो की स्थापना

2. केन्द्रीय भेड़ व ऊन अनुसंधान केन्द्र

3. केन्द्रीय ऊन विकास बोर्ड

4. भेड़ व ऊन प्रशिक्षण संस्थान

5. संकर प्रजनन फार्म

6. केन्द्रीय ऊन विश्लेषण प्रयोगशाला

7. भेड़ पालन प्रशिक्षण शिविर कार्यक्रम

Q:→ राजस्थान को प्रादेशिक वितरण के आधार पर कितने पशु क्षेत्रों में बांटा गया है?

Ans 10 भागों में बांटा गया है ⇒

1. उतरी पश्चिमी क्षेत्र ⇒
राठी → गाय की नस्ल
↓
जैसलमेर
बीकानेर
गंगानगर

2. दक्षिणी पश्चिमी क्षेत्र ⇒
कांकरेज → गाय की नस्ल
↓
सिरोही
जालौर
पाली

3. पश्चिमी क्षेत्र ⇒

थारपारकर

⇓

जैसलमेर

बाड़मेर

जोधपुर

4. उतरी नहरी सिंचित भू-भाग ⇒ गंगानगर

5. मध्यवर्ती नागौर क्षेत्र ⇒

नागौर, जोधपुर

नागौरी नस्ल (गाय)

6. उतरी पूर्वी व पूर्वी क्षेत्र ⇒

शेखावाटी क्षेत्र, जयपुर

गंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर

- मेवाती नस्ल

7. मेवात प्रदेश ⇒

अलवर, भरतपुर, धौलपुर

8. रथ क्षेत्र ⇒

अलवर, भरतपुर, धौलपुर

9. द० पूर्वी एवं दक्षिणी क्षेत्र ⇒ मालवी नस्ल

10. द० पूर्वी मध्यवर्ती क्षेत्र ⇒

गीर /गिर नस्ल

1. गाय/ गौ वंश →

प्रमुख नस्लें →   मेव हरि का सारा माल गिराना था

⇓

(i) मेवाती

(ii) हरियाणवी

(iii) कांकरेज /

(iv) सांचौरी

(v) राठी

(vi) मालवी

(vii) गीर / गिर

(viii) नागौरी

(ix) थारपारकर

Q: → गाय की द्विप्रयोजनीय नस्लें बताइये।

Ans वह नस्लें जो दुग्ध उत्पादन व भार वहन दोनों की दृष्टि से उपयुक्त हो उसे द्विप्रयोजनीय नस्ल कहते हैं।

- राजस्थान की प्रमुख द्विप्रयोजनीय नस्लें ⇒
(i) गीर
(ii) कांकरेज
(iii) हरियाणवी

(हरि G.K. दो बार पढ़ो)

Q:→ राजस्थान की अधिक दूध देने वाली नस्ले?

Ans राजस्थान में मुख्यत: भारवाहक नस्ल पाई जाती है, किन्तु फिर भी कुछ देशी व विदेशी गौवंश की नस्लें दुग्ध उत्पादन के लिए प्रसिद्ध हैं।

(i) राठी → राजस्थान की कामधेनु
  ↳ सर्वाधिक दूध

(ii) सांचौरी / कांकरेज

(iii) थारपारकर

(iv) हरियाणवी

इनके अलावा कुछ विदेशी नस्लें दुग्ध उत्पादन के लिए प्रसिद्ध हैं ⇒

जर्सी → अमेरिका
रेडडेन → अमेरिका
हॉलिस्टीन → हॉलैण्ड की

Q:→ राजस्थान में भार वहन की दृष्टि से गौवंश की सर्वश्रेष्ठ नस्लें कौनसी है?

Ans. नागौरी, मालवी, मेवाती, हरियाणवी, गीर, कांकरेज आदि गौवंश की नस्लें भार वहन एवं कृषि कार्यों के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

- इनमें से हरियाणवी गीर तथा कांकरेज द्विप्रयोजनीय है, अर्थात् भार वहन व दुग्ध ~~प्रयोजन~~ उत्पादन दोनों के लिए प्रसिद्ध है।

1/08/14

2007 की पशु गणना के अनुसार देश में प्रथम स्थान M.P. का है। एवं राजस्थान का गौ-सम्पदा की दृष्टि से देश में 7वाँ स्थान है।

1. थारपारकर (थारी) ⇒ यह मूल स्थान पाकिस्तान के सिन्ध क्षेत्र व बाड़मेर के मालाणी क्षेत्र की है, लेकिन राज. में बाड़मेर, जैसलमेर, जोधपुर, जालौर जिलों में पाई जाती है।

- यह नस्ल दुग्ध उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है, जो 11 से 12 लीटर दूध देती है।
- थारपारकर गाय विकास एवं प्रजनन केन्द्र → किशनगढ़ अजमेर
- प्रजनन केन्द्र → चाँदन गाँव (जैसलमेर)
- इसके लिए मल्लीनाथ पशुमेला, तिलवाड़ा (बाड़मेर) प्रसिद्ध है।

2. नागौरी ⇒ इसकी उत्पत्ति नागौर के सुहालक क्षेत्र में मानी जाती है।

- यह मुख्यतः नागौर, पूर्वी जोधपुर एवं नोखा (बीकानेर) में पाई जाती है।
- इस किस्म के बैल दौड़ने में चुस्त, फुर्तीले, मजबूत एवं बेहतर भारवाहक व कृषि कार्यों के लिए उपयुक्त होते हैं।

→ प्रसिद्ध मेला → परबतसर (नागौर)

→ प्रजनन केन्द्र → नागौर

→ बादवास गाँव (नागौर) नागौरी बैल के लिए प्रसिद्ध है।

3. **मेवाती** →
इसका उत्पति क्षेत्र मेवाड़ क्षेत्र (अलवर) को माना जाता है।

- यह अलवर व भरतपुर में अधिक मिलती है।
- इस नस्ल के बैल भी भारवाहक होते है, लेकिन इस नस्ल की गाय कम दूध देती है।

→ प्रजनन केन्द्र → बस्सी (जयपुर)

→ प्रसिद्ध मेला → जसवन्त पशुमेला (भरतपुर)

4. **गिर / रैंडा / अजमेरा** →
द्विप्रयोजनीय नस्ल

- मूल स्थान → सौराष्ट्र (गुजरात)
- यह राजस्थान में अजमेर, भीलवाडा, चितौड, पाली व बूंदी में पाई जाती है।
- यह दूध अधिक देती है, एवं इसके बैल भी प्रसिद्ध है।

→ प्रजनन केन्द्र → डग (झालावाड)

5. **राठी** ⇒

राजस्थान की कामधेनु

- यह लाल सिंधी एवं साहिवाल नस्ल का मिश्रित रूप है।
- यह श्रीगंगानगर, बीकानेर, चुरु, जैसलमेर में पाई जाती है।
- यह राजस्थान की गाय की सर्वश्रेष्ठ नस्ल है।
- इसका प्रजनन केन्द्र नोहर (हनुमानगढ़) में है।

6. **मालवी** →

मूल स्थान → M.P. का मालवा क्षेत्र

- राजस्थान में कोटा, झालावाड़, बाँसवाड़ा, डूंगरपुर, उदयपुर
- प्रजनन केन्द्र → डग (झालावाड़)
- प्रसिद्ध मेले → चन्द्रभागा (झालरापाटन)

  गोमती सागर (झालावाड़)

5. **हरियाणवी** ⇒

मूल स्थान → रोहतक, गुडगाँव, हिसार

- यह राजस्थान में सबसे अधिक क्षेत्र पर पाई जाती है, जो श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, चुरु, सीकर, टोंक, जयपुर एवं पूर्वी बीकानेर में मिलती है

→ प्रजनन केन्द्र → कुम्हेर (भरतपुर)

→ प्रसिद्ध मेले → जसवन्त पशु मेला (भरतपुर)

गोगामेड़ी पशु मेला (हनुमानगढ़)

6. कांकरेज ⇒

इसकी उत्पति गुजरात के कच्छ के रण में मानी जाती है।

- यह पाली, सिरोही, बाड़मेर में मिलती है, एवं द्विप्रयोजनीय नस्ल है।

→ प्रजनन केन्द्र → चौहटन (बाड़मेर)

7. सांचौरी →

उत्पत्ति स्थल → सांचौर (जालौर)

* गौवंश से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य →

1. गोपाल योजना ⇒

1989 - 90 में 10 जिलों में प्रारंभ की गई।

2. कामधेनु योजना ⇒

1997 - 98

3. गोसेवा संघ → अजमेर

4. गौ अभयारण्य → अजमेर संभाग प्रस्तावित है।

5. गौमुत्र बैंक → सांचौर (जालौर)

→ गाय का प्रथम संवर्द्धन फार्म / वीर्य बैंक → बस्सी (जयपुर)

→ दूसरा गोवंश संवर्द्धन फार्म → जोधपुर

Note गाय के अस्थाई रूप से 20 एवं स्थाई रूप से 32 दांत होते हैं।

→ गाय का मांस → बीफ

भैंस

→ देश में प्रथम स्थान U.P. का, दूसरा आन्ध्रप्रदेश का तथा तीसरा स्थान राजस्थान का है → 2007 की जनगणना

- राजस्थान में सर्वाधिक भैंस → अलवर, जयपुर

न्यूनतम → जैसलमेर

→ भैंस की सर्वोत्तम नस्ल → मुर्रा

→ पन्ना व मुना बजा सूर में (tricks) → मेहसाना

- पण्डरपुरी — बदावरी

राबी — जाफराबादी

मुर्रा — सूरती

नागपुरी — रथ

1. मुर्रा (खुण्डी) ⇒ यह राजस्थान में अलवर, भरतपुर, जयपुर, दौसा, श्रीगंगानगर, सवाईमाधोपुर

→ प्रजनन केन्द्र → कुम्हेर (भरतपुर)

→ प्रसिद्ध मेला → बहरोड पशु मेला (अलवर)

→ दूध में वसा की मात्रा ⇒ 7.8 %

2. जाफराबादी →

मूल स्थान → काठियावाड (गुजरात)

- यह सर्वाधिक शक्तिशाली नस्ल है, एवं राजस्थान में गुजरात के सीमावर्ती जिलों में पाई जाती है।

3. बदावरी →

मूल स्थान → U.P.

- इसके दूध में सर्वाधिक वसा की मात्रा होती है।

Note केन्द्रीय भैंस प्रजनन एवं अनुसंधान केन्द्र →
वल्लभनगर (उदयपुर)

→ मुर्रा अनुसंधान व प्रजनन केन्द्र → कुम्हेर (भरतपुर)

भेड़

- देश में प्रथम स्थान → आन्ध्रप्रदेश
दूसरा स्थान → राजस्थान

→ सर्वाधिक भेड़ → बाड़मेर
न्यूनतम भेड़ → धौलपुर

→ भेड़ व ऊन विभाग की स्थापना → 1963

* नस्ल →

मामा बाग में सोना है चोखे पूजे

मारवाड़ी	बागड़ी	सोनाड़ी	चोकला	पूगल
मालपुरी	मगरा	नाली		जैसलमेरी

1. मालपुरी →
जयपुर, टोंक, करौली, सवाईमाधोपुर, अजमेर, भीलवाड़ा।

- इसकी ऊन सर्वाधिक बारीक व मुलायम होती है। यह गलीचे व नमदे बनाने में प्रयुक्त होती है।

- इसका प्रजनन व अनुसंधान केन्द्र जयपुर में है, एवं यह प्रतिवर्ष 1½ Kg. ऊन देती है।

2. मगरा ⇒

इसे बीकानेरी चोकला भी कहा जाता है।

- यह माँस के लिए प्रसिद्ध है।

3. चोकला ⇒

शेखावाटी क्षेत्र

- इसे भारत की मेरिनो कहा जाता है।
- यह भेड़ की सर्वोत्तम नस्ल है।

→ मेरिनो → ऑस्ट्रेलिया

- यह भेड़ सर्वोत्तम किस्म की ऊन
- इसका प्रजनन व अनुसंधान केन्द्र → कोडमदेसर बीकानेर

4. पूगल →

बीकानेर

- प्रजनन व अनुसंधान केन्द्र → बीकानेर

5. सोनाड़ी →

द्वि प्रयोजनीय नस्ल

- बाँसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़, डूंगरपुर, राजसमंद उदयपुर
- इसके कान बहुत लम्बे होते हैं, जो चरते समय जमीन को स्पर्श करते हैं।

- प्रजनन व अनुसंधान केन्द्र → चित्तौड़गढ़

6. जैसलमेरी →
राजस्थान में सबसे अधिक ऊन देने वाली नस्ल है।
- प्रतिवर्ष 4 Kg. ऊन देती है।
- प्रजनन व अनुसंधान केन्द्र → पोकरण (जैसलमेर)
मण्डोर (जोधपुर

7. नाली →
गंगानगर, हनुमानगढ़
- इसकी ऊन का रेशा सर्वाधिक लम्बा होता है।
- प्रजनन व अनुसंधान केन्द्र →
हनुमानगढ़

8. मारवाड़ी ⇒
कुल भेड़ों का 50% है।
- इस भेड़ की सबसे अधिक रोग प्रतिरोधक क्षमता होती है। एवं सबसे अधिक दूरी तय करने वाली नस्ल है।
- प्रजनन व अनुसंधान केन्द्र → जोधपुर

* भेड़ सम्पदा या भेड़ों से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य ⇒

→ भेड़ का माँस ⇒ मटन

→ केन्द्रीय भेड़ एवं अनुसंधान संस्थान → अविकानगर (टोंक)
1962

→ केन्द्रीय ऊन विकास बोर्ड → जोधपुर (1987 A.D.)

→ केन्द्रीय ऊन विश्लेषण प्रयोगशाला → बीकानेर

→ भेड़ प्रजनन फार्म → सुजानगढ़ (चुरू)

अविकानगर (टोंक)

→ सर्वाधिक ऊन उत्पादन जिले → जोधपुर

बीकानेर

नागौर

न्यूनतम → झालावाड़

→ ऊन की एशिया की सबसे बड़ी मण्डी → बीकानेर

- देश में ऊन उत्पादन में राजस्थान का प्रथम स्थान है (40%)

- राजस्थान में सर्वाधिक पीली ऊन का उत्पादन होता है।

बकरी

- देश में सर्वाधिक बकरी राजस्थान में पाई जाती है, एवं राजस्थान में सबसे अधिक पाया जाने वाला पशु है।

- सर्वाधिक बकरी → बाड़मेर

न्यूनतम बकरी → धौलपुर

* उपनाम → गरीब की गाय

रेगिस्तान का चलता - फिरता फ्रिज

अजब सी मार शौली पर
अलवरी सिरोही शेखावाटी परबतसरी
जमनापरी मारवाड़ी लोही
बरबरी

1. मारवाड़ी →
द्विप्रयोजनीय नस्ल
⇓
दूध + मांस
- राजस्थान के बीकानेर, चुरू, जैसलमेर, बाड़मेर, जालौर, पाली, गंगानगर, हनुमानगढ़
- राजस्थान में इस नस्ल की बकरी सर्वाधिक मानी जाती है।

2. शेखावाटी ⇒
सीकर, झुन्झुनू
- बिना सिंग एकमात्र बकरी

3. जखराना →
बहरोड़ (अलवर)
- राजस्थान में सबसे अधिक दूध के लिए प्रसिद्ध है → 6 - 8 लीटर

4. बरबरी ⇒
सर्वाधिक सुन्दर बकरी, सर्वाधिक प्रजनन क्षमता वाली नस्ल।

सवाई माधोपुर, करौली, धौलपुर, भरतपुर

5. सिरोही →

सिरोही, जालौर, उदयपुर, अजमेर

- माँस उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है।

Note

केन्द्रीय बकरी अनुसंधान व प्रजनन केन्द्र ⇒ अविकानगर (टोंक)

- बकरी प्रजनन फार्म व चारा विकास केन्द्र → रामसर (अजमेर)

ऊँट

- देश में सर्वाधिक ऊँट → राजस्थान (81.6%)
- सर्वाधिक ऊँट → बाड़मेर

न्यूनतम ऊँट → धौलपुर

→ रेगिस्तान का जहाज

[गोबी दैना जी]

गोमठ

नाचना

बीकानेरी

जैसलमेरी

1. जैसलमेरी ⇒ सर्वोतम नस्ल
- जैसलमेर, बाडमेर, जोधपुर
- यह मरुस्थल में तेज दौडने व सवारी के लिए प्रसिद्ध है

2. बीकानेरी ⇒ सबसे भारी नस्ल
- राजस्थान में 50% ऊँट इसी नस्ल के पाये जाते है।
- यह भार वहन करने, गाडी चलाने एवं हल चलाने में सर्वाधिक उपयुक्त है।

3. गोमठ ⇒ फलौदी (जोधपुर)
- सवारी के लिए प्रसिद्ध

4. नाचना ⇒ जैसलमेर
- सुन्दरता के लिए पूरे भारत में प्रसिद्ध है।

Note → ऊँट के दूध का उपयोग → मधुमेह (डायबिटिज)
तिल्ली रोग

* ऊँट का रोग → सर्रा
तिबर्सा

→ ऊँट का बच्चा → टोरडी
→ ऊँट पालक जाति ⇒ राइका / रैबारी
→ ऊँटो का देवता → पाबुजी

→ राष्ट्रीय ऊँट अनुसंधान केन्द्र → जोहड़बीड़ (बीकानेर)

5 July 1984

- भारत की प्रथम कैमल मिल्क डेयरी → जोड़बीड़ बीकानेर

अश्व सम्पदा / घोड़े

→ भारत में सर्वाधिक → जम्मू कश्मीर
- राजस्थान में सर्वाधिक → बाड़मेर
  - न्यूनतम → बांसवाड़ा

* मालाणी ⇒ घोड़े की सर्वोतम नस्ल, जो मुख्य रूप से सिवाना व गोडा मालाणी (बाड़मेर) में पाई जाती है।
- ये घोड़े कलाबाजियों के लिए देश में प्रसिद्ध हैं।

* मारवाड़ी → बीकानेर, जोधपुर, जालौर
- तेज दौड़ने के लिए प्रसिद्ध

* काठियावाड़ी → राज्य के सीमावर्ती जिलों में (पाकिस्तान की सीमा)

→ राज्य में गधों का अभयारण्य →
झुन्झुनू में प्रस्तावित

कुक्कुट सम्पदा

→ सर्वाधिक → अजमेर
→ न्यूनतम → धौलपुर
→ मूर्गे का मांस → चिकन
- राष्ट्रीय मुर्गी बीज उत्पादन फार्म → भीमपुर (बांसवाड़ा)

सुअर

- सुअर का माँस → गोश्त
- देश में सबसे अधिक सुअर → असम
- राज्य में सबसे अधिक → भरतपुर
सबसे कम → सिरोही

* पशुओं से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य

→ अमूल डेयरी संघ → गुजरात
→ राजस्थान के चार पशु आहार संयत्र →
झोटवाड़ा (जयपुर)
नदबई (भरतपुर)
तबीजी (अजमेर)
जोधपुर

* राजस्थान की सबसे पुरानी डेयरी → पद्मा डेयरी 1910
↓
(ब्यावर, अजमेर)

– राज्य की सबसे बड़ी डेयरी → रानीवाड़ा डेयरी (जालौर)

→ दुग्ध विज्ञान महाविद्यालय → महाराणा प्रताप कृषि महाविद्यालय, उदयपुर

→ राज्य का सबसे बड़ा दुग्ध पैकिंग केन्द्र → जयपुर

→ श्वेत क्रांति | ऑपरेशन फ्लड ⇒ दुग्ध उत्पादन से संबंधित

↓

जनक → वर्गीज कुरियन

→ पशु पोषाहार संस्थान → जामडोली (जयपुर)

– प्रदेश का पहला मत्स्य अभयारण्य → बड़ी तालाब (उदयपुर)

– राज्य का एकमात्र पक्षी चिकित्सालय → जौहरी बाजार (जयपुर)

* पशुओं के प्रमुख रोग ⇒

1. बकरी → गॉट पॉक्स

2. भेड़ → ब्लू रंग
फड़ किया

3. सूअर → स्वाइन फीवर

4. मुर्गी → रानीखेत

5. गाय व भैंस → मुँह पका, खुरपका

Note →
बर्डफ्लू नामक रोग मुर्गियों से फैलता है।
↓
Virus → $H_5 N_1$

स्वाईन फ्लू नामक रोग सूअरों से फैलता है।
↓
Virus → $H_1 N_1$

ऊर्जा संरक्षण दिवस → 14 दिसम्बर

② राजस्थान मे ऊर्जा संसाधन 4/8/14 ①

* देश का प्रथम जल विद्युत गृह → 1897 को दार्जिलिंग (प०बंगाल)
* दूसरा जल विद्युत गृह → 1902 मे शिवसमुद्र (कर्नाटक) कावेरी नदी पर)
* विद्युत आपूर्ति अधि० → 1948 (स्वतंत्रता के बाद)
* विद्युत/ऊर्जा को समवर्ती सूची मे शामिल किया गया है

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय राज्य मे 15 विद्युत गृह थे। (कुल उत्पादन – 1227 मेगावाट)
↓ 26 शहरो और 16 गाँवो को विद्युत प्राप्ति

1 जुलाई 1957 को "राजस्थान राज्य विद्युत मण्डल (RSEB) स्थापना
* राज० मे विद्युत उत्पादन मे निजी सहभागिता 1991 से प्रारम्भ हुई।
* विद्युत नियामक आयोग अधिनियम – 1998
* विद्युत वितरण निगम → 16 जुलाई 1986
* राजस्थान विद्युत नियामक आयोग → 2 जनवरी 2000
↓ प्रथम अध्यक्ष – श्री अरुण कुमार

NOTE → 19 जुलाई 2000 को राजस्थान विद्युत क्षेत्र (Rajasthan Power Sector Reforms Transfer Scheme) – 2000 जारी की गई

जिसके तहत राज्य विद्युत मण्डल को विभाजित कर 5 कंपनियो के रूप में गठित कर दिया गया।

① राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड → जयपुर
↓ कार्य → राज० विद्युत मण्डल द्वारा हस्तांतरित सभी परि० पर नियंत्रण रखना और राज्य मे विद्युत उत्पादन के लिए उत्तरदायी है।

② राजस्थान राज्य विद्युत प्रसारण निगम लिमिटेड → जयपुर
↓ इस निगम द्वारा 400 K.V, 220 के.वी. 132 के.वी. विद्युत प्रसारण संबंधी लाइनो, सब स्टेशनो का निर्माण

③ अजमेर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड → अजमेर

↓ यह निगम राज्य के 11 जिलो में विद्युत वितरण का कार्य करता है।

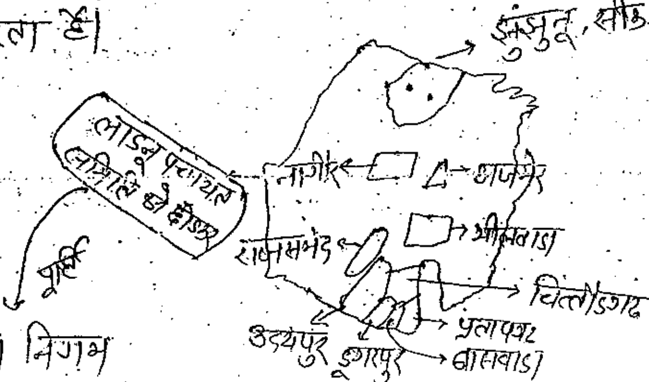

④ जोधपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड → जोधपुर

↓

इस निगम के माध्यम से राज्य उत्तरी व पश्चिमी क्षेत्र के 10 जिलो मे विद्युत वितरण का कार्य करता है।

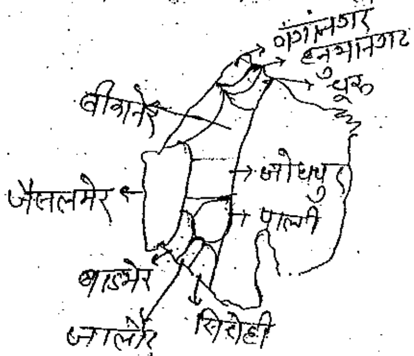

⑤ जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड → जयपुर

↓ यह निगम राज्य के 12 जिलो को विद्युत आपूर्ति करता है।

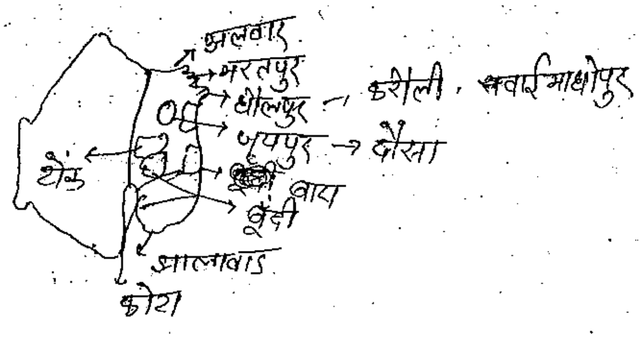

Note → विद्युत दुर्घटना मे किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाने पर 25 हजार रुपये से बढ़ाकर 2 लाख 50 हजार कर दी है।

* ऊर्जा के मुख्य स्त्रोत *

↓ ऊर्जा प्राप्ति के मुख्यत: दो स्त्रोत माने जाते है।

(1) परम्परागत ऊर्जा स्त्रोत → ऊर्जा के वे स्त्रोत जिनका एक बार उपयोग करने के बाद पुन: उपयोग मे नही ले सकते और न ही पुन: उससे ऊर्जा प्राप्त की जा सके परम्परागत ऊर्जा स्त्रोत कहलाते है।

(a) जल विद्युत
(b) तापीय विद्युत
↳ कोयला, खनिज तेल, प्राकृतिक गैस
(c) आण्विक ऊर्जा

→ इनके भंण्डार सीमित होते है।

(2) गैर परम्परागत ऊर्जा स्त्रोत / नव्यकरणीय स्त्रोत

↓ ऊर्जा के वे स्त्रोत जिनका एक बार उपयोग करने के बाद पुन: उपयोग मे ले सकते और पुन: उनसे ऊर्जा प्राप्त की जा सके। इनके भण्डार असीमित होते है।

(a) सौर ऊर्जा → सूर्य के प्रकाश से
(b) पवन ऊर्जा →
(c) बायोगैस ऊर्जा → जानवरो के अवशिष्ट पदार्थो के अपघटन से
(d) बायोमास ऊर्जा → कचरा, धान की भूसी एवं सरसो की भूसी से
(E) ज्वारीय तरंग ऊर्जा → समुद्री तरंगो एवं ज्वारभाटे से उत्पन्न
(F) भू तापीय ऊर्जा →
↳ सर्वाधिक संभावना – माउण्ट आबू

---

1. तापीय ऊर्जा → 5138.88 MV
2. जल विद्युत → 1498.66 MV
3. गैरनीय ऊर्जा → 664.60 MV
4. परमाणु ऊर्जा → 556.74 MV
5. पवन ऊर्जा → 1825.99 M.V
6. बायोमास ऊर्जा → 91.30 M.V
7. सौर ऊर्जा → 54.30 M.V.

NOTE → राज्य को सर्वाधिक ऊर्जा के स्त्रोतो तापीय ऊर्जा से प्राप्त होती है।

राजस्थान की ऊर्जा परियोजनाएँ

① राज्य की जल विद्युत परियोजनाएँ →

NOTE → राष्ट्रीय जल विद्युत ऊर्जा निगम → 1975

ⓐ भाखड़ा नांगल परियोजना → सतलज नदी पर

राजस्थान, पंजाब, हरियाणा की मिश्रित परि०

कुल उत्पादन → 1493 MV

राजस्थान को → 227.3 MV (15.2% हिस्सा)

ⓑ व्यास परियोजना → पंजाब, राजस्थान, हरियाणा (व्यास नदी पर)

↓ पंडोह व पोंग बांध

इस परि० से राज्य० को सर्वाधिक (422.64 M.V) विद्युत प्राप्त होगी।

2 विद्युत गृह

① 384 MV → राज्य का हिस्सा 59%

② 990 MV → " " 20%

ⓒ माही परियोजना → राजस्थान, गुजरात (1 नव 1983 को प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी द्वारा प्रारम्भ)

140 MV → राजस्थान का हिस्सा 100%

23×5 = 115
43×4 = 172
33×3 = 99
386

ⓓ चम्बल परियोजना → राजस्थान व M P
50 : 50

कुल विद्युत उत्पादन → 386 MV

193 राज०, 193 MP

गाँधीसागर बाँध − 35×5 = 115
राणा प्रताप सागर − 43×4 = 172
जवाहर सागर बांध − 33×3 = 99
386

35×5 = 175
43×3 = 129
33×3 = 99
403
35
368

35×4

ⓔ इन्दिरा गाँधी नहर परि० → पंजाब, हरियाणा, राजस्थान

अनूपगढ़ व सूरतगढ़

28.85 MV विद्युत

⑧

(6) उरी जल विधुत परि॰ → जम्मू कश्मीर के बारामूला क्षेत्र मे
↓ कुल उत्पादन → 480 MV
↓ 43.008 (8.96%) राज्य का हिस्सा

(7) सलाल जल विधुत परि॰ → जम्मू कश्मीर के उधमपुर नामक स्थान पर संचालित
↓ कुल विधुत उत्पादन
690 → राज॰ का हिस्सा 8.96%

(8) दुलहस्ती जल विधुत परि॰ → जम्मू कश्मीर के डोडा नामक स्थान पर
↓ कुल विधुत उत्पादन
390 MV – 18.88% (42.42 MV) राजस्थान का हिस्सा

(9) टनकपुर जल विधुत परि॰ → उत्तराखण्ड के बम्बासा नामक स्थान पर
↓ कुल क्षमता → 94 MV
↓ 10.861 MV राज॰ का हिस्सा (11.53%)

(10) टिहरी जल विधुत परि॰ → राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड (सहउपयोग)
↓ कुल क्षमता – 2400 MV
↓ 7.5% (75 MV) राज्य का हिस्सा

(11) धौलीगंगा जल विधुत परि॰ → उत्तराखण्ड के पिथौरागढ़ मे संचालित
↓ कुल उत्पादन – 280 MV
↓ 27 MV राजस्थान को प्राप्त (9.64%)

(12) कोल बाँध जल विधुत परि॰ → हिमाचल प्रदेश, राज॰ की साझेदारी
↓ कुल विधुत उत्पादन क्षमता → 800 MV

(13) चमेरा जल विधुत परि॰ → हिमाचल प्रदेश के चंबा नामक स्थान पर
कुल क्षमता → 840 MV
↓ 134.85 MV राजस्थान को प्राप्त (8.60%

(14) पार्वती पन जल विद्युत परि॰ → हिमाचल प्रदेश के कुल्लू में
↓ कुल क्षमता → 2051 MW → 282 मेगावाट राजस्थान को प्राप्त

(15) जाखम बाँध लघु पन जल विद्युत परि॰ → प्रतापगढ़ जिले में जाखम बांध पर
↓ 2.75 मेगावाट की दो लघु पन विद्युत परि॰

(16) अनास जल विद्युत परि॰ → बाँसवाड़ा जिले मे अनास व हरण नदियों पर बांध बनाकर
↓ कुल क्षमता → 45 मेगावाट

(17) राहुघाट जल विद्युत परि॰ → राजस्थान व मध्यप्रदेश
50 : 50
↓ कुल क्षमता = 270 मेगावाट

(18) नाथपा - झाकरी जल विद्युत परि॰ → सतलज नदी पर (हिमाचल प्रदेश)
↓ कुल क्षमता - 1500 MW
↓ 112 मेगावाट (7.47%) राजस्थान

(19) तालापन जल विद्युत परि॰ → राजस्थान और भूटान की संयुक्त परि॰
↓ 57.685 MW बिलियम यूनिट विद्युत प्राप्त होती है।

(2) राज्य की ताप विद्युत परियोजनाएँ

* राष्ट्रीय ताप विद्युत निगम → 1975

तीन भागों में बाँटा गया है।

1. जल एवं जलवाष्प पर आधारित
2. कोयले पर आधारित
3. गैस व खनिज तेल पर आधारित परि॰

(A) जल एवं जलवाष्प पर आधारित योजनाएँ

(1) सिंगरौली परियोजना → राष्ट्रीय ताप विद्युत निगम (NTPC) द्वारा उत्तर प्रदेश में प्रारंभ की गई थी 1989 में पूर्ण

↓ कुल विद्युत उत्पादन → 2000 MV

↓ 300 MV राज्य को आपूर्ति

(2) कोटा सुपर तापीय विद्युत परि०

राजस्थान का दूसरा सबसे बड़ा थर्मल पॉवर स्टेशन

↓ 1240 मेघावाट क्षमता वाला परि० की स्थापना 1978 चम्बल नदी पर

NOTE → 31 अगस्त 2009 को इस परि० की 195 मेघावाट क्षमता वाली 7 वी इकाई से उत्पादन कार्य प्रारम्भ

(3) रिहंद परियोजना → NTPC द्वारा UP के पीपरी नामक स्थान पर

↓ इससे राजस्थान को प्रथम चरण → 95 मेघावट

द्वितीय चरण → 100 मेघावाट

(4) सतपुडा परि० → मध्य प्रदेश

कुल उत्पादन = 312.5 मेघावाट

राज्य का अंश = 40 प्रतिशत (125 मेघावाट)

(5) ऊँचाहार ताप विद्युत परि० = उत्तर प्रदेश

कुल क्षमता = 1010 MV

↓ 81 मेघावाट राजस्थान को

(6) सूरतगढ़ सुपर ताप विद्युत परि० →

↓ यह राजस्थान का प्रथम सुपर थर्मल पावर स्टेशन है। राजस्थान को सर्वाधिक विद्युत आपूर्ति इसी से होती है।

छः इकाई = 250 × 6 = 1500 मेघावाट

7 वी, 8वीं — 660 — 660 = 1320 मेघावाट स्थापित होने के बाद विद्युत उत्पादन क्षमता = 2820 मेघावाट हो जायेगी

(3) कोयले पर आधारित विद्युत परि०

राज० मे सर्वाधिक लिग्नाइट किस्म का कोयला पाया जाता है।

राज० मे सर्वाधिक लिग्नाइट कोयला → (1) कपूरडी (बाड़मेर)

(2) गुढ़ा (बीकानेर)

(3) मेड़ता क्षेत्र (नागौर)

(4) पलाना (बीकानेर) ← राज० का सर्वश्रेष्ठ लिग्नाइट कोयला है।

(I) छबड़ा सुपर क्रिटिकल थर्मल पॉवर प्रोजेक्ट → मोतीपुरा ग्राम (छबड़ा तह० बाँरा)

प्रथम चरण → 8 दिसम्बर 2005 मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे

↓ दो इकाईयाँ – 250 – 250 MW

* NOTE → यह राज्य का तीसरा सुपर तापीय विद्युत गृह है।

कुल विद्युत उत्पादन –2320 मेगावाट

(ii) कालीसिंध तापीय विद्युत परियोजना → उण्डेल ग्राम (झालावाड़)

3 सितम्बर 2008 वसुंधरा राजे

(iii) गिरल थर्मल पावर स्टेशन → गिरल के समीप थुम्बली (बाड़मेर)

जर्मनी के सहयोग से "राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम" के द्वारा राज्य व देश का पहला लिग्नाइट गैसीयकरण तकनीक पर आधारित 1000 मेगावाट का विद्युत गृह

(iv) बरसिंहसर थर्मल पावर परियोजना → बरसिंहसर (बीकानेर)

↳ स्थापना – 1987

(v) कपूरडी व जालिपा थर्मल पॉवर परियोजना → बाड़मेर

कपूरडी	जालिपा
250×2 = 500 MW	250×4 = 1000 MW

(vi) भादेसर लिग्नाइट सुपर थर्मल पावर योजना → भादेसर (बाड़मेर) (S)

बाड़मेर लिग्नाइट माइनिंग कंपनी लिमिटेड (राज० की प्रथम ऊर्जा उत्पादन कम्पनी)
द्वारा भादेसर (बाड़मेर) मे 1000 मेगावाट का प्लांट लगाया गया

(C) गैस व तरल ईंधन पर आधारित परि०

राज० मे देश का पहला भूमिगत गैस बिजलीघर – मेड़ता रोड़ (नागौर)

(i) रामगढ़ गैस परियोजना → जैसलमेर
यह राजस्थान की प्रथम गैस आधारित परि० है।

(ii) अन्तागैस विद्युत परियोजना → बाँरा
(राजस्थान मे स्थापित प्रथम गैस परि० है।)
राष्ट्रीय ताप विद्युत गृह (NTPC) द्वारा संचालित केन्द्रीय परियोजना है।
इसे गैस आपूर्ति – हजीरा – ~~जगदीशपुर~~ – बीजापुर – जगदीशपुर (H-B-J) लाइन द्वारा की जाती है।

(iii) केशोरायपाटन गैस विद्युत परि० → बूँदी
1000 मेगावाट वाला निजी क्षेत्र में

(iv) झामर कोटड़ा गैस परि० → उदयपुर

(v) औरेया गैस विद्युत परि० → उत्तर प्रदेश
राजस्थान को 9.2% प्रदान होता है

(vi) धौलपुर गैस कम्बांइड साइकिल पावर प्लांट – धौलपुर

③ राज्य की आण्विक विद्युत परियोजना

① राजस्थान परमाणु शक्तिगृह | रावतभाटा एटोमिक पॉवर प्लान्ट
→ रावतभाटा (चित्तौड़गढ़)

↳ संचालन → नाभिकीय ऊर्जा निगम द्वारा (NPC)

सहयोग → कनाडा के सहयोग से 1965 मे स्थापित देश का दूसरा एवं राज्य का पहला परमाणु विद्युत गृह है। उत्पादन 1972 को प्रारम्भ हुआ

NOTE → देश का प्रथम परमाणु विद्युत गृह → तारापुर (महाराष्ट्र)

कुल उत्पादन क्षमता → 1280 मेगावाट (30 % राज्य को प्राप्त)

NOTE → यह विद्युत गृह भारी पानी (D_2O) किस्म के रिएक्टरों की श्रृंखला में देश मे प्रथम स्थान रखता है।

* यहाँ देश का न्यूक्लियर पार्क बनाया जायेगा

NOTE → भारत मे भारी पानी के जनक → एस. फरीदुद्दीन (पद्मश्री)

② नरौरा परमाणु शक्ति गृह
→ उत्तरप्रदेश (नरौरा)

कुल क्षमता → 400 मेगावाट (9.2 % राज्य का हिस्सा)

↓ देश का चौथा परमाणु विद्युत गृह

राज्य मे ऊर्जा के गैर परम्परागत स्त्रोत

राज० मे गैर परम्परागत ऊर्जा स्त्रोतो के विकास की प्रमुख एजेंसी

(1) राजस्थान स्टेट पॉवर कॉर्पोरेशन लिमिटेड → (RSPCL)
↓ स्थापना - 1995
२००२ मे इस संस्था का विलय "राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम" में कर दिया गया

(2) राजस्थान ऊर्जा विकास अभिकरण (REDA)
↓ स्थापना - 21 जनवरी 1985 को
२००२ में राज० अक्षय ऊर्जा निगम मे विलय

(3) राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम ⟶ RSPCL और REDA को मिलाकर अगस्त २००२ मे स्थापना की गई

NOTE ⟶ इस निगम द्वारा 1 मेगावाट की सौर ऊर्जा परि० फागी (जयपुर) मे स्थापित की जा रही है।

सौर ऊर्जा नीति

⟶ प्रथम सौर ऊर्जा नीति - 13 अप्रैल 2011

* राज० देश का प्रथम राज्य है जहाँ सौर ऊर्जा नीति को मंजूरी दी गई है।

(1) राज्य का पहला सौर ऊर्जा पर आधारित फ्रिज → बालेसर (जोधपुर)
(2) राज्य मे पहला खारे पानी को मीठे पानी मे बदलने के लिए सौर ऊर्जा पर आधारित संयंत्र → भालेरी गाँव (चूरू)
(3) राज्य का पहला पूर्णतया सौर ऊर्जा से संचालित टी०वी० रिले केन्द्र → रावतभाटा (चित्तौड़)
(4) राज्य का पहला पूर्ण रूप से सौर ऊर्जा से विद्युतीकृत गाँव → नयागाँव (जयपुर)
(5) राज्य मे सौर ऊर्जा से संचालित सबसे बड़ा वाटर हीटर सिस्टम

⑦ राज्य का पहला पूर्णतया सौर ऊर्जा से संचालित रेल्वे स्टेशन
→ गौरमघाट (रेल्वे स्टेशन)
अजमेर मण्डल

⑧ राज्य का पहला सौर ऊर्जा पर आधारित मिल्क चिलिंग प्लान्ट
→ भरतपुर

⑨ राज्य का पहला सौर ऊर्जा से संचालित ए. टी. एम
→ मनोहरपुरा (जयपुर)

⑩ राज्य का पहला सौर ऊर्जा पर आधारित विद्युत संयंत्र
→ मथानिया (जोधपुर)

⑪ जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय सौर ऊर्जा मिशन के तहत सौर पार्क
कहां स्थापित किये जायेगे → जोधपुर, जैसलमेर

⑫ सौर ऊर्जा से सम्बन्धित शोध एवं विकास के लिए सबसे बेहतर जिला
→ जोधपुर
↓
आई. आर. टी. को फ्रांस के सहयोग से "सौर ऊर्जा शोध केन्द्र" के रूप मे विकसित किया गया है।

पवन ऊर्जा

* पवन ऊर्जा उत्पादन हेतु न्यूनतम 20 km/घंटा की गति से चलने वाली हवा की आवश्यकता होती है।

① भारत मे सर्वाधिक पवन ऊर्जा का उत्पादन तमिलनाडू में जबकि राज्य का देश मे चौथा स्थान है।

② राजस्थान मे पहला पवन ऊर्जा संयत्र अमर सागर (जैसलमेर) मे "राज० स्टेट पॉवर कॉर्पोरेशन द्वारा निर्मित है। जहाँ 2 मेगावाट विद्युत का उत्पादन किया जाता है।
लोकार्पण → 21 अक्टूबर 1999

③ राज्य सबसे बडा पवन ऊर्जा संयत्र → सोढा बंधन (जैसलमेर) 25 मेगावाट
दूसरा बडा → हर्ष पर्वत (सीकर) 12 मेगावाट

③ बायोमास

26 फरवरी 2010 को घोषित इस नीति मे राज्य मे 300 मेगावाट से अधिक उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है।

① राज्य का पहला बायोमास आधारित संयंत्र → पदमपुर (गंगानगर) ↓ 7 मेगावाट

② हाडौती मे पहला बायोमास संयंत्र → रंगपुर (कोटा)

③ कचरे से बिजली बनाने का पहला संयंत्र → जयपुर

④ विलायती बबुल से बिजली बनाने का संयंत्र → नोला बास (अजमेर)

⑤ राज्य मे सबसे पहले अजमेर जिले मे सम्पूर्ण ग्राम विद्युतीकृत हुए।

⑥ राज्य मे बिजली उत्पादन मे प्रथम स्थान → बीकानेर

⑦ 2009 का आइमा पावर अवार्ड → राज० अक्षय ऊर्जा निगम

⑧ राज्य का दूसरा परमाणु बिजलीघर कहाँ बनाया जा रहा है → खींवसर (नागौर)

⑨ राज० मे प्रथम सरसों की फसल पर आधारित बिजलीघर → खेड़ली (अलवर)

⑩ राज० का आधुनिक तीर्थ स्थल → सूरतगढ़ सुपर थर्मल पावर संयंत्र

⑪ राजस्थान मे वर्तमान मे चार क्रिटिकल सुपर थर्मल पावर प्लाण्ट

क्रिटिकल = 500 मेगावाट

① सूरतगढ़ → गंगानगर ③ छबड़ा → बाँरा

② बांसवाड़ा ④ कालीसिंध - झालावाड़

⑫ राज्य मे प्रथम सौर ऊर्जा चालित नाँव → पिछोला झील में

⑬ सबसे बड़ी सौर वैधशाला → फतेह सागर झील (उदयपुर)
↓
नवीनतम सौर वैधशाला → मथानिया (जोधपुर)

⑭ प्रदेश मे प्रथम कम्प्यूटरीकृत 400 किलोवाट ग्रिड सब-स्टेशन → हिम्मतसागर गाँव (बीकानेर)

⑮ प्रदेश मे पहले मानव रहित स्वयसंचालित 33/11 के.वी. ग्रिड सब स्टेशन का प्रारम्भ → 16 अक्टूबर 2009 जोधपुर

(16) SEEZ जिले → जैसलमेर - बाड़मेर - जोधपुर
(Solar Energy Enterprising Zone)

(17) एशिया का सबसे ऊँचा टी. वी टावर → रामगढ़ (जैसलमेर)

(18) राज्य मे सौर ऊर्जा का सर्वाधिक उत्पादन → जोधपुर
पवन ऊर्जा का सर्वाधिक उत्पादन → जैसलमेर
बायोगैस का सर्वाधिक उत्पादन → उदयपुर